RNI-MPHIN/2005/14721
Po-Malwa Div/244/2023-25
Desp. 02 November, 2023

अंक – 05 (मासिक) वर्ष – 19 नवम्बर, 2023 मूल्य 20/-

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

दीपावली विशेषांक

हरि प्रिये नमस्तुभ्यम्

वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2023
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

बात हम सबकी
सुने हर शनिवार

Contemporary Range of Home Essentials, Crafted by Experts

FANS | LIGHTING
APPLIANCES | SWITCHES

Toll Free : 18001032676 | Email : customercare@rrglobal.com | Website: www.rrglobal.com | Follow us

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-05 नवम्बर 2023 वर्ष-19

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
ओमप्रकाश काबरा, मोरबी

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
रामगोपाल मूंदड़ा (सूरत)
प्रो. कल्पना गगडानी (मुम्बई)
गोविन्द मालू (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 900/- for Three years
Rs. 3500/- for Life Time (12 Years)

महाभारत में लक्ष्मी

विचार क्रान्ति

महाभारत में लक्ष्मी श्री, समृद्धि और सौंदर्य की देवी हैं। एक कथा में वे दक्ष की पुत्री और धर्म की पत्नी हैं तो दूसरी कथा में ब्रह्मा की पुत्री व धाता-विधाता नामक भाइयों की बहन हैं। उनका पुराणोक्त प्राकट्य समुद्रमंथन के अवसर पर हुआ है। अमृत के अलावा लक्ष्मी के लिए ही असुरों ने देवताओं से युद्ध किया था, क्योंकि सौंदर्य और समृद्धि सभी को काम्य है। इसीलिए जगत् लक्ष्मी के लिए व्यग्र, व्याकुल और विचलित है।

महाभारत में लक्ष्मी अपने मूल में भगवान विष्णु की पत्नी है। विष्णु के श्रीकृष्णावतार में रुक्मिणी का जन्म लक्ष्मी के एक अंश से हुआ है। इसी प्रकार वे द्रौपदी के रूप में भी अवतरित होकर नरावतार अर्जुन सहित पांडवों को धन्य करती है। जो प्रतीक है कि लक्ष्मी सदैव श्रीकृष्ण की भाँति सत्य व धर्म के पर्याय परम पुरुष को तथा धर्मसम्मत सद्कर्मी पांडवों की भांति लोगों को प्राप्त होती हैं। जो काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह एवं मत्सर से परे रहकर निरन्तर ज्ञान, कर्म, सत्संग, सेवा, परोपकार करते हुए अहंकाररहित रहते हैं, लक्ष्मी उन्हीं को प्राप्त होती है। लक्ष्मी को शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान प्रिय है। जो प्रकृति का आदर करते और प्राकृतिक संपदा का यथोचित भोग करते हुए उसका अपव्यय नहीं करते, लक्ष्मी उन्हीं पर कृपा करती है। लक्ष्मी स्वच्छ, निर्मल जल वाली प्रवाहित नदियों, प्रचूर वृक्षों वाले सघन वनों तथा धनधान्य से भरे खेतों में वास करती हैं। महाभारत की अनेक कथाएँ और सन्दर्भ इन्हीं रूपों में लक्ष्मी का यशोगान करते हैं।

महाभारत में लक्ष्मी को धर्म की पत्नी और अर्थ की माता कहा है। धर्म की सहचारिणी का आशय है जिसके पास धर्म अर्थात् कर्तव्यबोध होता है, लक्ष्मी उसी की अर्धांगिनी बनती है। जो दीनों के प्रति दयालु और करुणानिधान है, लक्ष्मी उसी का वरण करती है। विष्णु दीनदयाल व करुणानिधान हैं, इसीलिए लक्ष्मी उनके चरणों की सेवा करते हुए चित्रित हैं। अर्थ की माता अर्थात् धन की जन्मदात्री हैं। अर्थ से ही संसार में जीवनयात्रा सुगम हो पाती है। निर्धन मनुष्य पतित व शोचनीय है। दरिद्रता पाप मानी गई है। अतः जिसके पास लक्ष्मी होती है वही पुण्यवान है।

शांतिपर्व की कथा में महायुद्ध जीत लेने के बाद जब परिजनों के वध से दुःखी हो युधिष्ठिर जीती हुई लक्ष्मी त्यागकर वन जाने को उद्यत हुए तब अर्जुन ने समझाते हुए कहा था, 'अर्थाद् धर्मश्च कामश्च स्वर्गेश्चैव नराधिप। प्राणयात्रापि लोकस्य बिना ह्यर्थे न सिद्ध्यति।।' अर्थात् हे नरेश्वर! लक्ष्मी अर्थात् धन से ही धर्म, काम और स्वर्ग की सिद्धि होती है। लोगों का जीवन निर्वाह भी धन के बगैर सम्भव नहीं है।

साधो! सार यह कि जो कर्म करता है उसे लक्ष्मी प्राप्त होती है, कर्म से पलायन करने वाले को नहीं। जीवन में जब युधिष्ठिर की भांति पलायन का भाव जगे तब किसी अर्जुन की सलाह मानकर पुनः कर्मरत हो जाना चाहिए। तब वैसी ही श्री व राज्यलक्ष्मी मिलती है, जैसी युधिष्ठिर को मिली थी।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

समता का पर्व ''दीपावली''

दीपावली भारतीय परम्परा का वह त्यौहार है, जब झोपड़ी से लेकर अट्टालिका तक दीप-ज्योति का उजियाला अपने पूरे जोश से झिलमिलाता है। इस ज्योति में अमीर-गरीब का भेद नजर नहीं आता और न ही ऊँच नीच का भाव। दीये की लौ एक जैसा उजाला गरीब के घर भी करती है और अमीर के घर भी। समतुल्यता का यह स्वभाव ही उस ज्योति की पवित्रता है, जो उसे देवता की श्रेणी में ले जाती है तथा दीप पूज्य हो जाता है। समता-समानता समाज के बीच सौहार्द्र और समन्वय के सेतु हैं। जिस समाज में ये तत्व प्रस्फुटित हों, वहां फिर कैसे कटुता का अंधकार टिक पाएगा। वस्तुतः दीप एक प्रतीक है। भगवान की पूजा में दीप प्रज्जवलित करने का आशय उजाला करना नहीं है, अपितु भगवान से यह प्रार्थना करना है कि हमें ज्ञान और बुद्धि प्राप्त हो। उजाला ज्ञान का पर्याय है। ज्ञान का प्रकाश हमारे व्यक्तित्व को आभा देता है। यही आभा हमें सामान्य से अलग करती है। दीपावली पर असंख्य दीप जलाने का अर्थ यही है कि हमारा व्यक्तित्व हर पहलू से दैदीप्यमान हो। जो लोग अपनी बुद्धिजागृत कर लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं, उनके जीवन में किसी तरह का अंधेरा टिक नहीं पाता। वे जहां भी होते हैं, सफलता के झंडे लहरा देते हैं।

हमारा समाज ऐसा ही बुद्धिजीवी समाज है, जिसने सदैव अपनी बुद्धि व कौशल से सफलता के झंडे लहरा दिये हैं। यही कारण है कि देश ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में माहेश्वरी समाज की सफलता की गूंज सुनाई दे रही है। इन सबके बावजूद हमें समता का भाव लेकर भी चलना है। यह विडंबना है कि इस लक्ष्मीपुत्रों के समाज में एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है, जो भारी आर्थिक विपन्नता से गुजर रहा है। वे अपनी इस स्थिति के कारण स्वतः ही समाज की मुख्यधारा से दूर होते जा रहे हैं। उन्हें लगता है कि सामाजिक व्यवस्था उनके स्वाभिमान पर चोट पहुँचा रही है। समाज संगठन ने समाज के ऐसे वर्ग के उत्थान के लिए कई योजनाऐं बनाईं लेकिन फिर भी उनसे समाज सही ढंग से लाभान्वित नहीं हो पा रहा है। समाज के मध्यम वर्ग ने तो किसी तरह समाज की किसी न किसी योजना का लाभ लेने का प्रयास किया, लेकिन सबसे नीचे का वर्ग इनसे दूर ही हटता चला गया।

आखिर यह स्थिति क्यों है? इस पर विचार करना अनिवार्य है। इसके लिए योजनाओं के क्रियान्वयन की संपूर्ण प्रक्रिया पर चिंतन करना होगा। योजना का क्रियान्वयन पूरे प्रचार-प्रसार के साथ इस तरह न हो कि किसी के सम्मान को ठेस पहुँचे। प्रचार-प्रसार तो योजनाओं का हो लेकिन क्रियान्वयन में लाभार्थी की निजता का अवश्य ध्यान रखा जाऐ। जब ऐसा होगा तो कोई भी जरूरतमंद किसी भी योजना का लाभ लेने में कोई संकोच नहीं करेगा। कारण यह है कि इससे न तो उसके स्वाभिमान पर चोट पहुंचेगी और न ही उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा प्रभावित होगी। जब हम यह कर पाऐंगे तभी हम सच्चे अर्थों में समाज के इस वर्ग का उत्थान कर पाऐंगे। अन्यथा ये योजनाऐं सिर्फ हमारे महिमा मंडन का साधन मात्र बनकर रह जाएंगी।

तो आइये इस दीपावली महापर्व की इस पावन बेला में संकल्प लें कि जो ''हमारे अपने'' जीवन की दौड़ में कहीं पीछे रह गये हैं, उन्हें भी एक सहारा देकर अपने साथ कर लें। जब हम ऐसा कर पाऐंगे तभी इस पावन पर्व की सार्थकता होगी। अपनी परम्परानुसार श्री माहेश्वरी टाईम्स का यह ''दीपावली विशेषांक'' आपके हाथों में है। इसमें अथक प्रयत्नों से कई महत्वपूर्ण व संग्रहणीय पठनीय सामग्री का समावेश किया गया है। हमें विश्वास है कि ये आपको अवश्य ही पसंद आऐंगी। अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करवाना न भूलें।

दीपोत्सव पर श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार की सभी पाठकों, विज्ञापन दाताओं और सहयोगियों को मंगलकामनाएं। आपके जीवन में सुख-समृद्धि का उजाला हमेशा छाया रहे।

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

राजस्थान के सीकर में 2 दिसम्बर 1960 को स्व. श्री चिरंजीलाल व श्रीमती मनभरी देवी काबरा के यहाँ जन्में श्री ओमप्रकाश काबरा की विशिष्ट पहचान एक समर्पित समाजसेवी एवम निष्ठावान उद्योगपति के रूप में है। व्यावसायिक रूप से आप टाइल्स, पॉलीपैक एवं केमिकल प्लांट का संचालन करते हैं, जिनके उत्पाद पूरे देश के साथ विदेशों में भी निर्यात होते हैं। 19 वर्ष की आयु से मोरवी (गुजरात) को अपना कर्म क्षेत्र बनाकर व्यावसायिक समर में उतरने वाले श्री काबरा न सिर्फ सफल उद्योगपति हैं, बल्कि उससे अधिक एक सरल व सहज समाजसेवी हैं। युवावस्था से ही आप समाज संगठन से सम्बद्ध होकर अपनी सतत सेवा दे रहे हैं। गुजरात युवा संगठन के संगठन मंत्री व उपाध्यक्ष रहे। आपने राजकोट एवं मोरबी माहेश्वरी समाज को सचिव व अध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवा दीं। राजकोट एवम मोरबी में माहेश्वरी समाज को स्थापित करने में आपका बड़ा योगदान रहा है। अ.भा. माहेश्वरी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य एवं गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी सभा में विभिन्न पदों का दायित्व भी निर्वहन किया है। आपके प्रयासों से गुजरात प्रदेश में संगठन लगभग हर समाजजन तक पहुँचा। वर्ष 2001 में आये भूकंप में निःस्वार्थ भाव से दिन-रात सेवा दी। साथ ही विभिन्न सेवा ट्रस्टों से भी आप जुड़े हुए हैं, जिसमें गरीब कन्याओं की पढ़ाई एवं विवाह, गौ शाला, फ्री टिफिन सेवा, पशुओं एवं पक्षियों के लिए आहार इत्यादि सेवा कार्य होते रहते हैं। व्यापार तथा समाजसेवा में धर्मपत्नी श्रीमती चंदा काबरा तथा पुत्र-पुत्रवधु निखिल व पारूल भी पूरा सहयोग दे रहे हैं।

बांटने से बढ़ती हैं खुशियाँ

सर्वप्रथम मैं समस्त समाजजनों को माता महालक्ष्मी की उपासना के पावन पर्व ''दीपावली'' की हार्दिक शुभकामनाऐं देता हूँ। साथ ही माता महालक्ष्मी से सभी के सुखी, स्वस्थ व समृद्ध जीवन की कामना करता हूँ। प्रकाश के इस महापर्व पर समस्त परिवार खुशियों के दीप से जगमग हों और हँसी-खुशी की फुलझड़ियाँ हर घर में छूटती रहें।

हमारा समाज वैसे उत्पन्न तो भगवान शिव व माता पार्वती के कारण हुआ है लेकिन फिर भी अपनी सम्पन्नता व समृद्धता के कारण लक्ष्मीपुत्रों का समाज कहा जाता है। कारण यही है कि समाज ने अपने उत्पत्ति काल से ही अपने समर्पण, अपनी तीक्ष्ण बुद्धि तथा कर्मठता से जो कीर्तिमान स्थापित कर अपनी सफलता की पताका फहराई वह ऐतिहासिक ही है। शायद यही कारण है कि न सिर्फ हमारे देश बल्कि विश्व भर में माहेश्वरी उद्यम व व्यावसायिक कौशल की पताका फहर रही है। इन सबका कारण स्वाभाविक ही है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि माता लक्ष्मी सिर्फ कर्मवीरों पर ही अपनी कृपा करती हैं और यह गर्व का विषय है कि हमारे समाज व हमारे पूर्वजों ने सदैव ही अपनी अद्भूत कर्मठता का परिचय दिया, जिसके फलस्वरूप माता महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त हुई।

शास्त्रों में लक्ष्मी के दो रूपों का वर्णन मिलता है, सुलक्ष्मी तथा कुलक्ष्मी। सुलक्ष्मी अर्थात् वह समृद्धि जो सद्कर्मों से प्राप्त हुई है और जिसका उपयोग मानव कल्याण के लिये होता है, वहीं सुलक्ष्मी हैं। कुलक्ष्मी वह है, जो किसी भी गलत शार्टकट से कमाई जाऐ और जिसका उपयोग सिर्फ स्वयं के उपभोग के लिये हो। हमारे समाज ने सदैव सुलक्ष्मी ही अर्जित की। साफ-सुथरा उद्योग-व्यवसाय से धन अर्जन कर उसे सिर्फ अपने तक ही सीमित कभी नहीं रखा अपितु इससे जन सामान्य का कल्याण भी किया। देश भर में स्थित माहेश्वरी भवन, अस्पताल आदि कई समाजसेवी संस्थाऐं इन्हीं योगदानों की कहानी कह रही हैं। इतना ही नहीं जब भी देश पर किसी भी प्रकार की विपदा आई तो वह अपने राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य को निभाने में भी कभी पीछे नहीं रहा। इतिहास के पृष्ठों पर भी इसके प्रमाण स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं और गत वर्षों में आयी कोरोना महामारी में भी समाज के इन योगदानों की सभी ने सराहना की।

यह विडंबना है कि वर्तमान में समाज अपने इन आदर्शों से कुछ भटकने लगा है। समाज के कोई भी कार्यक्रम हों चाहे वह विवाह जैसा मांगलिक आयोजन हो या फिर कोई और आयोजन लगभग सभी में दिखावा तेजी से बढ़ता जा रहा है। इनमें होने वाली फिजूलखर्ची में पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है। ऐसे में हमें अपने संस्कारों व मानवीय संवेदनाओं का चिंतन करना होगा। सोचें कि मात्र यह अपव्यय होने वाला धन ही यदि समाज व मानव कल्याण में खर्च हो तो हम कितना कुछ कर सकते हैं। सभी की यह सामूहिक धन राशि एक बहुत बड़ी राशि होगी, जो आमूलचूल परिवर्तन कर सकती है। याद रखें बूंद-बूंद से ही घड़ा भरता है।

कहते हैं कि खुशियाँ हमेशा बांटने से बढ़ती है। अतः दीपावली पर्व के इस पावन अवसर पर आईये संकल्प लें हम दूसरों के मुरझाये चेहरों को भी खुशियाँ देंगे। एक बार ऐसा करके तो देखें आपकी खुशियाँ कई गुणित बढ़ जाऐंगी और फिर आपका हर दिन दीपावली हो जाऐगा।

पुनः सभी को दीपोत्सव की बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाऐं।

ओमप्रकाश काबरा, मोरबी
अतिथि सम्पादक

टीम SMT

श्री चान्दसिनी माताजी

श्री चान्दसिनी माताजी माहेश्वरी समाज की फोफलिया व न्याती खांप की कुलदेवी हैं।

माताजी श्री चान्दसिनी का मंदिर राजस्थान के टोंक जिले की मालपुरा तहसील के ग्राम टोरडी सागर के उत्तर में स्थित है। मंदिर प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक खुला रहता है। पुजारी श्याम सुंदर शर्मा से मिली जानकारी के अनुसार श्री राजेन्द्र न्याती के पुत्र छगनलाल न्याती तह. भड़गाँव जिला जलगाँव (महाराष्ट्र) को माताजी ने स्वप्न दिया इसके आधार पर उन्होंने 20 वर्ष पूर्व खोज की। लगभग 100 देवी मंदिरों के भ्रमण के बाद वे यहाँ पहुँचे।

यह मंदिर टोरड़ी गाँव से डेढ़ कि.मी. दूर मोहनगिरी पहाड़ की तलहटी में स्थित है। मंदिर में एक काले पत्थर की माताजी की विशाल मूर्ति है। यहाँ सिंदूर, वस्त्र, नेत्र आदि से माताजी का शृंगार किया जाता है। गुम्बद में चाँद-सूर्य के निशान विद्यमान हैं। किवदंतियों के अनुसार मंदिर द्वापर युग का बताया जाता है। कहा जाता है कि रुख्मणीजी अम्बिका पूजन के लिये यहीं आई थी जहाँ से भगवान श्रीकृष्ण ने उनका हरण किया था। समीप रुख्मणी के भाई रुक्मैया द्वारा भोजकट भी खण्डहर अवस्था में विद्यमान है एवं खुदाई के दौरान कई पुरातात्विक जानकारियाँ प्राप्त हुईं।

विशेष- यहाँ माताजी की पूजन-आरती, वेश, अखण्ड ज्योत व भोग का विशेष महत्व है।

कैसे पहुँचें- श्री चान्दसिनी माताजी का मंदिर राजस्थान को टोंक जिले की मालपुरा तहसील के ग्राम टोरडी सागर में है। अजमेर व टोक दोनों से बस सुविधा उपलब्ध है।

।। मंगलकामनाऐं ।।

सेवा भावना हमारा गौरव

समस्त स्वजातीयजनों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाऐं। हमारा समाज हमेशा से ही सेवाभावी समाज रहा है। देश के विभिन्न भागों में बने भवन व संचालित गतिविधियाँ इसका प्रमाण हैं। समाज ने देश के हर स्थान पर अपने खर्च व अपने स्तर पर जरूरतमंदों की सेवा करने का हमेशा अनूठा प्रयास किया, जिससे समाज का हर आमजन भी गौरवान्वित महसूस करता है। हमारे समाज में भी कुछ ऐसे अपने भी हैं, जिन्हें अपनों की मदद की जरूरत है। उनके लिए भी समाज ने योजनाएं बनाई है। जरूरतमंद निःसंकोच इनका लाभ लें। मैं समाज की अप्रतीम सेवा भावना को नमन करता हूँ और यह भावना इसी तरह बनी रहे, ऐसी माता महालक्ष्मी से कामना करता हूँ।

पद्म श्री बंशीलाल राठी
पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

सभी का हो विकास

सर्वप्रथम मैं अपनी ओर से समस्त समाजजनों को इस प्रकाश पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ, साथ ही सभी से इसे वास्तव में प्रकाश पर्व बनाने की अपील भी करता हूँ। यह पर्व प्रकाश अर्थात खुशियों का पर्व है, तो इसकी सार्थकता भी तभी है, जब हम हर अपनों के यहाँ खुशियों का प्रकाश पहुंचा सकें। वैसे तो हमारा समाज लक्ष्मी पुत्रों का समाज है, लेकिन ऐसे समाजजनों की संख्या भी कम नहीं है, जो आर्थिक रूप से संभलने की कोशिश कर रहे हैं। अतः यदि हम समर्थ हैं, तो उन्हे संबल देकर उनके जीवन में खुशियों का प्रकाश फैला सकें तभी इस पर्व की सच्ची सार्थकता होगी। इसके लिए हमें देश के कस्बों व गांवों में रह रहे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जोड़ना होगा। एक बार पुनः आप सभी को दीपावली की ढेर सारी हार्दिक शुभकामनाएं।

रामकुमार भूतड़ा
अध्यक्ष अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर

नारी के योगदानों को नमन

दीप पर्व की शुभकामना देते हुए सभी के सर्वांगीण मंगल की मंगलकामना।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है, ''यत्र पूज्यन्ते नारी तत्र रमन्ते देवता''। इसका अर्थ ही वास्तव में नारी की महत्ता को प्रतिपादित करता है। इसी क्रम में माता महालक्ष्मी की आराधना का यह पावन पर्व हम मना रहे हैं। लक्ष्य है, तो बस शक्ति स्वरूपा को नमन करना। इस क्रम में मैं समाज की उन नारी शक्ति को नमन करना भी अनिवार्य समझता हूँ, जो समाज ही नही अपितु मानवता की सेवा के लिये भी तन-मन-धन से अपने पूरे मातृत्व भाव के साथ जुटी रहती हैं। समाज व राष्ट्र की नारी शक्ति के इन योगदानों को मैं शत-शत नमन करता हूँ।

जोधराज लड्ढा
पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

प्रदूषण से बचें और बचाएं

सभी समाजजनों को दीपावली महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं और सभी की सुख-समृद्धि की माता महालक्ष्मी से कामना।

यह पर्व हर्ष व उल्लास तथा प्रकाश का पर्व है। प्रकाश अर्थात् नकारात्मकता पर सकारात्मकता की विजय। अतः इस पर्व पर अपने मन की समस्त नकारात्मकता को तिरोहित कर दें और अपनो के प्रति सकारात्मक हो जाएं। खुशियों के इस पर्व पर पटाखें जलाएं लेकिन प्रदूषण का भी ध्यान रखें। हमारा कर्त्तव्य है प्रदूषण से बचें और दूसरों को भी बचाएं।

पुनः सभी को शुभकामनाएं।

आनंद राठी
चेयरमेन, आनंद राठी ग्रुप, मुंबई

मंगलकामनाएं

देश व समाज दोनों से ही मंगल

दीपावली के पावन पर्व पर समस्त माहेश्वरी बंधुओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कुशलता की मंगलकामना करता हूँ।

मैं मंगलकामना करता हूँ कि समाज में सदैव प्रेम, सहनशीलता, सदभावना, सदाचार व समर्पण बना रहे। समाज हर क्षेत्र में सफलता की ऊँचाइयों को छुए। समाज बंधुओं को प्रतिष्ठा एवं सफलता प्राप्त हो, समाज बंधु सदैव प्रसन्नचित्त रहें। मैं भगवान से यही कामना करता हूँ कि हमारा समाज व राष्ट्र सभी स्वस्थ और सुरक्षित रहें, सभी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हों। याद रखें राष्ट्र से ही हम हैं। अतः चाहे कोई भी मामला हो सदैव राष्ट्र को ही सर्वोपरि रखें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

रामअवतार जाजू
पूर्व अध्यक्ष, माहेश्वरी बोर्ड अ.भा. माहेश्वरी महासभा

आशा की सदैव विजय

समस्त स्वजातीयजनों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाऐं और सभी के स्वस्थ एवं सुखद जीवन की मंगलकानाऐं!

यह पर्व वास्तव में अंधकार अर्थात निराशा पर प्रकाश अर्थात् आशा की विजय का पर्व है और अपने इस उद्देश्य के कारण वर्तमान परिवर्तनशील दौर में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। वर्तमान में हम समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे है, लेकिन अंधकार लगातार बढती कुरुतियों के रूप में इसमें बाधक बन रहा है। जब तक इसे हम नहीं हटाऐंगे, इस पर्व की सार्थकता नहीं है। याद रखें हमारे पूर्वजों के सामने भी कई चुनौती आयीं लेकिन उनसे वे हार मानकर लौट गईं। हम उसी समाज की संतान हैं। अतः हमें हर हाल में शिखर पर रहना है और रहेंगे।

त्रिभुवन काबरा
पूर्व उपसभापति अ.भा. माहेश्वरी महासभा

संस्कारवान पर ही लक्ष्मी की कृपा

दीपावली महापर्व की समस्त स्वजनों को हार्दिक शुभकामनाऐं एवं सभी की सुख-समृद्धि की माँ महालक्ष्मी से मंगलकामनाऐं।

शास्त्र वचनों के अनुसार माता महालक्ष्मी का आशीर्वाद उसे प्राप्त होता है, जो संस्कारवान है। कारण यह है कि संस्कार वह शक्ति है, जो हमें हर विपरीत परिस्थिति से निपटकर आगे बढ़ने की शक्ति देती है। माहेश्वरी समाज यदि उद्योग-व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता के शिखर पर बैठा है, तो इसका श्रेय समाज के श्रेष्ठ संस्कारों को ही जाता है। अतः इस पावन पर्व पर माता महालक्ष्मी के साथ अपने इन संस्कारों को भी नमन करें और इन्हें अपने तथा अपने परिवार के जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करें।

अशोक सोमानी
पूर्व उपसभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

जरुरतमंदों का सहारा बनें

अपव्यय को रोकना बहुत जरुरी है। इससे ही विकास बाधित होता है। अतः एक बार दिखावे तथा अनावश्यक खरीददारी पर रोक लगाकर, उस पर होने वाली धनराशि के व्यय का उपयोग जरूरतमंदों की मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए करके देखें। इससे हमारी धनराशि का सदुपयोग भी होगा और हमें परम शांति तथा पुण्य का अनुभव प्राप्त होगा। एक बार गरीबों में मिठाईयां बांट कर देखिये, अपार सुख और खुशी प्राप्त होगी। आप सभी के घर परिवार एवं व्यापार में हमेशा सुख, समृद्धि, शांति और आनंद का वास बना रहे। साथ ही इन सभी का उपभोग करने हेतु आप सभी को आरोग्य व धन की प्राप्ति हो ऐसी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

कमलकिशोर चांडक
पूर्व संयुक्त मंत्री, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

।। मंगलकामनाएं ।।

सभी सुखी समृद्ध रहें

दीपावली के पावन पर्व पर समस्त माहेश्वरी बंधुओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कुशलता की मंगलकामना करता हूँ।

मैं कामना करता हूँ कि समाज में सदैव प्रेम, सहनशीलता, सद्भावना, सदाचार, समर्पण बना रहे। समाज व्यापार-व्यवसाय, शिक्षा, राजनैतिक, खेल, कला, साहित्य, सांस्कृतिक इत्यादि क्षेत्र में सफलता की ऊंचाईयों को छुएं। समाज बंधुओं को प्रतिष्ठा एवं सफलता प्राप्त हो, समाज बंधु सदैव प्रसन्नचित्त रहें। मैं यही कामना करता हूँ कि समाजजन और अधिक समृद्धशाली बने, स्वस्थ और सुरक्षित रहे, समाज प्रगति करे और राष्ट्रहित में समाज का योगदान अधिक से अधिक बढ़े।

पुनः इस पावन पर्व की शुभकामनाऐं।

श्यामसुंदर राठी

कार्य समिति सदस्य अ.भा. माहेश्वरी महासभा

समयानुकूल तैयार रहें

सभी को माता महालक्ष्मी की उपासना के इस पर्व की बहुत-बहुत शुभकामनाएं और सभी के स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की मंगलकामनाएं।

हमारा समाज हमेशा से व्यावसायिक क्षेत्र में शीर्ष समाज रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण रहा है, अपने आपको समयानुकूल तैयार रखना। हमने हमेशा बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको तैयार रखा। वर्तमान दौर में भी व्यावसायिक क्षेत्र में बहुत बड़े परिवर्तन हो रहे हैं, तकनीक बदल रही है, वहीं विश्व का परिदृश्य भी। अतः इन परिस्थितियों के अनुसार भी हमें तैयार रहना होगा।

बाबूलाल जाजू

ख्यात पर्यावरणविद, भीलवाड़ा

कुरुतियों को बढ़ने से पहले ही रोकें

सभी स्वजातीयजनों को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं और सभी के सर्वमंगल की माता महालक्ष्मी से कामना करते हैं।

हमारा समाज हमेशा से सुधारवादी सोच वाला समाज है। यही कारण है कि देश में व्याप्त कुरुतियों के सुधार में भी हमेशा समाज ने अहम भूमिका निभाई है। वर्तमान में भी मांगलिक आदि अवसरों पर दिखावा एक बड़ी कुरुति का रूप लेता जा रहा है। हमें इस पर भी रोक लगाकर अपनी आदर्श सामाजिक संस्कृति का परचम लहराना है।

रामकुमार टावरी

पूर्व संयुक्त मंत्री, अ.भा माहेश्वरी महासभा

आमजन को भी साथ लें

दीपावली पर्व की शुभकामनाओं के साथ सभी के सर्वांगीण विकास की मंगलकामनाएं।

आज हम अपने आपको देश का सबसे समृद्ध समाज कहते हैं लेकिन विडंबना है कि हमारे ही समाज का एक बड़ा वर्ग भारी आर्थिक संकट से भी गुजर रहा है। समाज ने इनके लिये कई योजनाएं बनाई लेकिन या तो ये इन तक नहीं पहुंची या ये उन योजनाओं से अपने स्वाभिमान के कारण दूर रह गये। ऐसे में जरुरी है कि हम इन्हें अपनत्व व सम्मान के साथ इस तरह साथ लेकर इन योजनाओं तक पहुंचाएं जिससे इनका स्वाभिमान भी आहत न हो और ये समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल भी सकें।

ममता मोदानी

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन

॥ जय महेश ॥

दीपावली

की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

गंगाराम चाँदमल तोतला

'श्री नरसिंग निवास' 3-5-45, जागृति कॉलेज के सामने, रामकोट, हैदराबाद – 500 095

फोन : +91 9849022503

KWC Estd. 1969

Kamal Watch Co.

Sales & Service

FLAGSHIP STORE ▸ KWC Luxurio, Kalpataru Grandeur (Square), Next To Starbucks Ph. : 9121359992

Orbit Mall, Shop No - 37-38-39A, A. B. Road Ph. : 9121359994

TELANGANA | ANDHRA PRADESH | ODHISHA | MAHARASHTRA

Corporate Office : 8-2-293/82/a/1103, 2nd Floor, Road No. 36, Near Peddamma Temple Circle, Jubilee Hills, Hyderabad, 500033

BAJAJ FINSERV EMI facility also available

Follow us on

Shop Online www.kamalwatch.com

बधर माता के जागरण का आयोजन

भीलवाड़ा। महेश्वरी समाज के चौदह गोत्रों की कुलदेवी बधरमाता का जागरण पहली बार धूमधाम से संपन्न हुआ। श्री कुलदेवी बधर माता सेवा समिति के अध्यक्ष पूर्व पार्षद राधेश्याम सोमानी ने बताया कि पहली बार भीलवाड़ा के 550 परिवारों ने जागरण का भव्य आयोजन किया। कार्यक्रम प्रभारी देवेंद्र सोमानी थे। इस अवसर पर कुलदेवी ट्रस्ट के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गोविंद गदिया (मेवाड़ यूनिवर्सिटी), पूरणमल मर्दा मालेगांव, रोशन लाल सोमानी इंदौर, लवराज गदिया उदयपुर, अशोक सोमानी जोधपुर आयोजन समिति के संरक्षक राधाकिशन सोमानी, श्यामसुन्दर सोमानी आदि उपस्थित थे। भजन गायक अनिल जेथलिया एंड पार्टी ने माताराणी के भजनों की शानदार प्रस्तुति दी और गरबा गायन पर सबको नृत्य के लिए मजबूर कर दिया। भजन गायक राजेंद्र हिंगड़, शिवनारायण सोमानी ने भी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन प्रभात सोमानी, बृजमोहन सोनानी, लक्ष्मीनारायण सोमानी, दिनेश छापरवाल ने किया।

दशहरा मेला का आयोजन

गुलाबपुरा। नगर पालिका गुलाबपुरा द्वारा आयोजित दशहरा मेला चेयरमैन सुमित काल्या व पालिका के पार्षद व आमजन के प्रयासों से 1 लाख से अधिक जन समूह की उपस्थिति में संपन्न हुआ। विजयादशमी के पावन पर्व पर 2 दिन तक चले इस ऐतिहासिक मेले में कवि सम्मेलन व रावण दहन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विजयदशमी की पूर्व संध्या पर विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें तारक मेहता का उलटे चश्मा सीरियल फेम अभिनेता शैलेश लोढ़ा सहित कई ख्यातिनाम कवियों द्वारा 40 हजार से अधिक श्रोतागणों की उपस्थिति में काव्य पाठ किया गया। कवि सम्मेलन में आसपास के 50 किलोमीटर क्षेत्र से पधारे सभी श्रोतागणों ने कार्यक्रम की प्रशंसा की। दशहरे के दिन चेयरमैन सुमित काल्या के सराहनीय प्रयासों से रामायण के श्री राम और लक्ष्मण का पात्र निभाने वाले अरुण गोविल और सुनील लहरी आकर्षण का केंद्र रहे।

कन्या भोज का आयोजन

लखनऊ। गत 29 सितंबर को माहेश्वरी समाज लखनऊ की प्रेरणा से विनोद प्रकाश माहेश्वरी पूर्व अध्यक्ष पूर्वी उत्तरप्रदेश महेश्वरी सभा (सत्र 2014-2016, 2017-2019) ने मुंशी लीलावती अनाथालय मोती नगर, लखनऊ में 100 से अधिक कन्याओं को भोजन करवाया। श्री माहेश्वरी हर वर्ष दो बार यह कार्यक्रम करवाते हैं। इस कार्य के लिए शरद लाहोटी अध्यक्ष माहेश्वरी समाज लखनऊ एवं निखिल बल्दुआ मंत्री माहेश्वरी समाज लखनऊ तथा पूरी कार्यकारिणी ने उनका आभार व्यक्त किया।

बायोडाटा अवलोकन कार्यक्रम संपन्न

भीलवाड़ा। मासिक बायोडाटा अवलोकन कार्यक्रम माहेश्वरी समाज संपत्ति ट्रस्ट, नागोरी गार्डन, भीलवाड़ा में आयोजित हुआ। जिला माहेश्वरी सभा मंत्री रमेश राठी, नगर सभा उपाध्यक्ष सुरेश बिडला, श्रवण समदानी, संपत माहेश्वरी, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य ओम गंदोड़िया, तहसील प्रतिनिधि राम सहाय भदादा (गंगापुर) आदि ने दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया। श्रवण समदानी ने बताया कि भीलवाड़ा मुख्यालय के साथ चित्तौड़, उदयपुर, मनासा में भी शाखाएं सेवारत हैं जिनमें सभी बायोडाटा भीलवाड़ा मुख्यालय की तर्ज पर ही उपलब्ध हैं। शीघ्र ही पुष्कर और ब्यावर में नवीन कार्यालय प्रारम्भ किये जायेंगे। मुख्य संयोजक श्रवण समदानी व सम्पत माहेश्वरी ने सबका आभार व्यक्त किया।

अ.भा. युवक युवती परिचय सम्मेलन

जयपुर। गुलाबी शहर जयपुर में श्री माहेश्वरी समाज के प्रकल्प माहेश्वरी इंटरनेशनल मैरिज ब्यूरो एवं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा की ईकाई पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा की सहभागिता से आगामी 24 व 25 फरवरी 2024 को युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। इच्छुक समाजजन 5 फरवरी 2024 तक अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। 'उत्सव भवन' में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में सुविधापूर्ण व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस विषय में प्रदेशाध्यक्ष जुगलकिशोर सोमाणी, मैरिज ब्यूरो के चेयरमैन संजय माहेश्वरी, विवाह प्रकोष्ठ मंत्री एवं महासभा की विवाह सहयोग समिति के सदस्य सत्यनारायण करवा, संयोजक राजीव बागड़ी से सम्पर्क कर पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

अन्नकूट स्नेह मिलन आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज का दीपावली स्नेह मिलन एवं अन्नकूट महोत्सव 18 नवम्बर को सांय 6.00 बजे से माहेश्वरी विद्यालय, तिलक नगर प्रांगण में परम्परागत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। समाज अध्यक्ष केदार मल भाला ने बताया कि अन्नकूट महोत्सव के लिए राजकुमार झंवर को संयोजक बनाया गया है। समाज महामंत्री मनोज मूंदड़ा ने बताया कि स्नेह मिलन के अवसर पर बांके बिहारीजी फूल-बंगले एवं छप्पन भोग की भव्य झांकी सजायी जायेगी तथा महाआरती का आयोजन किया जायेगा। समारोह में भक्ति संगीत संध्या की भी प्रस्तुति दी जायेगी। अन्नकूट प्रसादी में लगभग 5000 लोगों की उपस्थिति का अनुमान है। कार्यक्रम स्थल पर बुफे एवं पृथक ब्लॉक्स में टेबल-कुर्सी पर बैठकर प्रसाद ग्रहण करने की व्यवस्था की गई है।

डॉ. सोमानी को अमृत सम्मान

अजमेर। जाने-माने साहित्यकार डॉ. विनोद सोमानी 'हंस' को वर्ष 2023-2024 के लिए अमृत सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण की अध्यक्षता में हुई संचालिका एवं सरस्वती सभा की बैठक में सर्वसम्मत निर्णय के बाद अमृत सम्मान एवं विशिष्ट साहित्यकार सम्मान से अलंकृत होने वाले 51 साहित्यकारों की जारी सूची में अजमेर के डॉ विनोद सोमानी 'हंस' का नाम अमृत सम्मान के लिए घोषित किया गया है। इस बार कुल पंद्रह साहित्यकारों को अमृत सम्मान से अलंकृत किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि डॉ. विनोद सोमानी 'हंस' को इससे पहले सन 2012 में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर की ओर से गणेशीलाल व्यास उस्ताद पद्म पुरस्कार, वर्ष 2012 में ही मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की ओर से महाकवि गुलाब खण्डेलवाल मीरा काव्य पुरस्कार, वर्ष 2011 में रामनिवास आशारानी लखोटिया ट्रस्ट नई दिल्ली की ओर से लखोटिया पुरस्कार, वर्ष 2000 का साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से राष्ट्रीय राजस्थानी अनुवाद पुरस्कार, वर्ष 1999 में दलित साहित्य अकादमी महाराष्ट्र द्वारा प्रेमचंद लेखक पुरस्कार सहित अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

कुछ लोग अगरबत्ती में भी उसके धुएँ को देखते हैं, खुशबू को नहीं.. अतः किसी और का नजरिया हमारा अस्तित्व निर्धारित नहीं कर सकता है.!

डांडिया रास का हुआ आयोजन

बैंगलोर। माहेश्वरी महिला संगठन एवं माहेश्वरी युवा संघ द्वारा डांडिया रास 2023 का आयोजन बीईएस कॉलेज के प्रांगण में 22 अक्टूबर को किया गया। सचिव निर्मला काँकाणी ने बताया कि डांडिया रास कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक वेणु गोपाल बजाज, प्राइज़ प्रायोजक रेवन्तमल झंवर, मुख्य द्वार प्रायोजक पंच केसरी बडेरा ज्वेलर्स के मालिक मानक चंदजी थे। माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्षा श्वेता बियाणी, युवा संघ के अध्यक्ष दीपक मंत्री, सभा के उपाध्यक्ष भगवान दास लाहोटी, सेवा ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष भगवान बलदवा, माहेश्वरी सौहार्द क्रेडिट को-ऑ. लि. अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण डागो, चेतन साबू, आयुषी काबरा, सुनीता मुन्दडा, रीतू चितलांग्या, निवर्तमान अध्यक्षा कान्ता काबरा ने कर्मठतापूर्वक कार्य भार संभाला। कार्यक्रम का संचालन स्नेहा माहेश्वरी ने किया। सुरेश बियाणी, लक्ष्मी नारायण देवकी डागा, नितीन जैन, गोविन्द काबरा, किरण काबरा, सतीश काबरा, रमेश लाखोटिया, विनीत बियाणी, विजय मुन्दडा, संजय फलोड, वसुंधरा रांदड, विजय बिमला साबू, सुरेंद्र सोमानी, सुरेंद्र थिरानी आदि का सहयोग रहा। हेम्पर प्रायोजक बैंगलोर ड्राइफ्रूट्स मालिक मुकेश चितलांग्या रहे।

रवि गांधी बने बीएसएफ एडीजी

पोखरना। पोखरना निवासी रवि गाँधी बीएसएफ में एडीजी नियुक्त हुए। सम्भवतः प्रथम माहेश्वरी बंधु सेना समकक्ष बीएसएफ (BSF) के एडीजी जैसे उच्चस्थ पद पर आसीन हुए हैं। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

शिव महापुराण का आयोजन

बैंगलोर। स्थानीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा श्री श्रावण पुरुषोत्तम मास के अवसर पर सप्तदिवसीय श्री शिव महापुराण कथा का आयोजन 18 से 24 जुलाई तक माहेश्वरी भवन में आयोजित किया गया। सचिव व निर्मला काकाणी ने बताया कि माहेश्वरी सौहार्द कोआपरेटिव सोसायटी के अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण डागा, नन्द किशोर मालू, माहेश्वरी फ़ाउंडेशन के चेयर मेन राज गोपाल भूतडा, माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के चेयरमेन मोहनलाल, समाज के वरिष्ठ सदस्य गोरीशंकर सारड़ा, बसंत सारड़ा, महिला संगठन की अध्यक्षा श्वेता बियाणी व पदाधिकारीगण सदस्य एवं कार्यकारिणी सदस्य एवं सलाहकार सदस्य उपस्थित रहे। संचालन सुनिता लाहोटी ने किया।

॥ दीपो के पर्व दीपावली की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ ॥

दिवाली, एक प्रमुख हिन्दू त्योहार है, जो हर साल धूमधाम से मनाया जाता है। इसे 'दीपावली' भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें दीपों की रात्रि में जगमगाहट होती है। दिवाली का मतलब होता है अच्छाई की विजय और बुराई के प्रति जीत। इसे लक्ष्मी माता की पूजा के साथ मनाया जाता है, जिससे संपत्ति और धन की कामना की जाती है। यह त्योहार आपसी सदभावना, धार्मिकता, और परिवारिक एकता का प्रतीक है। दिवाली के दिन, हम दीपों को जलाते हैं, मिठाइयों का सेवन करते हैं और एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं। इस त्योहार का महत्व हमारे सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा होता है और ख़ुशियों का संदेश लेकर आता है। दिवाली का त्यौहार आत्मा के पुनर्जन्म का प्रतिनिधित्व करता है। दिवाली के दौरान, व्यक्ति को एक स्वस्थ और नैतिक व्यक्ति बनने के लिए बदलाव करने की प्रेरणा मिलती है। सभी को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए यही कहूंगी कि दीपावली का त्योहार सभी के जीवन को ख़ुशीया प्रदान करें और नया जीवन जीने का उत्साह प्रदान करता रहें।

निर्मला मल्ल

राष्ट्रीय समिति प्रभारी, स्वयंसिद्धा महिला सशक्तिकरण

मधुमेह की निःशुल्क जाँच

बठिण्डा। स्थानीय माहेश्वरी सभा की तरफ से डॉ. रमेश माहेश्वरी (माहेश्वरी हॉस्पिटल) के सहयोग से शुगर का फ्री चेकअप कैम्प सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक आयोजित किया गया। कैम्प में डॉक्टर माहेश्वरी द्वारा शुगर के मरीजों का चेकअप किया गया। कैम्प में 21 मरीजों का 3 महीने का शुगर टेस्ट थायरोकेयर कंपनी के सहयोग से बिल्कुल फ्री किया गया। इस कैम्प को सफल बनाने में अध्यक्ष के. के. मालपाणी, सचिव सुप्रीम कोठारी, सुशील मूंधड़ा, सोहन माहेश्वरी, प्रवीण मिमानी, राजेन्द्र लखोटिया, आदि का विशेष सहयोग रहा।

अन्नकूट का होगा आयोजन

जयपुर। स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा दीपावली उपरांत आगामी 18 नवम्बर को राजकुमार झंवर के संयोजकत्व में परम्परागत भक्ति संध्या के साथ माहेश्वरी हाई स्कूल के तिलक नगर प्रांगण में अन्नकूट का आयोजन होगा। समाज अध्यक्ष केदार भाला ने बताया कि इस आयोजन में पांच हजार से भी अधिक समाज बंधु सम्मिलित होंगे। महामंत्री मनोज मून्धड़ा अपनी टीम के साथ व्यवस्था सम्भालेंगे।

जल झूलनी महोत्सव संपन्न

मांडला। ग्राम लेसवा में माहेश्वरी समाज द्वारा माहेश्वरी युवा संगठन के तत्वावधान में जल झूलनी महोत्सव मनाया गया। लेसवा समाज 2018 से लेसवा ग्राम की समस्त विवाहित बेटियों-दामादों को बाहर रह रहे गांव से सह परिवार आमंत्रित करता है। इस अवसर पर इस वर्ष लेसवा समाज ने जिला पदाधिकारी एवं तहसील पदाधिकारियों को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया। महासभा के कार्यालय मंत्री जगदीश प्रसाद कोगटा ने महासभा द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। जिला अध्यक्ष अशोक बाहेती ने समाज की विभिन्न योजनाओं को अंतिम छोर तक समाज के व्यक्ति तक पहुंचाकर लाभान्वित करने पर जोर दिया। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व महासभा सदस्य कैलाश कोठारी ने समाज की चिकित्सा सहायता, हॉस्टल सुविधा, शिक्षा व विधवा सहयोग आदि की जानकारी दी। पवन मंडोवरा तहसील अध्यक्ष ने एबीएमएम डाउनलोड करने की अनिवार्यता व महत्व की जानकारी दी। इस अवसर पर लेसवा माहेश्वरी समाज बागोर के जिला उपाध्यक्ष रामकृष्ण सोनी, तहसील सचिव कृष्ण गोपाल ईनाणी, जिला प्रतिनिधि गोपाल बिरला, प्रमोद ईनाणी आदि सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे। माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष राजेश सोमानी व सचिव राजेंद्र काबरा ने आभार व्यक्त किया।

कन्या पूजन एवं अल्पाहार वितरण

उदयपुर। ओम सेवा संस्थान एवं लायंस क्लब उदयपुर 'ओम' के संयुक्त तत्वावधान में दयानन्द कन्या विद्यालय में कन्या पूजन किया गया जिसमें 171 बालिकाओं को अल्पाहार कराया गया। जानकारी देते हुए संस्थापक ओमप्रकाश मूथा ने बताया कि मुख्य अतिथि लायंस क्लब की क्षेत्रीय अध्यक्ष सुषमा झुनझुनवाला तथा विशिष्ट अतिथि भगवती देवी मूथा थी। इस अवसर पर संस्थान एवं क्लब के स्कूल के साथी अशोक जोशी, पूनम मूथा, भजनलाल गोयल, गौरव मूथा, प्रेमलता मेनारिया, पुष्पा सिंघी, जितेन्द्र चित्तौड़ा आदि का सहयोग रहा।

नवज्योति रास गरबा का आयोजन

नागपुर। ज्योति महिला मंडल, महल द्वारा आयोजित 10 दिवसीय नवज्योति रास गरबा वर्कशॉप का आयोजन हुआ। इस गरबा वर्कशॉप में करीब 50 युवतियों एवं महिलाओं को सुप्रसिद्ध कोरियोग्राफर द्वारा गरबा प्रशिक्षण दिया गया। वर्कशॉप के समापन के रूप में अंतिम दिन प्री नवरात्रि गरबा इवनिंग का आयोजन महेश भवन गांधीबाग में किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं मे सभी ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। आयोजन का शुभारम्भ अध्यक्ष अर्चना बिंझानी, सचिव स्वाति सावल व निवर्तमान अध्यक्ष इंदिरा सावल द्वारा किया गया। सभी के लिए अल्पाहार तथा ज्यूस की व्यवस्था मंडल द्वारा की गई थी। साथ ही वर्कशॉप में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाणपत्र भी दिये गये। संयोजिका राधिका मोकाती, अनुझा बिंझानी, गीतिका भूतड़ा व संगीता भट्टड रहीं। कांता सावल, कीर्ति भैया, कल्पना मोहता, रचना सावल, दीप्ति सावल, पूजा गोयदानी आदि का सक्रिय योगदान रहा।

नज़र से नज़रिए का.. स्पर्श से नीयत का.. भाषा से भाव का.. बहस से ज्ञान का.. और व्यवहार से संस्कार का पता चल ही जाता है.!

निवेशकों को दिया "निवेश मंत्र"

देश ने 75 साल में विकास किया उसका 10 गुना अगले 25 साल में होगा- आनंद राठी

भायन्दर। माहेश्वरी मण्डल द्वारा गत 15 अक्टूबर को श्री माहेश्वरी भवन में निवेश मंत्र कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मण्डल के सदस्यों ने आये हुए सभी अतिथियों का परिचय दिया गया। तत्पश्चात उनका स्वागत किया गया। आनन्द राठी का स्वागत माहेश्वरी मण्डल भायन्दर अध्यक्ष नटवर डागा व माहेश्वरी भवन न्यास मण्डल अध्यक्ष मदन भूतड़ा ने मोमेंटो व गीता की पुस्तक देकर किया। अश्विन मेहता का स्वागत माहेश्वरी मण्डल भायन्दर सचिव नारायण तोषनीवाल व माहेश्वरी भवन न्यास मण्डल सचिव हरिप्रसाद असावा ने किया। रमेश दम्माणी का स्वागत मण्डल कोषाध्यक्ष सुरेश दरक व युवा समिति सचिव पवन बाहेती ने किया। मधु केला का स्वागत मण्डल कार्यक्रम संयोजक धरमचन्द माहेश्वरी व मण्डल सदस्य सीए गौरीशंकर चितलांगिया ने किया। सोनल भूतड़ा मालू का स्वागत महिला समिति अध्यक्षा मंजू मालपानी व महिला समिति सचिव सुधा कांकाणी ने किया। आनंद राठी ने निवेशकों को सलाह देते हुए कहा कि शेयर बाजार में 15% का रिटर्न छूटना बहुत अच्छी बात होती है। पिछले 75 साल में भारत की जीडीपी 3.5 ट्रिलियन डालर हुई है और आगे 25 सालों में 35 ट्रिलियन डालर होने की सम्भावना है। अश्विन मेहता ने कहा कि हमें सरकार से आग्रह करना चाहिए, शेयर बाजार की शिक्षा को नियमित पाठ्यक्रम में सम्मिलित करें। रमेश दम्माणी ने कहा कि आप म्यूच्यूअल फंड में निवेश करके 15% रिटर्न कमा सकते हैं और सुपर रिटर्न आपको डायरेक्ट इक्विटी में निवेश करके ही मिल सकता है। मधु केला ने बताया कि शेयर बाजार में कोई नियम नहीं होता है। सभी पैनल निवेशकों ने यही सलाह दी कि निवेश लम्बी अवधि के लिए करना चाहिए एवं कम्पनियों का चयन करने से पहले उसकी पूरी तरह से जाँच पड़ताल करनी चाहिए। इस कार्यक्रम में 550 लोगों की उपस्थिति थी। कार्यक्रम का मंच संचालन शरद भूतड़ा ने किया। मण्डल कोषाध्यक्ष सुरेश दरक ने आभार प्रकट किया।

गरबा एवं डांडिया प्रतियोगिता का आयोजन

राजसमंद। श्री महेश महिला प्रगति संस्थान के तत्वावधान में महेश नगर में नवरात्रि के उपलक्ष्य में माहेश्वरी समाज की महिलाओं ने गरबा एवं डांडिया रास का भव्य आयोजन किया। गरबा नृत्य में प्रथम स्थान सरोज काबरा, द्वितीय रेखा ईनाणी तथा बेस्ट वेशभूषा में अक्षिता फोफलिया प्रथम एवं संगीता कासट द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्षा मानकंवर न्याती ने बताया कि कार्यक्रम में उपाध्यक्ष तारा ईनाणी, सरिता लड्ढा सचिव, मीनाक्षी ईनाणी कोषाध्यक्ष, मंजू जेथलिया संगठन मंत्री गीता मंडोवरा, सह सचिव मधु मंडोवरा, उर्मिला तोषनिवाल, उर्मिला काबरा, सुमन काबरा, शकुंतला बंग, यशोदा कासट, सुशीला मंत्री आदि उपस्थित थी। उपाध्यक्ष तारा ईनाणी ने बताया कि प्रतियोगिता के विजेताओं को पारितोषिक भी प्रदान किया गया।

बोड़ा बने मारवाड़ी सहायक समिति के सचिव

रांची। मारवाड़ी समाज की प्रमुख संस्था मारवाड़ी सहायक समिति के सत्र 2023 -25 के चुनाव में माहेश्वरी समाज के युवा सदस्य रमन बोडा ने सचिव पद पर विजय प्राप्त की। श्री बोडा रांची माहेश्वरी समाज की कार्यकारी मंडल के सक्रिय सदस्य भी हैं। 20 सदस्यों की कार्यकारिणी समिति में राम बांगड़ एवं अर्चना साबू भी निर्वाचित हुए।

कविता

दीवाली

मन में जगे उल्लास, तो समझो दीवाली।
गौरी के मन मधुमास, तो समझो दीवाली।।

जगमग जलाओ दीप, उजाला करना है।
अँधियारे का हो जाये नाश, तो समझो दीवाली।।

राम का हुआ वनवास, जन मन मुर्झाया।
लौटे अयोध्या राम, तो समझो दीवाली।।

भाई-भाई का शत्रु, टूट रहे परिवार।
गले मिले राम भरत, तो समझो दीवाली।।

बिगुल बजे समृद्धि का, गूंज उठे आकाश।
कोई भी न रहे निराश, तो समझो दीवाली।।

हिंसा की जहरीली आग, फैली है चहुँओर।
सब में हो प्रेम का वास, तो समझो दीवाली।।

लाभ शुभ हो सर्वत्र, मानवता को प्यारा।
मनों में नहीं हो खार, तो समझो दीवाली।।

डॉ. विनोद सोमानी हंस
42/43 जीवन विहार कॉलोनी,
अजमेर- 305004 (राज.)
9351090005

दिल्ली प्रदेश में सेवा गतिविधियाँ

दिल्ली। प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा गत सितंबर माह में प्रदेश अध्यक्ष श्यामा भाँगड़िया व सचिव लक्ष्मी बाहेती के नेतृत्व में सेवा गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसमें गुजरात से आए हुए प्रसिद्ध रामजट रास गरबा वर्कशॉप में पश्चिमी क्षेत्र की 18 सदस्याओं ने सीखने का आनंद लिया। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित Rainbow - उत्सव के रंग, कला के संग वर्कशॉप में प्रदेश की महिलाओं व बच्चों ने पूजा प्रसाद बनाना, आरती थाली सजाना, कॉफी पेंटिंग तथा इको फ्रेंडली गणपति बनाने की कार्यशाला में भाग लिया व बछ बारस का सामूहिक आयोजन किया। राष्ट्र स्तरीय प्रथम कहानी लेखन प्रतियोगिता दिल्ली के आठों क्षेत्रों के मध्य करवाई, जिसमें से प्रथम तीन चयनित प्रविष्टि को राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए भेजा गया है। मध्य क्षेत्र द्वारा तीज़ पर्व पर सोलह श्रृंगार के साथ तैयार होकर ऑनलाइन रैम्प वॉक वीडियो प्रतियोगिता का आयोजन किया। उत्तर पश्चिमी क्षेत्र द्वारा जन्माष्टमी पर्व व उत्तरी क्षेत्र द्वारा राधाष्टमी रास उत्सव का आयोजन किया गया। इसी प्रकार सभी 10 समितियों द्वारा सतत सेवा गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

उद्यमी मेले का हुआ आयोजन

महू। गत दिनों माहेश्वरी विद्यालय में एक संकल्प उद्यमी मेले का आयोजन किया गया। जो महिलाएं घर से कार्य करती हैं उनको प्लेटफार्म देने के लिए व उनका सामान विक्रय करने के लिए यह मेला आयोजित किया गया। मेले में करीब 50 तरह के स्टॉल लगाए गए, जिसमें ज्वेलरी, साड़ियां, सूट, होम डेकोरेशन की वस्तुएं, घरेलू उपयोग की वस्तुएं, किचन सामग्री की होममेड वस्तुएं, चांदी के सामान, वेस्टर्न वियर, कलात्मक हैंड वर्क के सामान के स्टाल लगाए गए। साथ ही दंत चिकित्सक द्वारा निःशुल्क जांच भी की गई। इस दौरान तंबोला एवं लकी ड्रॉ के उपहार दिए गए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अभा माहेश्वरी महिला मंडल की भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा गीता मूंदड़ा थीं। कार्यक्रम संयोजक स्वाति शारदा, रजनी सोडाणी, किरण माहेश्वरी, शकुंतला ढोली, रमिला मालानी, कांता सोढ़ानी, पदमा सोडाणी, आशा सोडाणी, संगीता सोडाणी, सीता चिचानी, शीतल सोडाणी ने सहयोग दिया। इसमें अध्यक्ष स्वाति शारदा, सचिव रजनी सोडाणी, माहेश्वरी महिला मंडल महू ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

कवि सम्मेलन का हुआ आयोजन

सूरत। जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा साहित्य समिति (ज्ञान सिद्धा) के अंतर्गत कवि सम्मेलन का आयोजन जी.डी. गोयनका इंटरनेशनल स्कूल ऑडिटोरियम में सायं 7:30 से 11 बजे तक किया गया। यह आयोजन जरूरतमंद परिवारों को मेडिकल सहायतार्थ किया गया। इसमें दिनेश देशी घी राजस्थान से, सुमित्रा सरल भाभरा से (वाह भाई वाह फेम), हिमांशु हिंद (राष्ट्रीय ओजरस) छत्तीसगढ़ से, हीरामणि वैष्णव (राष्ट्रीय हास्य कवि) इत्यादि कवियों ने कार्यक्रम पेश किया। मुख्य अतिथि बिमला साबू, विशेष अतिथि रामरतन भूतड़ा एवं शंकर सोमानी रहे। कवि सम्मेलन का संचालन राजस्थान पत्रिका के प्रदीप जोशी द्वारा किया गया। कार्यक्रम की संयोजिका अनीता राठी (साहित्य समिति संयोजिका) संगीता राठी, नीरू साबू, सुनीता सोमानी, वंदना भंडारी, रेखा पोरवाल, रामकन्या एवं टीम की सभी सदस्याओं का सहयोग रहा। 400 लोगों की उपस्थिति रही। उक्त जानकारी अध्यक्ष वीणा तोषनीवाल, सचिव प्रतिभा मोलासरिया ने दी।

माहेश्वरी ट्रस्ट को आर्थिक सहयोग

बठिंडा। माहेश्वरी सभा द्वारा समाज के दानदाताओं के सहयोग से माहेश्वरी ट्रस्ट के लिए 330100/- रूपए का योगदान दिया गया। माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष के. के. मालपानी और सचिव सुप्रीम कोठारी ने बताया कि हरियाणा पंजाब प्रादेशिक माहेश्वरी ट्रस्ट द्वारा समाज की विधवा बहनों, बेटियों और असहाय बजुर्गों को पैंशन दी जाती है। नीरज चांडक, सुरिंदर माहेश्वरी, सुरेश होलानी, सुशील मुंधड़ा, परवीन मिमानी, गोविंद डागा, सुरेश चांडक और समाज के दानी सज्जनों के सहयोग से प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के सचिव जगदीश मंत्री की मौजूदगी में 330100/- रूपए का चैक हरियाणा पंजाब प्रादेशिक माहेश्वरी ट्रस्ट के सचिव सोहन माहेश्वरी को भेंट किया गया।

"सुख पाने के लिए हम इच्छाओं की कतार लगाएं या आशाओं के अम्बार,परंतु सुख का ताला केवल और केवल संतुष्टि की चाबी से ही खुलता है.."

समाज का बहन-बेटी सम्मेलन

लेसवा। माहेश्वरी समाज एवं युवा संगठन द्वारा माहेश्वरी समाज की बहन-बेटियों का अलौकिक सम्मेलन गत दो वर्ष की भाँति तीसरे वर्ष भी अखिल भारतीय माहेश्वरी सभा के कार्य समिति सदस्य एवं रामेश्वरम के अध्यक्ष कैलाश कोठारी, प्रोफेसर जगदीश कोगटा, जिलाध्यक्ष अशोक बाहेती, उपाध्यक्ष रामकिशन सोनी, युवा जिलाध्यक्ष बादल बिहानी के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इस अवसर पर गांव की सभी आमंत्रित बहन-बेटी व बहनोईयों का भाव भरा स्वागत सत्कार कर सभी को स्मृति चिन्ह भेंट कर आदर सम्मान किया गया। समारोह में रामजस रामपाल पारस सोनी, पवन माधव पार्थ समदानी द्वारा माहेश्वरी युवा सगठन लेसवा के सभी युवा साथियों का उपरना पहनाकर सम्मान किया गया। समारोह में जिला व तहसील स्तरीय पदाधिकारी भी उपस्थित थे। युवा संगठन के अध्यक्ष राजेश सोमानी, मुरलीधर नवल, शिव, सत्यनारायण, केदार, अशोक रमेश, भगवतीलाल बिहाणी आदि कई समाजजन उपस्थित थे। उक्त जानकारी सॉवर बिहानी ने दी।

पाँच दिवसीय यात्रा का आयोजन

वाराणसी। माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा विगत दिनों धर्म, अध्यात्म और रमणीय स्थलों के भ्रमण के साथ एक 5 दिवसीय यात्रा सम्पन्न हुई। इस यात्रा के दौरान श्रीनाथजी नाथद्वारा, कॉकरोली, करणी माता, साँवलिया सेठ व अन्य मंदिरों में विधि विधान के साथ दर्शन तथा Statue of Belief, सिटी पैलेस उदयपुर, चित्तौड़गढ़ फोर्ट आदि पौराणिक तथा ऐतिहासिक महत्व वाले स्थलों का भ्रमण किया गया। इस दौरान ट्रेन की यात्रा व अन्य मौकों पर समाज स्वजनों तथा सहयात्री परिवारों के रिश्तेदारों द्वारा आतिथ्य किया गया। कार्यक्रम का संयोजन अनिता डागा ने किया। यात्रा के समायोजन में इन्दू चाण्डक, सुषमा कोठारी, मधु मल्ल, सुधा डागा, संतोष सारड़ा, संजीव चाण्डक, गिरिराज कोठारी, धीरज मल्ल आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

"अपनी बातों को हमेशा ध्यान पूर्वक कहें, क्योंकि हम तो कह कर भूल जातें है, लेकिन लोग उसे याद रखते है.."

'मिशन आईएएस' का आयोजन

गुवाहटी। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी सभा द्वारा माहेश्वरी समाज के युवक युवतियों के लिए प्रशासनिक सेवा परीक्षा की तैयारी से संबंधित कार्यक्रम 'मिशन आईएएस 100' का आयोजन छत्रीबाड़ी स्थित माहेश्वरी भवन में किया गया। अध्यक्ष सीताराम बिहानी ने बताया कि माहेश्वरी सभा गुवाहाटी द्वारा आयोजित 'मिशन आईएएस 100' अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा का एक राष्ट्रीय स्तर का मिशन है, इसके तहत एक जन जागरण कार्यक्रम गुवाहाटी में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में माहेश्वरी समाज परिवार के विद्यार्थी एवं उनके अभिभावकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर मिशन आईएएस के राष्ट्रीय समन्वयक कृष्ण प्रसाद दरक, अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (पूर्वांचल) कैलाश काबरा, पूर्वोत्तर माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष बसु दमानी, सचिव राजकुमार सोमानी, माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष सीताराम बिहानी, सचिव सुरेंद्र लाहोटी, आसाम माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष भगवानदास दम्मानी, माहेश्वरी महिला समिति की अध्यक्ष वर्षा सोमानी, सचिव पुष्पा सोनी, माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष शिव रतन सोनी, सचिव राघव बाहेती आदि उपस्थित थे। संयोजक रोहित बिन्नानी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

एमपीएल क्रिकेट का हुआ आयोजन

कोयंबटूर। स्थानीय माहेश्वरी युवा परिषद ने माहेश्वरी प्रीमियर लीग (MPL) क्रिकेट कार्यक्रम का आयोजन विगत माह नेहरू विद्यालय के खेल मैदान में किया गया। इसमें समाज के 60 से ज्यादा युवाओं ने 5 टीमों में भाग लिया। टीम का नाम एवं खिलाड़ियो का चयन IPL की भाँति ऑक्शन (Auction) करके किया गया। प्रतियोगिता की विजेता टीम माहेश्वरी सुपर किंग्स रही जिन्होंने फाइनल मैच 7 विकेट से जीता। टी-शर्ट के प्रयोजक विमल कांकाणी एंव ईनाम के प्रयोजक गिरीराज चांडक क्रमशः थे। कार्यक्रम के अंत में माहेश्वरी सभा कोयंबटूर के वरिष्ठ सदस्यों ने विजेता टीम एंव खिलाड़ियों को ट्रॉफी प्रदान की। कार्यक्रम को सफल बनाने में माहेश्वरी युवा परिषद अध्यक्ष पुरुषोत्तम भुराड़िया, परिषद कार्यकर्ता यश मालाणी, गिरीराज भोमरा, सुमिरन मालू, गिरीराज चांडक, शिव मंत्री सहित समस्त सदस्यों का योगदान रहा।

सामूहिक तर्पण का आयोजन

इन्दौर। श्राद्ध पक्ष में भाजपा नेता और खनिज विकास निगम के पूर्व उपाध्यक्ष, प्रदेश प्रवक्ता गोविन्द मालू के सान्निध्य में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी देश के शहीदों, महापुरुषों, आर.एस.एस.के दिवंगत प्रचारकों, स्वयंसेवकों और भाजपा के दिवंगत नेताओं, कार्यकर्ताओं ब्रह्मलीन संतो, मनीषियों और आतंकी हमलों में दिवंगत हुए निर्दोष नागरिकों का 'कृष्णपुरा छत्री' पर संस्था आनन्द गोष्ठी श्राद्ध-तर्पण आचार्य पं. मनोज भार्गव (रामायणी) के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी योगेन्द्र महन्त सहित कई गणमान्यजन, भाजपा कार्यकर्ताओं तथा संस्था के स्वयंसेवकों ने भी तर्पण कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

चन्द्रयान 3 की सफल लेंडिंग पर हर्ष

जयपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत क्षेत्रीय महिला संगठन जोन-1 ने चंद्रयान 3 की सफल लैडिंग की खुशी में 25 सितम्बर, 2023 को अनोखा गांव में पिकनिक एवं लहरिया उत्सव मनाया गया। क्षेत्रीय महिला संगठन जोन-1 की अध्यक्ष उर्मिला लोहिया ने बताया कि इसमें लगभग 40 सदस्याओं ने भाग लिया। इसमें जिला सरंक्षक उमा परवाल एवं जिला मंत्री सविता राठी को भी आमंत्रित किया गया। सांस्कृतिक मंत्री अपला मूंदड़ा एवं प्रचार व संगठन मंत्री भारती मंत्री ने सभी को सावन के गीतों पर आधारित हाउजी का गेम खेलाया। उक्त जानकारी मंत्री सविता राठी ने दी।

युवा परिषद के चुनाव सम्पन्न

कोयम्बटुर। माहेश्वरी युवा परिषद, की 2023-26 की कार्यकारिणी समिति के दिवार्षिक चुनाव गत 8 अक्टूबर को माहेश्वरी सभा के वरिष्ठ सदस्य राजेश कांकाणी के मार्गदर्शन में संपन्न हुए। चुनाव कार्यक्रम में नये अध्यक्ष एवं 11 कार्यकारिणी सदस्य निर्विरोध चुने गए। इसमें अध्यक्ष-गिरीराज फोमरा, कार्यकारिणी के अन्य सदस्य- सुमिरन मालू, रौनक राठी, लक्ष्मीकांत भुराड़िया, रिलीज चितलांगिया, यश मालानी, रामबाबू कांकाणी, शिव मंत्री, यादव सोमानी, दीपक सोमाणी, गोविंद मण्डोवरा एवं आशीष चांडक आदि शामिल हैं।

सुपोषित आहार किट वितरण

फरीदाबाद। माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट फरीदाबाद ने गत 12 अक्टूबर को 'सुपोषित माँ' अभियान कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाते हुए दसवीं 'सुपोषित आहार' की किट वितरित की। कार्यक्रम का संचालन संयोजक नीतू भूतड़ा ने किया। इसमें 150 गर्भवती महिलाओं और 33 टीबी मरीजों को सुपोषित आहार की किट प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में 150 गर्भवती महिला और 33 टीबी मरीजों तथा उनके साथ आए उनके परिजनों ने भी सुपोषित आहार ग्रहण किया। लगभग 325 लोगों द्वारा सुपोषित आहार ग्रहण किया गया। इस कार्यक्रम में माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष कमल आगीवाल, सचिव श्रवण मीमाणी, माहेश्वरी मंडल की अध्यक्षा पुष्पा झंवर, ललित परवाल, यू.एस. माहेश्वरी, सुमन सोढानी आदि ने सहयोग दिया। यह योजना मेसर्स किर्लोस्कर टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, पीतांबरा ग्रेनाइटस प्राइवेट लिमिटेड, ए बी एम इंटरनेशनल लिमिटेड, बागला ग्रुप ऑफ कम्पनीज के सीएसआर फंड से प्राप्त धन राशि से क्रियान्वित है।

मनाया कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

जयपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत क्षेत्रीय माहेश्वरी महिला संगठन जोन-1 एवं क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा - परकोटा के संयुक्त तत्वावधान में 10 सितम्बर को श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव श्री द्वारकादास जाजू के निवास पर आयोजित किया गया। इसमें करीब 50 महिलाएं तथा क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा, परकोटा के अनेक सदस्य उपस्थित हुए। सभी ने बालकृष्ण लाल को अपने भक्तिपूर्ण भजनों से रिझाया। सुन्दर झांकी सजाई गई। महिलाओं ने भावविहोर होकर भक्तिपूर्ण गीतों पर नृत्य किया। इस कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष उमा सोमानी एवं जिला संरक्षक उमा परवाल भी उपस्थित रही। परकोटा क्षेत्रीय सभा अध्यक्ष त्रिलोक हुरकट एवं सचिव अनिल अत्तार, जोन अध्यक्षा उर्मिला लोहिया, सचिव मम्मू साबू एवं अन्य सभी पदाधिकारियों ने उत्सव का आनंद लिया। सभी को बधाई स्वरूप मेवे एवं खिलौने वितरित किए गए। आरती के पश्चात चाय-नाश्ते की व्यवस्था थी।

ज़िंदगी वो हिसाब है जिसे पीछे जाकर सही नहीं किया जा सकता.. इस लिए, आज में ही सुधार करें और पुरानी बातों को अनुभव की तरह इस्तेमाल करें..!!

डॉ. माहेश्वरी हुई सम्मानित

जोधपुर। विश्व हिंदी परिषद द्वारा राष्ट्रकवि दिनकर की 115 वीं जयंती पर "हिंदी एवं राष्ट्रवाद" विषय पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन विज्ञान भवन दिल्ली में आयोजित हुआ। इस अवसर पर हिंदी के लिए समर्पित विशिष्टजनों का विश्व हिंदी परिषद ने शाल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया। दूसरे सत्र में मणिपुर की महामहिम राज्यपाल सुश्री अनसूया उईके मुख्य अतिथि थीं व अध्यक्षता ऋषिकेश के परमार्थ निकेतन के स्वामी 'श्री चिदानंद सरस्वती' ने की। विशिष्ट अतिथि 'आज तक' न्यूज़ चैनल के संपादक सुधीर चौधरी थे। केंद्रीय राज्य गृह मंत्री अजय कुमार मिश्रा, विधायक सुरेश कुमार भी मंच पर उपस्थित थे। प्रारंभ में स्वागत परिषद के महासचिव डॉ. विपिन कुमार ने किया। इसमें जोधपुर की कवयित्री डॉ. सूरज माहेश्वरी को श्रेष्ठ सृजन विभूति राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया गया।

With Best Compliments

Ajay Bang - 9422165520
Rakhi Bang - 9923280030
Tel : 07234-222014
E-mail : rakhibang1972@gmail.com

HIRALAL MOTILAL
Exclusive Gold Showroom

Main Road, Digras-445 203 Dist. Yavatmal

गौ माता को खिलाई लापसी

सूरत। सद्भावना गौ-सेवा संस्था द्वारा नौ दिन ब्रम्ह मूहर्त में गौ पूजा और लापसी खिलाकर नवरात्रि पर्व मनाया गया। संस्थापक ज्योति बूबना ने बताया कि उनकी संस्था बीमार और निराधार गौ वंश की सहायतार्थ कार्यरत रहती है। साथ ही उनकी संस्था के सदस्यों द्वारा अष्टमी को गौ पूजन और लापसी के साथ ही गरबा भी गौ माता के धाम में ही करके नवरात्रि पर्व बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया। इसमें उनकी संस्था से सरोज सोनी, बृजलता बजाज, इंद्रा बियानी, सुधा मालानी, विभा मंगोटिया, विनीता पटवारी, मंजू लड्ढा, सुनीता जालान, मीना गुप्ता आदि ने पूर्ण सहयोग दिया।

खरी-खरी...

त्याग, समपर्ण सेवा वाले
पाठ सभी निर्मूल गये

अधिकारों के लिये लड़े हम
कर्त्तव्यों का भूल गये

भौतिकता ने नैतिकता पर
ऐसा कुटिल प्रहार किया

राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न
दशरथ के प्रतिकूल गये

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

With Best Compliments From

Shrikant G. Mantri

Member : The Stock Exchange, Bombay

Surya Mahal, 2nd Floor, Nagindas Master Road Fort, Mumbai - 400 001, India
Tel. : 022-2261 8384, 2267 2526 6635 9003, 6635 9004, Fax : 022-22623198
E-mail : sgmantri@usa.net, Resi. : 022-26184126, 2614 4933, Mo. : 98210-26725

नवजात कन्याओं को उपहार भेंट

बूंदी। शक्ति एवं भक्ति के पर्व शारदीय नवरात्रि के अवसर पर सामर्थ्य सोसायटी द्वारा जनाना अस्पताल में नवजात कन्याओं को उपहार भेंट कर उनके उज्जवल भविष्य की मंगल कामना की गई। सोसायटी अध्यक्ष राशि माहेश्वरी ने बताया कि इस अवसर पर कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लगाने एवं कन्या जन्म को उत्सव के रूप में मनाने का आह्वान करते हुए लोगों को समझाइश भी दी गई। सोसायटी सदस्य नम्रता शुक्ला, आराधना जांगिड़, हेमा सोनी, अनीशा जैन, वर्तिका हाडा आदि उपस्थित रहे।

प्रतिभाओं का किया सम्मान

नावां। आदर्श विद्या मंदिर नावां शहर में वंदना सभा में विद्या भारती द्वारा आयोजित प्रतिभा प्रोत्साहन परीक्षा एवं कक्षा आठवीं की बोर्ड परीक्षा के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय समिति के अध्यक्ष सत्यनारायण लड्ढा एवं जिला समिति के उपाध्यक्ष रमेशचन्द बियानी द्वारा विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। अतिथियों द्वारा ग्यारह विद्यार्थियों को प्रांत द्वारा दिए गए प्रमाण पत्र, स्मृति चिह्न व पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्रेष्ठ तीन छात्राओं को गोल्ड मेडल से सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार प्रकट किया गया। इस अवसर पर अतिथियों का परिचय विद्यालय के प्रधानाचार्य रामप्रसाद कुमावत ने करवाया।

सावन का सिंजारा का आयोजन

बैंगलोर। माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा सावन का सिंजारा माहेश्वरी भवन में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम झुले पर बैठे लड्डू गोपाल की पूजा अध्यक्षा श्वेता बियाणी, निवर्तमान अध्यक्षा कान्ता काबरा, सलाहकार सदस्य बिमला साबू, सुशीला बागडी, सचिव निर्मला काँकाणी ने पूजा की। मनोरंजक खेल के तहत चिरमी खेल, सेल्फ़ी फोटो बूथ, डांडिया घूमर नृत्य का आयोजन किया गया। रजनी जाजू ने महिला संगठन की कार्यकारिणी एवं सलाहकार सदस्यों जो 50 से 80 वर्ष की उम्र वाले सदस्यों को पुराने फ़िल्मी गानों पर नृत्य सिखाया। निर्देशिका कला कचोलिया, अनुसुइया सारड़ा, सेल्फ़ी फ़ोटो बूथ की निर्देशिका कल्पना बाहेती, नीरा लड्ढा, डांडिया घुमर नृत्य की निर्देशिका सुनिता मुन्दडा, पुजा मालानी आदि का विशेष योगदान रहा।

व्यक्ति केवल "दो" ही "परिस्थितियों" में सही हो सकता है, पहला जब..वह लोगों के "मन" की कर रहा हो.. दूसरा जब वह दूसरों से अधिक शक्तिशाली हो.!

नवरात्री पर्व का आयोजन

कोयंबटूर। गत 21 अक्टूबर को सुरभि महिला मंडल के अंतर्गत नवरात्रि पर्व माहेश्वरी भवन कोयंबटूर में मनाया गया। कार्यक्रम में 50 से ज्यादा महिला मंडल सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। महिलाओं के लिए डांडिया, गरबा और विभिन्न खेल के साथ स्वादिष्ट भोजन का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की मेज़बानी मंडल की सदस्या आशा भुराड़िया, रेनू भुराड़िया, मृणाली राठी, सीमा सोमानी, शोभा सुदा, लता राठी, सुनीता मंत्री, संतोष मंत्री आदि सदस्यों ने की।

पितृमोक्ष अमावस्या पर अन्नदान

कोयंबटूर। सुरभि महिला मंडल कोयंबटूर के तत्वावधान में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी गत 14 अक्टूबर को सर्व पितृमोक्ष अमावस्या के उपलक्ष्य में अन्नदान का आयोजन 'भारत अन्ने इल्लम' विराकरालम गांव के वृद्धाश्रम में किया गया। इसमें मण्डल की सदस्याओं द्वारा 70 जरूरतमंद वृद्धों को भोजन करवाया गया। कार्यक्रम में सुरभि महिला मंडल अध्यक्षा सुनिता भट्टड़, सचिव भावना साबू सदस्य निर्मला भुराड़िया, श्वेता बागड़ी और सीमा सोमानी आदि उपस्थित थे।

कन्या भोज का हुआ आयोजन

बैंगलोर। माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा नवरात्रि के अवसर पर कन्या भोजन का आयोजन किया गया। माँ जगदम्बा की पूजा अध्यक्षा श्वेता बियाणी, सचिव निर्मला काँकाणी, कृष्ण डागा, कान्ता काबरा, कार्यकारिणी सदस्य गायत्री मालपानी, सुलोचना जाजू, चन्द्रकला राठी, नम्रता मिलक, पूजा मालानी, बिन्दु गिलड़ा आदि ने की। माहेश्वरी भवन के आस पास के स्कूल की 108 कन्याओं को भोजन करवा कर उनको टिफिन बैग, पानी की बोतल, शरबत, मिठाई उपहार आदि दिये गये।

सामाजिक कार्यक्रम का आयोजन

कोयंबटूर। माहेश्वरी युवा परिषद ने कोयंबटूर स्थित सांईबाबा मंदिर के अंतर्गत संचालित शासकीय प्राथमिक विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को पढ़ाई की सामग्री का वितरण किया गया। सामग्री में पेन, पेंसिल, कॉपी इत्यादी शामिल थे। इसके अलावा सभी विद्यार्थियों को एक समय का भोजन भी उपलब्ध करवाया गया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों ने माहेश्वरी युवा परिषद की इस पहल का स्वागत किया। कार्यक्रम के आयोजन में कोयंबटूर माहेश्वरी सभा सहसचिव राजेन्द्र भट्टड़, सहकोषाध्यक्ष हरिश भूराड़िया, युवा परिषद के अध्यक्ष पुरुषोत्तम भुराड़िया, सदस्य शिव मंत्री, सुरेश भट्ट, कुशल केला, यादव सोमानी, अभिषेक बागड़ी, गिरीराज भोमरा, सुमिरन मालू एवं गिरीराज चांडक आदि का सहयोग एवं अनुदान रहा।

With Best Compliments from

SHREE BALAJI OIL MILLS

Off. "Ganpati Prasas" Marwadi lane, Erandol Dist. jalgaon
Phone : 91+2588-44452, 44453, Fax : 91+2588-44055
Factory: Mahswad Road, Erandol. Dist. Jalgaon, 425109
Phone : Fact 91+2588-44451, 54, 55

नये संसद भवन में देखी राज्यसभा की कार्यवाही

जयपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन की करीब 60 महिलाओं ने गत 21 सितम्बर को दिल्ली में नए संसद भवन में राज्यसभा की कार्यवाही देखी। कार्यक्रम भारतीय जनता पार्टी की जयपुर जिला महिला मोर्चे की अध्यक्ष अनुराधा कचोलिया के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। सभी महिलाओं को राज्यसभा में महिला आरक्षण विधेयक पर हुई बहस एवं वोटिंग की प्रक्रिया प्रत्यक्ष देख कर अच्छी अनुभूति हुई। उनके समक्ष ही महिला आरक्षण विधेयक पारित हुआ। जिला मंत्री सविता राठी, जिला अध्यक्ष उमा सोमानी, जिला संरक्षक उमा परवाल, जिला तथा क्षेत्रीय संगठनों के विभिन्न पदाधिकारी एवं सदस्य इस भ्रमण में उपस्थित रहे।

मंत्री बने एफजेसीसीआई के पुनः अध्यक्ष

रांची। झारखंड माहेश्वरी समाज के सदस्य किशोर मंत्री सत्र 2023-24 के लिए संस्था फेडरेशन ऑफ झारखण्ड चेम्बर ऑफ कॉमर्स के सर्वोच्च पद अध्यक्ष के लिए सर्वसम्मति से पुनः निर्वाचित हुए हैं। रांची समाज के ही राहुल साबू उपाध्यक्ष एवं परेश गट्टानी सचिव पद के लिए भारी बहुमतों से निर्वाचित हुए है। रांची समाज के ही राम बांगड़ का निर्वाचन 21 सदस्यीय कार्यकारिणी के लिए हुआ है। छोटा नागपुर क्षेत्रीय उपाध्यक्ष पद पर गुमला निवासी अमित माहेश्वरी के नाम का सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ।

प्रशासनिक सेवा के लिये दिया मार्गदर्शन

सूरत। शिक्षा के क्षेत्र में पहचान बना चुकी सूरत माहेश्वरी समाज की टीम आशाएं ने मिशन आईएएस 100 की जिम्मेदारी संभाली है। समाज के प्रतिभावान युवक-युवतियों को भारतीय प्रशासनिक सेवा से जोड़ने के उद्देश्य से टीम आशाएं ने रियूनियन समारोह का आयोजन कर मिशन आईएएस 100 के बारे में विस्तार से जानकारी दी। समिति में अध्यक्ष श्रीकांत बालदी (आईएएस), प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर किशनप्रसाद दरक व टीम आशाएं के मुख्य सूत्रधार सूरत के कृष्णकांत भट्टड को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस मौके पर महासभा के कार्यसमिति सदस्य मुरली सोमानी, गुजरात प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्याम भंडारी, सूरत ज़िला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष पवन बजाज, सचिव अतिन बाहेती, महिला संगठन की सचिव प्रतिभा मोलासरिया, युवा संगठन के अध्यक्ष दीपक मालानी व सचिव अभिषेक चांडक, माहेश्वरी विद्यापीठ के अध्यक्ष महेन्द्र झवंर, माहेश्वरी शिक्षण संस्थान के कुंजबिहारी तोतला आदि मौजूद रहे।

चांडक बने प्रदेश उपाध्यक्ष

नागपुर। गत 17 सितम्बर को नागपुर में हुए विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के आगामी सत्र 2023-26 की चुनाव प्रक्रिया में चंद्रपुर से नितेश चांडक का उपाध्यक्ष पद पर निर्विरोध चयन किया गया। इस उपलब्धि के लिए चंद्रपुर जिला माहेश्वरी युवा संगठन, माहेश्वरी युवक मंडल, माहेश्वरी महिला मंडल, माहेश्वरी सेवा समिति से हर्ष व्यक्त किया गया।

वायुसेना दिवस मनाया

जयपुर। गत 08 अक्टूबर को पाथेय भवन, सेक्टर-4, मालवीय नगर में 91वें वायुसेना दिवस को भूतपूर्व वायुयोद्धाओं ने हर्षोल्लास से मनाया। आयोजनकर्ता सार्जेंट लालचन्द कचोलिया के सानिध्य में मुख्य अतिथि ग्रुप कैप्टन विनय भारद्वाज, स्टेशन कमाण्डर, जलमहल जयपुर एवं अतिथि माहेश्वरी गर्ल्स पी. जी. महाविद्यालय के मानद सचिव दिनेश कुमार मोदानी ने वायुसेना दिवस में भाग लिया।

प्रतिमा हुई नवीन संसद के कार्यक्रम में शामिल

वारंगल। कुमारी प्रतिमा बल्दवा सुपुत्री डॉ. कविता-डॉ. विष्णु कुमार बल्दवा को 02 अक्टूबर को नूतन संसद भवन में होने वाले प्रसिद्ध नेताओं के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ है। केंद्र सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय के अन्तर्गत नेहरू युवा केंद्र संगठन द्वारा देश के सभी राज्यों में चयन के लिए भाषण प्रतियोगिता करवाई गयी। तेलांगना राज्य में प्रथम स्थान हासिल करके प्रतिमा बल्दवा ने यह अवसर प्राप्त किया है। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सारी सुविधाएं केंद्र सरकार द्वारा प्रदान की गई।

गणपति विसर्जन में दी सेवा

सूरत। अनंत चतुर्दशी के मौके पर शहर में माहेश्वरी समाज की संस्था श्री माहेश्वरी नवयुवक मंडल द्वारा रिंग रोड से गुजरने वाले गणेश भक्तों के लिये पुराने आर टी ओ के सामने शीतल जल व शरबत सेवा की व्यवस्था सुबह 10 बजे से सायं 6 बजे तक की गई। मंडल के सचिव भगवती प्रसाद गग्गड़ ने बताया कि यह विशेष सेवा कार्य मंडल हर साल करता है। इस खास़ सेवा के लिये सूरत ज़िला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष पवन बजाज, फोस्टा के डायरेक्टर जगदीश कोठारी, मंडल के अध्यक्ष पवन चांडक व समस्त कार्यकारिणी सदस्यों के साथ मंडल के पूर्व अध्यक्ष व समाज के गणमान्य सदस्यों ने भी सराहनीय सेवा दी।

बालिकाओं को बताऐ सुरक्षा के गुर

उज्जैन। श्री माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत महिला मंडल द्वारा नवरात्रि के पवन पर्व पर इनडाइट पब्लिक स्कूल में जाकर लगभग 100 बालिकाओं को गुड टच, बेड टच, मोबाईल का अत्यधिक उपयोग, अनजानों से सुरक्षित रहने, आत्मविश्वास को बढ़ाने के टिप्स शेयर किए गये। प्रशासनिक सुविधा के हेल्प लाइन नम्बर भी नोट कराये गये। सभी कन्याओं को पेन-डायरी एवं फलाहारी चिवड़े के पैकेट उपहार में दिए गये। कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष ऊषा सोडाणी विशेष रूप से उपस्थित थीं। मंडल अध्यक्ष संगीता भूतड़ा, सचिव संध्या हेड़ा, शांताजी मंडोवरा, वंदना जेथलिया आदि ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

बलराम जाजू को वरिष्ठ नागरिक सम्मान

तराना (उज्जैन)। शासकीय महाविद्यालय तराना (जिला उज्जैन) में अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस के उपलक्ष्य में तराना के समाजसेवी बलराम जाजू को महाविद्यालय द्वारा वरिष्ठ नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. सुमाना मेहेंदले ने की। मुख्य अतिथि श्री जाजू थे, जिनका महाविद्यालय द्वारा शाल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर वरिष्ठ नागरिक सम्मान से सम्मानित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय स्टॉफ में प्रो. दिनेश कौल, प्रो. कविता कौल, विजय कुमार, डॉ. देवेंद्र कुमार मिश्रा, अरविन्द नागर, डॉ. अंकित अग्रवाल, डॉ. आर एस शिंदे, मनीषा भरंग आदि उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि

नहीं रहे नेत्र व देहदानी

श्री नरसिंहदास मंत्री

नागपुर। मृत्यु शाश्वत सत्य है। हर व्यक्ति की मृत्यु निश्चित है लेकिन, कुछ बिरले व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो मृत्यु को महोत्सव बना जाते हैं और समाज के लिए अनुकरणीय संदेश का उदाहरण छोड़ जाते है।

नागपुर के रहने वाले श्री नरसिंहदास श्री गोवर्धनदास मंत्री इनमें से ही एक थे, जो एक संकल्प को अमरत्व दे गए। देहदान का उनका संकल्प उनके निधन के बाद पूरा किया गया। शहर के सीताबर्डी निवासी 83 वर्षीय श्री नरसिंहदास मंत्री ने चिकित्सा विज्ञान में शोध कार्य को लेकर मेयो हॉस्पिटल में देहदान का संकल्प लिया था। श्री मंत्री का गत 25 अक्टूबर बुधवार को निधन हो गया था। उनके देहदान के संकल्प को पूरा करने उनका पूरा परिवार एवं माहेश्वरी समाज एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति नरसिंहदासजी की पार्थिव देह को लेकर मेयो हॉस्पिटल पहुंचे और उसे हॉस्पिटल प्रशासन के सुपुर्द किया। चिकित्सकों ने बताया कि ऐसे बिरले लोगों की इस क्षेत्र में आवश्यकता है, जो यह सोच रखते है कि मरने के बाद भी हमारा शरीर देश की युवा पीढ़ी के काम आये। उनका यह निर्णय यहां के लोगों को इस तरह के कार्य के लिए प्रेरित करेगा। अपने जीवन काल में भी स्व. श्री मंत्री ने पीड़ित मानवता के मसीहा बन कर अनेक धार्मिक कार्यो को अंजाम दिया। इसकी शुरुआत उन्होंने लगभग 23 वर्ष पूर्व की थी और उनकी यह सेवा उम्र के 83 वें पड़ाव पर भी अनवरत जारी थी। वे 60 बिस्तरों वाले राधाकृपा अतिथिगृह, निःशुल्क चिकित्सालय एवं मरीजों को मूलभूत वैद्यकीय सेवाएं उपलब्ध करने जैसी मानवीय सेवा जीवन के अंत समय तक करते रहे। व्यापार में सफलता का परचम लहराने के पश्चात श्री मंत्री ने समाज के प्रति अपना दायित्व निभाने का ऐसा रास्ता चुना जो नागपुर ही नहीं बल्कि मध्यभारत में समाज के लिए एक मिसाल बन गया है।

श्रीमती दमयंतीदेवी लोया

उज्जैन। वरिष्ठ समाजसेवी स्व. श्री हीरालाल लोया (जगोटी वाले) की धर्मपत्नी एवं मप्र माहेश्वरी युवा संगठन के पूर्व वरिष्ठ पदाधिकारी व समाजसेवी दिलीप लोया, मनोहरलाल लोया, अशोक लोया तथा राजेन्द्र लोया की माता श्रीमती दमयंतीदेवी लोया का देहावसान गत 22 अक्टूबर को हो गया। श्रीमती दमयंती देवी लोया अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की थी। आपके प्रभु मिलन पर समाज के कई गणमान्यजनों तथा माहेश्वरी समाज जगोटी ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

माहेश्वरी सभा कार्यालय का शुभारम्भ

जयपुर। दशहरे के पावन पर्व पर जिला माहेश्वरी सभा के कार्यालय का शुभारम्भ अमर विजय टावर, होटल मानसिंह के निकट, संसारचन्द्र रोड जयपुर में हुआ। अतिथि के रूप में प्रदेशाध्यक्ष जुगलकिशोर सोमाणी व महासभा कार्यसमिति सदस्य कैलाश सोनी उपस्थित थे। जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र बजाज, मंत्री गोविन्द परवाल, अर्थमंत्री राधेश्याम काबरा, संगठन मंत्री राजेन्द्र गट्टाणी, रामअवतार आगीवाल, शिवरतन मोहता, सत्यनारायण मोदानी, बृजेशकुमार लड्ढा, कन्हैयालाल छापरवाल, रामकिशन सोनी आदि इस अवसर पर उपस्थित थे। रमेशकुमार भैया के सान्निध्य में पूरा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कैलाश सोनी द्वारा अपना कार्यालय निःशुल्क प्रदान करने पर उनका अभिनंदन किया गया।

व्हीलचेयर का किया वितरण

फरीदाबाद। माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट ने 2 अक्टूबर 2023 को माहेश्वरी मंडल के 40 वें स्थापना दिवस, गांधी जयंती एवं स्वच्छता दिवस के उपलक्ष्य में व्हीलचेयर के वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि सीमा त्रिखा (विधायिका बडखल क्षेत्र फरीदाबाद), गोपाल शर्मा (जिला अध्यक्ष, भाजपा) और विमल खंडेलवाल जिला संयोजक व्यवसायिक प्रकोष्ठ भाजपा थे। कार्यक्रम का संचालन माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के सचिव श्रवण मीमाणी द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 30 दिव्यांग लोगों को व्हीलचेयर का वितरण किया गया। अंत में आए हुए सभी लोगों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था थी। इस कार्यक्रम में सुशील नेवर, नारायण झंवर, रमेश झंवर, पवन सोमानी, महावीर बिहानी, दुर्गा प्रसाद मूंधड़ा, देवेश चाण्डक, प्रमोद माहेश्वरी ममता भट्टड़, नीतू भूतड़ा, युवा मोहित झंवर, हितेश बिहानी सहित समाज के कई प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

सत्य को सिद्ध करने के लिए किसी से भी ज़िद करने की जरूरत नहीं है..
क्योंकि सत्य सही समय पर स्वयं सिद्ध हो जाता है..

बुजुर्गों के लिए चिकित्सा शिविर

चाईबासा। गत 13 अक्टूबर को माहेश्वरी सभा चाईबासा द्वारा पितृ पक्ष के अवसर पर वृद्धा आश्रम झिंकपानी में हंसा फाउंडेशन एवम संजीव नेत्रालय के सहयोग से मेडिकल कैंप एवम नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। मेडिकल जांच के बाद सभी 25 वृद्धों को दवाई दी गई। 25 में से 18 वृद्धों में मोतियाबिंद पाया गया, जिनका मोतियाबिंद ऑपरेशन होगा। सभी को भोजन करवा कर एक नित्य जरूरत की किट जिसमें नहाने व कपड़े धोने का साबुन, आंवला एवं सरसों तेल, वेसलिन, कंघी, तोलिया आदि देकर उनका आशीर्वाद लिया गया। उक्त जानकारी अशोक साबू व रश्मि कोठारी ने दी।

पुर्वा कंसलटन्सी

नवनीत लाखोटीया

• आकोला रोड, आकोट
• सातव चौक आकोला
☎ (07258) 222572, मो. 9822225172

HKL INDUSTRIES LLP

With Best Compliments

Excellence in Manufacturing

FRHC COPPER WIRE RODS

We Sell

Copper Wire Rod

Copper-Strips

Bunched-Copper-Wire

We Buy

All kinds of copper scraps

(Only importers are welcomed)

Manufacturers of Continuous Casting Copper Rod 8mm & 12 mm
Excellent quality of ccr 8 & 12 mm

Bharat Heda
97230 25555
98250 36895

Mitul Khatod
70460 59444
97277 59444

hklindustriesllp@gmail.com

Survey No. 99, Village : Pahadiya
Ta. Mahemdavad,
Haldarvas Nenpur Road,
Dist. Kheda-387110. Gujarat INDIA

www.hklindustries.com

शुभ दीपावली

दीपावली पर सभी माहेश्वरी बन्धुओं को

हार्दिक शुभकामनाएं

ममता मोदानी

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन

◆

निदेशक

संगम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस

सनातन धर्म में हर देवी-देवता की उत्पत्ति का उल्लेख मिलता है। ऐसे में जब हम महालक्ष्मी का पूजन करने जा रहे हैं, तो यह विचार आना स्वाभाविक है कि आखिर महालक्ष्मी की उत्पत्ति हुई तो कैसे? आईये पुराणों के आयने में खोजते हैं, इन्हीं प्रश्नों के उत्तर।

■ टीम SMT

ऐसे हुई महालक्ष्मी की उत्पत्ति

विष्णु पुराण अनुसार समुद्र से उत्पन्न

लक्ष्मी को धन और ऐश्वर्य की देवी माना गया है। देवता के रूप में लक्ष्मी का उल्लेख प्राचीन वैदिक साहित्य में नहीं है। पुराणों के अनुसार समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे। लक्ष्मी इनमें से एक हैं, जिन्हें विष्णु ने ग्रहण किया था। लक्ष्मी कभी विष्णु से अलग नहीं होती। उन्होंने स्वयं विष्णु को पति के रूप में चुना है और वे सदा उनके वक्षस्थल में निवास करती हैं। प्राचीन साहित्य में उल्लेख है कि विष्णु भक्तों को धन प्रदान करते हैं। धन और ऐश्वर्य से संबंध होने के कारण विष्णु समृद्धि की देवी लक्ष्मी के स्वामी हैं। 'विष्णु पुराण' में कहा गया है कि लक्ष्मी समृद्धि हैं और उसको धारण करने वाले विष्णु श्रीपति हैं। लक्ष्मी स्वर्ण वर्ण की, चार भुजाओं वाली, सदैव युवती एवं सुंदरी के रूप में विद्यमान रहने वाली देवी हैं जो धन की अधिष्ठात्री हैं। समृद्धि, संपत्ति, आयु, आरोग्य, परिवार, धन-धान्य की विपुलता आदि की प्राप्ति के लिए लक्ष्मी की उपासना की जाती है। पुराणों में वर्णित लक्ष्मी कमल पर विराजित हैं, उनके हाथों में कमल है और वे कमल-पुष्पों की माला धारण करती हैं। ऐरावत हाथी द्वारा स्वर्णपात्र में लाए गये जल से वे स्नान करती हैं। महाभारत में लक्ष्मी के 'विष्णुपत्नी लक्ष्मी' एवं 'राजलक्ष्मी' दो रूप बताये गये हैं। इनमें से पहली लक्ष्मी हमेशा विष्णु के साथ रहती हैं और राजलक्ष्मी पराक्रमी व्यक्ति का वरण करती हैं।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार श्रीकृष्ण से पुनः उत्पन्न

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में लक्ष्मी की पुनः उत्पत्ति की रोचक कथा प्राप्त होती है। सृष्टि के पहले रासमण्डल में श्रीकृष्ण के वाम भाग से लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई थी। ये देवी परम सुन्दरी थीं। उत्पन्न होते ही ये दो रूपों में विभक्त हो गयी। ये दोनों मूर्तियाँ अवस्था, आकार, भूषण, सुंदरता आदि सभी बातों में समान थी। एक मूर्ति का नाम लक्ष्मी और दूसरी मूर्ति का नाम राधा है। लक्ष्मी वाम (बायें) भाग से उत्पन्न हुई और राधिका दक्षिण (दाहिने) भाग से। इन दोनों मूर्तियों की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने अपने दाहिने भाग से दो भुजाओं वाला तथा बायें भाग से चार भुजा वाला रूप धारण किया। द्विभुज मूर्ति राधाकांत और चतुर्भुज मूर्ति नारायण हुई। श्रीकृष्ण तो राधा तथा गोप-गोपियों को लेकर वहीं रह गये और नारायण लक्ष्मी को लेकर वैकुंठ चले गए। वैकुंठ में ही उनका रहना निश्चित हुआ। लक्ष्मी नारायण को अपने वश में करके सब रमणियों में प्रधान हो गईं। ये देवी लक्ष्मी, स्वर्ग में इंद्र की संपत्तिरूपिणी स्वर्ग लक्ष्मी के रूप में, पाताल और मृत्युलोक के राजाओं के पास राजलक्ष्मी के रूप में, गृहस्थों के यहां गृहलक्ष्मी के रूप में, चंद्र, सूर्य, अलंकार, रत्न, फल, महारानी, अन्न, वस्त्र, देव प्रतिमा, मंगल, घर, हीरा, चंदन, नूतन, मेघ आदि में शोभारूप से विद्यमान रहती हैं। देवी लक्ष्मी ही शोभा का आधार है। जिस स्थान पर लक्ष्मी नहीं है, वह स्थान शोभा शून्य है।

कहां रहता है लक्ष्मी का निवास

▸▸ लक्ष्मी-प्रह्लाद संवाद : असुरराज प्रह्लाद ने एक ब्राह्मण को अपना शील प्रदान किया, जिस कारण क्रमानुसार उसका तेज, धर्म, सत्य, व्रत, बल एवम अंत में उसकी लक्ष्मी उसे छोड़कर चले गए। तत्पश्चात लक्ष्मी ने प्रह्लाद को साक्षात दर्शन देकर कहा 'तेज, धर्म, सत्य, व्रत, बल एवं शील आदि मानवीय गुणों में मेरा निवास रहता है, जिनमें शील अथवा चरित्र मुझे सबसे अधिक प्रिय है। इसी कारण श्रेष्ठ आचरण करने वाले पुरुष के यहां रहना मैं सबसे अधिक पसंद करती हूं।'

▸▸ लक्ष्मी-इंद्र संवाद : असुरराज प्रह्लाद के समान उसके पौत्र बलि का भी लक्ष्मी ने त्याग किया। बलि का त्याग करने के कारणों को इंद्र से बताते हुए लक्ष्मी ने कहा, 'पृथ्वी के सारे निवास स्थानों में से भूमि (वित्त), जल (तीर्थादि), अग्नि (यज्ञादि) एवं विद्या (ज्ञान) ये चार स्थान मुझे अत्यधिक प्रिय हैं।' लक्ष्मी ने आगे कहा, 'चोरी, वासना, अपवित्रता एवं अशांति से मैं अत्यधिक घृणा करती हूं, जिनके कारण क्रमशः भूमि, जल, अग्नि एवं विद्या में स्थित प्रिय निवास स्थानों का मैं त्याग कर देती हूं।'' दैत्यराज बलि ने उच्छिष्ट भक्षण (जूठा भोजन) किया एवं देव ब्राह्मणों का विरोध किया, इसी कारण अत्यंत प्रिय होते हुए भी लक्ष्मी ने उसका त्याग कर दिया।

▸▸ लक्ष्मी-रुक्मिणी संवाद : लक्ष्मी के निवास स्थान से संबंधित एक प्रश्न युधिष्ठिर ने भीष्म से पूछा था जिसका जवाब देते समय भीष्म ने लक्ष्मी एवं रुक्मिणी के बीच हुए एक संवाद की जानकारी युधिष्ठिर को दी। इस कथा के अनुसार लक्ष्मी ने रुक्मिणी से कहा था-'सृष्टि के सारे लोगों में प्रगल्भ, भाषण कुशल, दक्ष, निरलस (जो आलसी न हो), आस्तिक, अक्रोधन, कृतज्ञ, जितेंद्रिय, वृद्धजनों की सेवा करने वाले (वृद्ध सेवक), सत्यनिष्ठ, शांत स्वभाव वाले एवं सदाचारी लोग मुझे सबसे अधिक प्रिय हैं, जिनके यहां रहना मुझे प्रिय है। निर्लज्ज, कलहप्रिय, निंद्राप्रिय, मलिन, अशांत एवं असावधान लोगों का मैं अतीव तिरस्कार करती हूं, जिस कारण ऐसे लोगों का मैं त्याग करती हूं। महाभारत में अन्यत्र प्राप्त उल्लेख के अनुसार गायों एवं गोबर में भी लक्ष्मी का निवास रहता है।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के अनुसार अपना राज्य छिन जाने पर इन्द्र ने लक्ष्मी की उपासना कर अपनी खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त की थी। ब्रह्मा ने इन्द्र को लक्ष्मी की उपासना के लिए द्वादशाक्षर मन्त्र का उपदेश दिया था। वह मन्त्र है '' श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा''। इस मन्त्र का विधिपूर्वक दस लाख जप करने से इन्द्र को सिद्धि प्राप्त हुई। कुबेर ने भी इस मन्त्र द्वारा समस्त ऐश्वर्य को प्राप्त किया।

कैसे करें शास्त्रोक्त विधि से दीपोत्सव पर पूजन

धनतेरस का पूजन

सर्वप्रथम नहाकर साफ वस्त्र धारण करें। भगवान धन्वन्तरि की मूर्ति या चित्र साफ स्थान पर स्थापित करें तथा पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाएं। उसके बाद भगवान धनवन्तरि का आह्वान निम्न मंत्र से करें-

सत्यं च येन निरत रोग विधूतं अन्वेषित च सविधिं आरोग्यमस्य ।
गूढ़ निगूढ़ औषध्यरूपम्, धन्वन्तरि च सततं प्रणमामि नित्यं।

इसके पश्चात् पूजन स्थल पर आसन देने की भावना से चावल चढ़ाएं। इसके बाद आचमन के लिए जल छोड़ें। भगवान धन्वन्तरि के चित्र पर गंध, अबीर, गुलाल, पुष्प आदि चढ़ाए। चांदी के पात्र में खीर का नैवैद्य लगाएं। (अगर चांदी का पात्र उपलब्ध न हो तो अन्य पात्र में भी नैवैद्य लगा सकते हैं।) तत्पश्चात् पुनः आचमन के लिए जल छोड़े। मुख शुद्धि के लिए पान, लौंग, सुपारी चढ़ाएं। भगवान धन्वन्तरि को अर्पित रोगनाश की कामना के लिए इस मंत्र का जाप करें।

सही विधि-विधान से की गई पूजा ही सही फल देती है। यही कारण है कि हर देव पूजा की हमारे शास्त्रों में विधि दी गई है। तो आईये जाने इस दीपोत्सव की बेला में महालक्ष्मी पूजन सहित सभी दीप पर्व पर पूजन की शास्त्रोक्त विधि।

''ऊँ रं रूद्र रोगनाशाय धन्वन्तर्य फट्॥''

इसी दिन इसके बाद भगवान धनवन्तरि को श्रीफल व दक्षिणा चढ़ाए। पूजन के अंत में कर्पूर आरती करें।

घर के मुख्य द्वार पर यमराज के निमित्त दीपदान करना चाहिए। रात्रि को एक दीपक में तेल, एक कौड़ी, काजल, रौली, चाँवल, गुड़, फल, फूल व मीठे सहित दीपक जलाकर यमराज का पूजन करना चाहिए। दीप प्रज्जवलित करते समय निम्न मंत्र से प्रार्थना करनी चाहिए।

''मृत्युना पाशहस्तेन कालेन भार्यया सह।
त्योदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतामित॥

इस मंत्र के साथ पूजन करने से अच्छे फल प्राप्त होते हैं।''

नरक चतुर्दशी का पूजन

कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी कहते हैं। इस दिन यमराज की पूजा व व्रत का विधान है। इस दिन शरीर पर तिल के तेल से मालिश करके सूर्योदय के पूर्व

स्नान के दौरान अपामार्ग (एक प्रकार का पौधा) को शरीर पर स्पर्श करना चाहिए। अपामार्ग को निम्न मंत्र पढ़कर मस्तक पर घुमाना चाहिए-

सितालोष्ठसमायुक्त सकण्टकदलान्वितम।
हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाण: पुन: पुन: ॥

स्नान करने के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर तिलक लगाकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके यम से परिवार के सुख की कामना करें। इसके साथ ही प्रदोषकाल में चार बत्तियों वाला दीपक जलाकर दक्षिण दिशा में रखें और उसका निम्न मंत्र से पूजन करें-

श्लोक- ''दीपश्चतुर्दश्यां नरक प्रीतये मया।
***चतुर्वर्ति समायुक्त वर्पानतये* (लिंग पुराण)**

अर्थात्- आज चतुर्दशी के दिन नरक के अभिमानी देवता की प्रसन्नता तथा सर्व पापों के नाशों के लिये मैं 4 बत्तियों वाला चौमुखा दीप अर्पित करता/करती हूं।

दीपावली पर महालक्ष्मी का पूजन

कार्तिक कृष्ण अमावस्या (दीपावली) को भगवती श्री महालक्ष्मी एवं भगवान गणेश की नूतन (नई) प्रतिमाओं का प्रतिष्ठापूर्वक विशेष पूजन किया जाता है। पूजन के लिये किसी चौकी अथवा कपड़े के पवित्र आसन पर गणेश जी के दाहिने भाग में माता महालक्ष्मी की मूर्ति को स्थापित करें। पूजन के दिन घर को स्वच्छ कर पूजा स्थान को भी पवित्र कर लें एवं स्वयं भी पवित्र होकर श्रद्धा भक्ति पूर्वक सायंकाल महालक्ष्मी व भगवान श्रीगणेश का पूजन करें। श्री महालक्ष्मी जी की मूर्ति के पास ही पवित्र पात्र में केसर युक्त चंदन से अष्टदल कमल बनाकर उस पर द्रव्य लक्ष्मी (रूपयों) को भी स्थापित करें तथा एक साथ ही दोनों की पूजा करें। सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख हो आचमन, पवित्री धारण, मार्जन, प्राणायाम कर अपने ऊपर तथा पूजा-सामग्री पर निम्न मंत्र पढ़कर जल छिड़के-

ऊँ अपवित्र: पवित्रों वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ॥''

उसके बाद जल अक्षत लेकर पूजन का निम्न मंत्र से संकल्प करें-

ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: अद्य मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे पुण्याममावस्यायां तिथौ (वार का उच्चारण) वासरे... गोत्रोत्पन्नः (गोत्र का उच्चारण करें) / गुप्तोहंश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तिकामनया ज्ञाताज्ञातकायिकवाचिकमानसिक सकलपापानिवृत्तिपूर्वकं स्थिरलक्ष्मीप्राप्तये श्री महालक्ष्मीप्रीयर्थं महालक्ष्मीपूजनं कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये। तदङ्त्वेन गौश्रीगणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।

ऐसा कहकर संकल्प का जल छोड़ दे।

प्रतिष्ठा- पूजन से पूर्व नूतन प्रतिमा की निम्न रीति से प्राण प्रतिष्ठा करें। बाएं हाथ मे चावल लेकर निम्नलिखित मंत्रों को पढ़ते हुए दाहिने हाथ से उन चावलों को प्रतिमा पर छोड़ते जाए-

ऊँ मना जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पितिर्यज्ञमिमं तनात्वरिष्टं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।
ऊँ अस्ये प्राणा: प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च। अस्ये देवत्वपमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

पूजन - सर्वप्रथम भगवान गणेश का पूजन करें इसके बाद कलश तथा षोडशमातृ का (सोलह देवियों का) पूजन करें। तत्पश्चात प्रधान पूजा में मंत्रों द्वारा भगवती महालक्ष्मी का षोडशोपचार पूजन करें-

'ऊँ महालक्ष्म्यै नम:' इस नाम मंत्र से भी उपचारों द्वारा पूजा की जा सकती है।

प्रार्थना- विधिपूर्वक श्री महालक्ष्मी का पूजन करने के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

सुरासरेंद्रादिकिरीटमौक्तिकै-युक्तं सदा यक्तव पादवपंकजम् ।
परावरं पातु वरं सुमंगल ामामि भक्तयाखिलकामसिद्धये ॥
भवानि त्वं महालक्ष्मी: सर्वकामप्रदायिनी ॥
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोस्तु ते।
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्ननां सा में भूयात् त्वदर्चनात् ॥
ऊँ महालक्ष्म्यै नम: प्रार्थनापूर्वक समस्कारान् समर्पयामि।

प्रार्थना करते हुए नमस्कार करें।

समर्पण- पूजन के अंत में-

'कृतोनानेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम् न मम।'

यह वाक्य उच्चारण कर समस्त पूजन कर्म भगवती महालक्ष्मी को समर्पित करें तथा जल गिराएं।

देहली विनायक पूजन -व्यापारिक प्रतिष्ठादि में दीवारों पर ''ऊँ श्रीगणेशाय नमः'' स्वस्तिक चिन्ह, शुभ-लाभ आदि मांगलिक एवं कल्याण शब्द सिन्दूर से लिखे जाते हैं। इन्हीं शब्दों पर ऊँ देहलीविनायकाय नमः इस नाममंत्र द्वारा गंध -पुष्पादि से पूजन करें।

श्रीमहाकाली (दवात) पूजन-स्याहीयुक्त दवात को भगवती महालक्ष्मी के सामने पुष्प तथा चावल के ऊपर रखकर उस पर सिंदूर से स्वस्तिक बना दें तथा मौली लपेट दें।

''ऊँ श्रीमहाकाल्यै नमः'' मंत्र से गंध-पुष्पादि पंचोपचारों से या षोडशोपचारों से दवात तथा भगवती महाकाली का पूजन करें और अंत में इस प्रकार प्रार्थनापूर्वक उन्हें प्रणाम करें-

कालिके त्वं जगन्मातर्मसिरूपेण वर्तस।
उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये ॥
या कालिका रोगहरा सुवन्द्या भक्तै: समस्तैव्यवहारदक्षै:।
जनर्जानानां भयहारिणी च सा लोकमाता मम सौख्यादास्तु॥

लेखनी पूजन-लेखनी (कलम) पर मौली बांधकर सामने रख लें और-

लेखनी निर्मित पूर्व ब्रम्हाणा परमेष्ठिना।
लोकांना च हितर्थय तस्मात्तां पूज्याम्यहम्॥
ऊँ लेखनीस्थायै देव्यै नम:

इस नाममंत्र द्वारा गंध, पुष्प, चावल आदि से पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करें-

शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्युयाद्यात:।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव॥

बहीखाता पूजन -बही, बसना तथा थैली में रोली या केसरयुक्त चंदन से स्वस्तिक का चिन्ह बनाएं एवं थैली में पांच हल्दी की गांठ, धनिया, कलमगट्टा, अक्षत, दुर्वा और द्रव्य रखकर सरस्वती का पूजन करें। सर्वप्रथम सरस्वती का ध्यान इस प्रकार करें-

''या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युशंकरप्रभृतिभिदेवै: सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती नि:शेषजाड्यापहा॥
ऊँ वीणापुस्तकधारिण्यै श्रीसरस्वत्यै नम: ''

इस नाममंत्र से गंधादि उपचारों द्वारा पूजन करें-

कुबेर पूजन -तिजोरी अथवा रूपए रखे जाने वाले संदूक आदि को स्वस्तिकादि से अलंकृत कर उसमें निधिपति कुबेर का आव्हान करें-

''आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरू।
कोशं वद्राय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ॥''

आह्वान के बाद ऊँ कुबेराय नमः नाममंत्र से गंध,पुष्प आदि से पूजन कर अंत में इस प्रकार प्रार्थना करें -

धनदाय नमस्तुभ्य निधिपद्माधिपाय च।
भगवान् त्वप्रसादेन धनधान्यादिसम्पदः॥

इस प्रकार प्रार्थनाकर पूर्व पूजित हल्दी, धनिया, कमलगट्टा, द्रव्य,दूर्वादि से युक्त थैली तिजोरी में रखें।

तुला (तराजू) पूजन- सिंदूर से तराजू पर स्वस्तिक बना लें। मौली लपेटकर तुला देवता का इस प्रकार ध्यान करें-

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता॥
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना॥
ध्यान के बाद ''ऊँ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः''

इस मंत्र से गधाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन करें।

दीपमालिका (दीपक) पूजन- किसी पात्र में ग्यारह, इक्कीस या उससे अधिक दीपकों को प्रज्वलित कर महालक्ष्मी के समीप रखकर उस दीपज्योति का ''ऊँ दीपावल्यै नमः'' इस नाममंत्र से गंधादि उपचारों द्वारा पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करें-

त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चनद्रो विद्यदर्निश्च तारकाः।
सर्वेषा ज्योतिषां ज्योतिर्दीपाल्यै नमो नमः॥

दीपमालाओं का पूजन कर संतरा, ईख, धान, इत्यादि पदार्थ चढ़ाए। धान का लावा (खील), गणेश, महालक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओं को भी अर्पित करें। अंत में अन्य सभी दीपकों को प्रज्वलित करें।

आरती- परम्परागत तरीके से आरती करें।

मंत्र पुष्पांजलि- आरती पश्चात् दोनों हाथों में कमल आदि के पुष्प लेकर हाथ जोड़े और निम्न मंत्र का पाठ करें-

ऊँ या श्री स्वयः सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥
ऊँ श्री महालक्ष्मै नमः मंत्रपुष्पांजलि समर्पयामि।

विसर्जन- पूजन के अंत मे अक्षत लेकर श्रीगणेश एवं महालक्ष्मी की नूतन प्रतिमा को छोड़कर अन्य सभी आवाहित प्रतिष्ठित एवं पूजित देवताओं को अक्षत छोड़ते हुए निम्न मंत्र से विसर्जित करें-

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम।
इष्टकामसमृयर्थं पुनरागमनाय च।

दीपावली पर्व पूजन मुहूर्त

बही खाता पूजन- कार्तिक कृष्ण अष्टमी रविवार तदनुसार 05 नवम्बर 2023, को सूर्योदय प्रातः 6/34 से 10/29 तक रवि पुष्य योग तथा दोपहर 1/36 तक शुभ योग में खाताबही का मुहूर्त प्रशस्त है।

धनतेरस पूजन- आयुर्वेद के प्रणेता भगवान् धन्वन्तरीं जी का प्राकट्य दिवस (धन त्रयोदशी) तथा यमराज के निमित्त दीपदान कार्तिक कृष्ण द्वादशी/त्रयोदशी शुक्रवार तदनुसार 10 नवम्बर को प्रदोषकाल में प्रशस्त है।

नरक चतुर्दशी पूजन

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी रविवार दिनांक 12 नवम्बर 2023 को ब्रह्म मुहूर्त काल में रूप चतुर्दशी मनाई जायेगी। इस काल में अभ्यङ्ग तैल उबटन लगाकर स्नान कर अपने ईष्टदेव, ग्राम देव, स्थान देव का दर्शन कर दीपावली पर्व का प्रारम्भ करना शुभकारी और आरोग्य को देने वाला होता है, इस प्रकार से कर्म करने पर नर्कवास का योग समाप्त हो जाता है, ऐसी जनश्रुति है।

दीपावली पूजन

12 नवम्बर को कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी काल दिन के 2/45 तक होने तथा अमावस्या 13 नवम्बर को दोपहर 2/57 तक होने के कारण दीपावली पर्व तथा महालक्ष्मी पूजन 12 नवम्बर रविवार को ही मनाया जायेगा। दीपावली तथा महालक्ष्मी पूजन के शुद्ध काल नीचे दिये गए हैं

श्रेष्ठ लग्न मुहूर्त - मध्यम समय अनुसार वृषभ लग्न सायं 05/52 से 07/50 तक श्रेष्ठकाल है, दिनभर के अन्य शुद्ध, मध्यम लग्न काल में वृश्चिक लग्न प्रातः 7/01/9/16 तक, कुंभ लग्न दोपहर 1/09 से 2/42 तक, सिंह लग्न रात्रि 12/19 से मध्य रात्रि पर्यन्त 2/32 तक श्रेष्ठ है।

होरा मुहूर्त - 12 नवम्बर रविवार को राहूकाल सायं 4/19 से 5/42 तक त्याज्य है। श्रेष्ठ ग्रहों की शुभ होरा शुक्र प्रातः 7/35 से 8/30 तक बुध 8/30 से 9/25 तक चन्द्र होरा 9/25 से 10/20 तक, गुरु होरा दिन के 11/16 से 12/11 तक शुक्र दोपहर 02/01 से 2/57 तक बुध 2/57 से 3/52 तक चन्द्र 3/57 से 4/19 तक बाद में राहुकाल है।

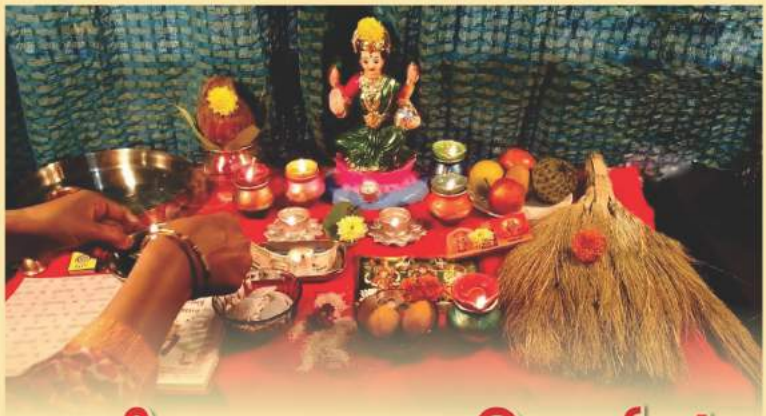

लक्ष्मी पूजन का अनिवार्य अंग

पंचांग

दीपावली महापर्व पर महालक्ष्मी पूजन में कालगणना के आधार ''पंचांग'' को भी अनिवार्य रूप से शामिल किया जाता है। इसके पीछे कारण है, कर्म को सही समय पर अर्थात् उचित काल अनुसार करना। इससे ही सहज सफलता प्राप्त होती है। इसके लिये जरूरी है कि आप पंचांग देख सकें और उसे समझ सकें।

काल के पांच अंग

पंचांग शब्द का शाब्दिक अर्थ है, पांच अंगों की जानकारी। काल गणना में पांचों प्रमुख अंगों की जानकारी जो दे उसे ही पंचांग कहते हैं। इनमें प्रमुख पांच अंग हैं, वर्ष, माह, वार, तिथि और नक्षत्र। वास्तव में देखा जाए तो स्थूल रूप से पंचांग की शुरुआत इन्हीं के लिए हुई थी, जो कलांतर में सतत शोध से और भी गहन व सूक्ष्म होता चला गया। वर्तमान में पंचांग ज्योतिष का आधार स्तंभ है, जिसके आधार पर ही कोई ज्योतिषी फलकथन करता है।

शहर-देश अनुसार काल शोधन

सर्वप्रथम तो हम पंचांग से संबंधित शहर की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसमें उस शहर में संबंधित दिन का दिनमान, सूर्योदय-सूर्योस्त का समय, चंद्रोदय-चंद्रास्त तथा खगोलिय जानकारी के लिए संबंधित शहर के अक्षांश व देशांश शामिल होते हैं। वर्तमान में पंचांग में देश के सभी प्रमुख शहरों के साथ ही लगभग संपूर्ण विश्व के प्रमुख शहरों के देशान्तर भी दिए होते हैं। इनके द्वारा कुछ गणना कर हम इन सभी शहरों के संबंध में भी यह सभी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

काल के पांच अंगों की जानकारी

पंचांगों में ईसवी वर्ष के अनुसार दिनांकों के साथ लगभग उनके सामने ही उस दिनांक की तिथि भी अंकित होती है। उसके आगे संबंधित तिथि की समाप्ति का समय ज्योतिषिय कालगणना के अनुसार घटी-पल में और उसके आगे वर्तमान कालगणना पद्धति के अनुसार घंटा-मिनट में भी दिया होता है। गत दिनांक की तिथि समाप्ति से उक्त दिनांक की तिथि समाप्ति तिथि तक संबंधित तिथि रहती है। अतः हम शुद्धतापूर्वक किसी भी दिनांक को किसी भी समय रहने वाली तिथि को ज्ञात कर सकते हैं। इस सारिणी में संबंधित दिनांक के वार के साथ ही नक्षत्र, योग, दिनमान, सूर्योदय-सूर्योस्त आदि की जानकारी भी दी जाती है। वर्तमान में इसी सारणी में संबंधित दिवस के व्रत-त्योहार की जानकारी भी अंकित की जाती है।

विशिष्ट ज्योतिषीय जानकारियाँ

कहा जाता है कि सही समय पर किसी कार्य के शुभारंभ का अर्थ ही उसकी आधी सफलता है। इसीलिये हमारी संस्कृति में हर शुभ कार्य के लिए मुहूर्त देखा जाता है। यह कार्य सामान्यतः ज्योतिषाचार्य ही करते आये हैं, लेकिन अच्छे व सरल पंचांगों से आम व्यक्ति भी आसानी से मुहूर्त ज्ञात कर सकता है। जैसे उदाहरणार्थ उज्जैन से प्रकाशित श्री विक्रमादित्य पंचांग में प्रारम्भ के पृष्ठों में विभिन्न कार्यों के लिये मुहूर्त शुद्ध कर दिए होते हैं। अतः पाठक इनके द्वारा अपने इच्छित कार्य के लिये मुहूर्त को देख सकते हैं। इतना ही नहीं विवाह जैसे गहन अवसरों के लिये भी सामान्यतः घर बैठे मुहूर्त देखा जा सकता है। इसके लिये वर-वधू की चंद्र राशि के अनुसार विवाह मुहुर्त शुद्धता पूर्वक दिये जाते हैं। इनमें अतिश्रेष्ठ, पूजा योग्य (अर्थात् मध्यम) व नेष्ट (त्याज्य) का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। चौघड़िये भी सूर्योदय के अनुसार स्पष्ट किये जा सकते हैं।

विशिष्ट ज्योतिषिय जानकारियाँ

ज्योतिष के विशेषज्ञ तिथि आदि की गणना वाले पृष्ठ के नीचे दी गई ग्रह स्थिति और लग्न मान से गणना कर जन्म कुंडली आदि निर्माण जैसे समस्त ज्योतिषिय कार्य कर सकते हैं। वैसे इसके लिये ज्योतिष की कम से कम सामान्य जानकारी होना आवश्यक है। फिर भी इसमें सूर्योदयकालीन समस्त ग्रह स्पष्ट इस तरह किए जाते हैं कि इनसे बड़ी आसानी से संबंधित समय व शहर के अनुसार ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं। वर्तमान में पंचांग अत्यंत वृहद रूप ले चुके हैं। इनमें सूर्य व चंद्र ग्रहण की स्पष्ट स्थिति उसके ग्रहणकाल के अनुसार तो दी ही जाती है, साथ ही देश आदि के लिये वर्षफल भी स्पष्ट होते हैं। इनके साथ जातक का सामान्य राशिफल भी स्पष्ट होता है। और भी कई महत्वपूर्ण जानकारियां पंचांगकर्ता शामिल करते हैं, जैसे 'श्री विक्रमादित्य पंचांग' में अनिष्टकारी ग्रहों की शांति के उपाय, कुंडली मिलान, स्वप्न विचार, वैधव्य, विष कन्या तथा मांगलिक योग, व्यापार भविष्य आदि कई जानकारियां दी गई हैं।

दीप पर्व पर सभी समाज बन्धुओं को
हार्दिक शुभकामनाएँ

ओमप्रकाश कुंजी लाल भैय्या

Govt. Contractor & Building Material Supply

Ph. : 0721-2660046
Mo. : 9822200631

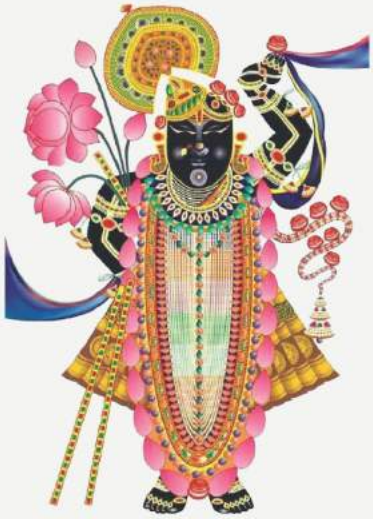

श्रीनाथ दाल मिल

A-35, Near Aanand Marbles, MIDC, Amravati
Ph. : 0721-2520013, 2520699

पियुष ओ. भैय्या
9822731007

अखिलेश अ.भैय्या
9823231276

माता महालक्ष्मी की पूजा में श्रीयंत्र अनिवार्य रूप से शामिल होता है। कहा जाता है कि कोई भी पूजा तंत्र, मंत्र और यंत्र तीनों से ही पूर्ण होती है। तो ऐसे में माता महालक्ष्मी के ''श्री यंत्र'' के बिना उनकी पूजा इच्छित फलदायी हो यह कैसे सम्भव हो सकता?

टीम SMT

लक्ष्मी आगमन का द्वार

श्री यंत्र

कहा गया है कि यंत्र के बिना देव पूजा फलहीन है। इसका कारण है, इनका महत्व। किसी भी देवपूजा में ''तंत्र'' पूजन विधि है और ''मंत्र'' पूजन के सिद्धांत हैं तो ''यंत्र'' उसे सम्पन्न करने के उपकरण। अतः मूल उद्देश्य तो उपकरण द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति ही है। यही कारण है कि ''श्री यंत्र'' के बिना लक्ष्मी पूजन को भी फलवती नहीं माना गया है। यदि किसी कारणवश दीपावली की लक्ष्मी पूजा में यह शामिल न हो सका हो तो इसे बाद में अवश्य शामिल कर लें।

ऊर्जा का भंडार अर्थात् यंत्र

यंत्र शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के यम शब्द से हुई है जिसका अर्थ है सिद्ध, सहयोग और नियंत्रण। अतः यंत्र ज्ञान के एकाग्रचित्त क्षेत्र हैं जो एक साथ मिलकर विभिन्न ऊर्जाओं को नियंत्रित कर हैं। यंत्र सामान्य रूप से बिंदुओं, त्रिकोण, वृत्त, मूल, मंत्र व वर्ग के संयोग होते हैं जिनका अपना-अपना सांकेतिक महत्व होता है। इनमें बिन्दुओं का सर्वाधिक महत्व होता है जो केंन्द्र में प्रदर्शित एक बिंदु द्वारा प्रस्तुत होता है। ये वह बिंदु हैं जहाँ गतिज ऊर्जा उत्पन्न होती है और केंन्द्र में वापस समाने से पहले बाहरी घेरे की ओर पहुँचती है। असीम ऊर्जा व ज्ञान के भंडार का संकेत पूरे ब्रह्मांड का बीज है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यह सहस्त्रार चक्र पर स्थित हजारों पंखुड़ियों वाला कमल है, जो परम ज्ञान का स्थान है। त्रिकोण, रचनात्मक ऊर्जा का संकेत है। त्रिकोण की तीन रेखाओं में प्रकृति का केंन्द्र समाहित होता है। नीचे की ओर प्वाइंटेड त्रिकोण सृजन के शक्ति भाग को प्रदर्शित करता है और ऊपर की ओर यह त्रिकोण शिव भाग को प्रदर्शित करता है।

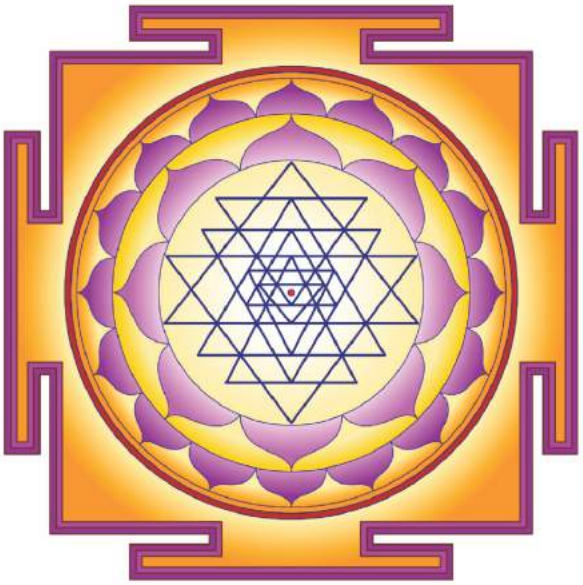

संपूर्ण जीवन का द्योतक

शरीर के सात प्रमुख चक्रों से संबद्ध चक्र कमल द्वारा प्रदर्शित किए गए हैं। पंखुड़ियाँ परिधि की ओर होती हैं। पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्माजी का जन्म कमल से ही हुआ माना जाता है। अतः यंत्र में यह शक्ति को प्रदर्शित करता है जो ब्रह्मांड की तह खोलता है। विद्वतजन कहते हैं, 'बाहरी पंखुड़ियाँ आध्यात्मिक जागरूकता की बाहरी परत को प्रदर्शित करती है।' यह स्वास्थ्य, संतुलित जीवन आदि को भी प्रदर्शित करता है क्योंकि कमल खिलता कीचड़ में है लेकिन रहता पानी के ऊपर ही है। यह इस बात का संकेत है कि सृष्टि से प्रभावित हुए बिना इसमें कैसे जिया जाए। मूल मंत्र व यंत्र में संचित दैवीय ऊर्जा के अनादि कंपन के दृश्य व श्रव्य रूप को यह प्रदर्शित करता है। मंत्रों की विशुद्ध स्थिति खोजकर्ता को दैवीय ऊर्जा के इस कंपन को अपने शरीर के साथ अनुभव करने में सहायता करती है। योगियों का भी मानना है कि यंत्र और मानवीय शरीर में विशुद्ध अनुरूपता आवश्यक है। अतः यह सभी उद्देश्य ब्रह्मांड की ऊर्जा के विभिन्न पक्ष को प्रदर्शित करते हैं। एक अन्य स्तर पर यंत्र और उनमें संचित ऊर्जा तांत्रिक साहित्य में वर्णित देवी-देवताओं को प्रदर्शित करते हैं। तांत्रिक मान्यताओं को यंत्र का दृश्यप्रधान वर्णन माना जाता है। प्राचीन तांत्रिक साहित्य कौलावी निर्णय कहता है कि यंत्र के बिना देव पूजा फलहीन है।

यंत्रों का राजा है श्री यंत्र

श्री यंत्र को यंत्रो का राजा माना जाता है, जिसे शोधशि यंत्र भी कहा जाता है। यह हर रूप में सौहार्द्र उत्पन्न करता है। इसके अंदर वह क्षमता है कि यह यम अर्थात् मृत्यु से भी आपकी रक्षा कर सकता है। इसे अक्सर ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग भी माना जाता है। प्रचलित दंतकथा के अनुसार यह यंत्र एक कश्मीरी पंडित के घर से उत्पन्न हुआ, जिसका नाम सिद्ध रैना था। कहा जाता है कि सत्रहवीं सदी में भगवान शिव ने उनको भी यंत्र प्रदान किया था। यह यंत्र कुंडली में सूर्य के स्थान के आधार पर सोना, चाँदी या तांबे पर बनाए जाते हैं। पूजा में एक सप्ताह का समय लगता है और इसे मात्र सोमवार के दिन ही स्थापित/पहना जाना चाहिए।

With Best Compliments from :

SACCHIDANAND L MALANI

Engineers & Contractors

MURTIZAPUR-444107, District : Akola-Maharashtra
Mobile : 9422162213 / 8600047213
E-mail ID : office.slmalani@gmail.com

Specialist in Asphalting of Roads, Bridges & Earthen Dams

॥ श्री ॥
ज्ञानम् विज्ञान सहितम् ।

स्थापना वर्ष 1969

श्री ब्रजलाल बियाणी शिक्षा समिति

सुवर्ण महोत्सवी वर्ष

सत्र 2012-13 से भाषिक (हिंदी) अल्पसंख्यांक दर्जा प्राप्त
बियाणी शैक्षणिक परिसर, शिलांगण रोड, अमरावती - 444605

ओमप्रकाश लड्ढा (अध्यक्ष)

सुनिल कुमार गोयनका (सचिव)

देवदत्त शर्मा - उपाध्यक्ष | ओमप्रकाश नावंदर - सहसचिव | गोपाल राठी - कोषाध्यक्ष | विनोदकुमार सामरा - उपाध्यक्ष

- कार्यकारिणी समिति सदस्य -

प्रकल्प राठी ■ ॲड. राजेश राठी ■ हनुमानदास मानका ■ अशोक अग्रवाल ■ डॉ. राजिव बियाणी ■ संजयकुमार ककरानिया
दीपक कासट ■ आदित्यराज गगलानी ■ कैलाश नावंदर ■ राजकुमार अग्रवाल ■ प्रशांत राठी

संचालित संस्थाएं

ब्रजलाल बियाणी विज्ञान महाविद्यालय, (वरीष्ठ महाविद्यालय)	(बी.एस्सी., बीसीए, बीबीए., बी.कॉम., एम.कॉम., बी. व्होक., एम. व्होक.) एम.एस्सी. केमेस्ट्री, बॉटनी, इलेक्ट्रॉनिक्स, गणित, कॉम्प्युटर सायंस
ब्रजलाल बियाणी विज्ञान महाविद्यालय (कनिष्ठ महाविद्यालय)	(विज्ञान शाखा एवम् वाणिज्य शाखा)
नारायणदास लड्ढा हायस्कुल, अमरावती.	(सेमी अंग्रेजी)
सावित्रीदेवी बियाणी विद्या मंदिर, अमरावती.	(हिंदी प्राथमिक शाला)
रघुनाथमल कोचर बालक मंदिर, अमरावती.	(हिंदी बालमंदिर)
भंवरीलाल सामरा इंग्लिश हायस्कुल, अमरावती.	(अंग्रेजी माध्यम)
मोहनलाल सामरा मॉन्टेसरी एवम् प्राथमिक शाला, अमरावती.	(अंग्रेजी माध्यम)

सदस्यों द्वारा प्रायोजित मेधावी छात्रों को पारितोषिक

राहु-केतु बहुत ही आकस्मिक रुप से ऐसे ऐसे शुभाशुभ फल प्रदान करने की क्षमता रखते हैं जिनके विषय में पूर्व अनुमान लगाना लगभग असंभव है। कुछ परिस्थतियों में इनके द्वारा शुभ फल भी प्रदान किये जाते हैं। योग कारक राहु राजनीति में प्रवेश दिलाता है, धार्मिक यात्रायें व पुण्य कार्य करवाता है। केतु अशुभ होते हुए भी राहु जैसा क्रूर व निष्ठुर नहीं है, अन्य शुभ योग हों तो यह जातक को आध्यात्मवाद की ओर ले जाता है। अशुभ केतु समस्त बने हुए काम ऐन मौके पर बिगाड़ कर परिस्थितियां पलट देता है। तो आईये जानें 30 अक्टूबर को राशि परिवर्तन करने वाले राहु केतु क्या लाऐंगे परिवर्तन?

डॉ. महेश शर्मा
जयपुर

क्या अकल्पनीय करेंगे?

राहु-केतु

मानव जीवन की घटनाओं को अत्यधिक प्रभावित करने वाले तमो ग्रह राहु-केतु 30 अक्टूबर, 2023 को सायं 4.38 बजे वक्र गति से राशि परिवर्तित कर मेष-तुला से क्रमशः मीन-कन्या राशि में प्रवेश करेंगे। राहु-केतु सदैव एक साथ ही वक्र गति से राशि परिवर्तन करते हैं और एक राशि में लगभग 18 माह तक रहते हैं। गोचर फलित के अनुसार राहु-केतु आपकी राशि से 3, 6, 10 एवं 11वें स्थान पर होते हैं तो शुभ फल देते हैं। अन्य स्थानों में इनका भ्रमण कष्टकारी होता है। अतः मीन राशिगत राहु वृष, मिथुन, तुला तथा मकर राशि के लोगों को शुभफल प्रदान करेगा, वहीं कन्या राशिगत केतु, वृश्चिक, धनु, मेष तथा कर्क राशि में जन्मे व्यक्तियों के लिए शुभकारक होगा। ध्यान रखें गोचर में राहु-केतु द्वारा प्रदत्त शुभाशुभ फल इनके द्वारा जन्मकुंडली में निर्मित योगा-योग एवं इनकी दशा-अन्तर्दशा के अधीन होते हैं। राहु-केतु के राशि परिवर्तन के कारण इनके शुभाशुभ फलों से प्रायः सभी राशियां प्रभावित होंगी। इनके मंत्र जप, दान, गजेंद्र मोक्ष, गणेश एवं अपराजिता स्त्रोत के पाठ करने से इनकी अशुभता में कमी आकर शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

राहु-केतु का स्वरूप

▸▸ पौराणिक दृष्टिकोण - राहु एवं केतु आकाशीय पिंड नहीं हैं। अतः इन्हें छाया (आभासीय) ग्रह के रुप में माना जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन के पश्चात् जिस समय मोहिनी रुपी भगवान विष्णु देवताओं को अमृत पिला रहे थे उसी समय दैत्य सेनापति राहु देवता का वेश धारण कर उनके बीच आ बैठा और उसने भी अमृत पान कर लिया। परन्तु सूर्य और चन्द्रमा ने उसे पहचान कर भेद खोल दिया। भगवान विष्णु ने उसी समय सुदर्शन चक्र से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। अमृत पान के कारण वह अमर हो गया था और ब्रह्माजी ने इसी कारण उसे ग्रह बना दिया। उसका सिर राहु और धड़ केतु के नाम से विख्यात हुआ। राहु की माता का नाम सिंहिका, पिता विप्रचिति तथा नाना हिरण्यकश्यप थे।

▸▸ वैज्ञानिक दृष्टिकोण - वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ये चन्द्रमा एवं क्रांतिवृत्य के कटाव बिन्दु हैं। अपने क्रांतिवृत्य या परिक्रमा पथ पर पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण करता हुआ चन्द्रमा पृथ्वी के भचक्र को एक बिन्दू पर काटकर ऊपर की ओर चला जाता है। इसे ''नार्थ नोड आफ द मून'' कहा जाता है, इसी कटाव बिन्दु को राहु नाम दिया गया है। पाश्चात्य ज्योतिष में इसे 'ड्रेगंस हेड' कहते हैं। केतु की स्थिति इस कटाव बिन्दु के ठीक सामने 180 अंश पर मानी गई है, इसलिए केतु की स्थिति राहु से सप्तम भाव में दर्शायी जाती है। इसे 'ड्रेगंस टेल' कहा जाता है।

▸▸ राहु केतु की प्रकृति - मोहजनित दुःखों का कारक राहु अपनी प्रवृति से एक अशुभ, नीच, दुष्ट तथा पाप ग्रह है। यह आकस्मिक दुर्घटना, विपदा, भ्रष्टाचार, निंदित कार्य, अनाचार, चोरी, पाप, कठोर संभाषण, जुआ, विश्वासघात, छल, षड़यंत्र आदि का कारक है। विष, ढोंग, पाखंड, भ्रम, काम, विकृति, नशा, जेल, आत्मघात, वैधव्य तथा विदेश यात्रा का विचार भी राहु से किया जाता है। योग कारक राहु राजनीति में प्रवेश दिलाता है तथा धार्मिक यात्राओं का कारक है। रोग ज्योतिष के अनुसार राहु चित्तभ्रम, भय, डिप्रेशन, फ्रस्टेशन, सनक, अस्थिरोग, फ्रेक्चर, वायुरोग, दुर्घटना, चर्मरोग, स्नायुरोग, हृदयाघात, आत्महत्या आदि देता है। राहु संशय उत्पन्न करके रोग को ठीक-ठीक डाइग्नोस नही होने देता है।

मोक्ष की मर्मज्ञता का कारक केतु अशुभ होते हुए भी राहु जैसा क्रूर व निष्ठुर नहीं है। अन्य शुभ योग हों तो यह जातक को आध्यात्मवाद की ओर ले जाता है। इसे तमस, ध्वजा और शिखि के नाम से भी जाना जाता है। घटनाओं में आकस्मिक परिवर्तन केतु का प्रधान गुण है। एक ओर यह जातक को निम्नतम कृत्य कराकर घृणित व निंदित बनाता है तो दूसरी ओर ज्ञान की खोज में उन्मुख करके आध्यात्मिकता की ओर झुकाव बनाता है। केतु शारीरिक व मानसिक मलिनता, बंधन, दरिद्रता, आकस्मिक संकट, भूख, कष्ट, तंत्र, जादू-टोना, अपमृत्यु, कपट, मोक्ष आदि का कारक है। राहु की भांति केतु भी पृथकता का प्रभाव देने वाला ग्रह है। रोग ज्योतिष के अनुसार चेचक, पेटदर्द, माइग्रेन, साइटिका, खुजली, फोडे-फुंसी, कुष्ठ, चर्मरोग, गलना, सडना, विषदंश आदि केतु द्वारा देखा जाता है। अशुभ केतु समस्त बने हुए काम ऐन मौके पर बिगाड़ कर परिस्थितियां पलट देता है।

जन्मकुंडली में राहु-केतु का प्रभाव

फलित ज्योतिष के अनुसार राहु-केतु बहुत ही आकस्मिक रुप से ऐसे-ऐसे शुभाशुभ फल प्रदान करने की क्षमता रखते हैं जिनके विषय में पूर्व अनुमान लगाना लगभग असंभव है। कुछ परिस्थितिवश इनके द्वारा शुभफल भी प्रदान किये जाते हैं। राहु-केतु का भौतिक स्वरुप नहीं होने के कारण ये छाया ग्रह हैं। अतः जन्मकुंडली के जिस भाव में बैठेंगे उसके अनुरुप तथा जिस ग्रह के साथ हों वह ग्रह जिस भाव का स्वामी होगा उसके अनुरुप फल प्रदान करते हैं। इसी कारण राहु-केतु केन्द्र या त्रिकोण में केन्द्रेश और त्रिकोणेश (1,4,5,9,10) के साथ बैठेंगे तो योगकारक होंगे। उदाहरणार्थ कर्क लग्न में पंचम या दशम भाव में मंगल के साथ राहु या केतु बैठे हों तो श्रेष्ठ फल प्रदान करेंगे। इसी प्रकार त्रिषडायश (3,6,11) के साथ बैठने पर अशुभकारक तथा 2, 7, 8, 12वें भाव के स्वामी के साथ मारक हो जायेंगे। ज्योर्तिग्रह सूर्य-चन्द्रमा से राहु-केतु की प्रबल शत्रुता होने के कारण जन्मकुंडली में इनका संबंध अनिष्टकारी होता है। इस संबंध से ये सूर्य, चन्द्रमा के शुभत्व को नष्ट करके जीवन में निराशा पैदा करते हैं। राहु-केतु से जब सूर्य कष्टग्रस्त होता है तब व्यक्ति प्रत्यक्षरुप से अपने न्यायसंगत अधिकार से वंचित रहता है।

अनिष्ट राहु की शांति

राहु की प्रिय वस्तुओं गेंहूं, उड़द, सप्तधान्य, अभ्रक, नारियल, काला पुष्प, चांदी का सर्प, गोमेद आदि का दक्षिणा सहित दान करें। राहु के बीज मंत्र 'ऐं ह्रीं राहवे नमः' के 18000 जप रात्रिकाल में करें तथा दशमांश का हवन करें। गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना शुभ फलदायक रहेगा। राहु गायत्री मंत्र।। 'ऊँ शिरोरुपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नोः राहुः प्रचोदयात।। का जप करें।

केतु के अरिष्ट की शांति

केतु की वस्तुओं तिल, तेल, काली मिर्च, लोहा, सप्त धान्य, नारियल, लहसुनिया रत्न, धूम्र रंग के वस्त्र, कंबल, छाता, कस्तूरी आदि का दान करें, कुष्ठाश्रम में बर्तन व भोजन दान करें। केतु बीज मंत्र 'ह्रीं ऐं केतवे नमः' के 17000 जप रात्रिकाल में करें तथा दशमांश का हवन करें। गणेश स्त्रोत एवं अपराजिता स्त्रोत का पाठ करना लाभकारी रहेगा। केतु शांति के लिए गायत्री मंत्र।। ''ऊँ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नोः केतुः प्रचोदयात''।। का जप करें।

राशिगत प्रभाव

- **मेष-** राहु के व्यय भाव में आने से शत्रु रोग से कष्ट एवं आर्थिक घाटा होगा, परन्तु छटे स्थान का केतु शत्रु पीड़ा से निजात दिलाएगा परन्तु शारीरिक कष्ट तथा व्यय वृद्धिकारक रहेगा।
- **वृष-** व्यापार में उन्नति तथा लाभ, दानपुण्य कर्म, किन्तु संतति को कष्टकारक। पंचम केतु के प्रभाव से अचानक कार्यसिद्धि तथा मंगल कार्य योजनायें बनेंगी।
- **मिथुन-** दशमस्थ राहु के कारण कार्य-व्यवसाय में सफलता तथा राज्य सत्ता से लाभ होगा। वहीं चतुर्थ स्थान का केतु शत्रुभय, माता पिता को कष्टकारक, रोग तथा स्त्री एवं संतान के लिए हानिकारक रहेगा।
- **कर्क-** समस्यायों का समाधान, मान सम्मान, भूमि, भवन, वाहन का लाभ। केतु भी कार्य विस्तार, नौकरी में प्रगति तथा सुख, यश देगा।
- **सिंह-** आपकी राशि से आठवां राहु कष्टकारक तथा आर्थिक तंगी देगा। द्वितीयस्थ केतु के प्रभावस्वरुप अकारण ही अपवाद, गृहक्लेश, आय में कमी तथा शत्रु से हानि हो सकती है।
- **कन्या-** स्थान परिवर्तन, भूमि भवन का लाभ, मान-सम्मान की प्राप्ति के योग बनेगें। केतु के प्रभाव से खर्च में बढोतरी, स्वास्थ्य शिथिलिता, शत्रुत्व में वृद्धि।
- **तुला-** कार्य सफलता, धन लाभ, पदमान की वृद्धि। बारहवें केतु के प्रभाव से समाज विरोधी कार्य तथा मनोमालिन्यता में वृद्धि के योग।
- **वृश्चिक-** पंचम राहु से अचानक कार्यसिद्धि, नैतिक प्रेम संबंधों में मधुरता, मंगल कार्य होगें। ग्यारहवें केतु के कारण कार्यव्यवसाय में लाभ तथा आरोग्य प्राप्ति संभव।
- **धनु-** राहु के चौथे स्थान पर आने से मानसिक अशांति, भाग्यावरोध, रोग प्रकोप, शत्रुवृद्धि तथा सिर, नेत्र में कष्ट का कारण बनेगा। वहीं दशम स्थान का केतु राज्य व्यवसाय में लाभकारी बनेगा।
- **मकर-** आय के स्त्रोत बढेंगे, वाद-विवाद में विजय, भूमि भवन का लाभ। केतु के भाग्य स्थान से गुजरने के कारण धार्मिक कार्य तथा यात्राऐं होंगी, आर्थिक समस्यायों का समाधान होकर लाभ मिलेगा।
- **कुंभ-** द्वितीयस्थ राहु के कारण घरेलू अशांति, कार्य व्यापार में हानि तथा स्वास्थ्य बाधा बढ़ सकती है। आठवां केतु शारीरिक कष्ट तथा व्यय वृद्धि के योग पैदा करेगा।
- **मीन-** लग्नस्थ राहु के शुभ परिवर्तन से आर्थिक पक्ष में सुधार, धार्मिक कार्य होंगे। सप्तमस्थ केतु से नौकरी व्यापार में लाभ, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति तथा मंगल कार्य के योग बनेंगे।

With Best Compliments

Girish Punglia

VAASTU®

MARBLE & GRANITES PVT. LTD.

Opp. Ayyappa Swamy Temple, Karmanghat
gpungila@gmail.com Tel : 93919 30777
www.vaastumarble.com

Think of Floor..... Think of VAASTU MARBLE.....

राकेश तुरन्त रसोई में गए। कुछ क्षण बाद एक खाली परात, लकड़ी का पट्टा एवं बर्तन में पानी लेकर ड्रांइगरूम में आए। पट्टे के ऊपर उन्होंने परात को रखा। अपने हाथों से यमदेव के पाँवों को परात में रखकर बर्तन के पानी से पखारा। फिर उन पाँवों को अपने हाथों में लेकर नेपकीन से पौंछा। यमदेव ने पाँव नीचे रखे ही थे कि राकेश परात के पानी को चरणामृत की तरह पी गए।

नैहर

हरिप्रकाश राठी
जोधपुर
94141-32483

चढ़ते चैत्र की आज दूसरी रात थी।

क्षितिज के उस पार चन्द्रदेव अभी आधे ही उठे होंगे कि कुमुदिनियों ने झूम कर उनका स्वागत किया। चन्द्र दर्शन से उनका हर पत्ता ऐसे खिल उठा जैसे किसी कवि को दाद मिलने पर उसका अंग-अंग खिल उठता है। सभी कुमुदिनियाँ अपने सहस्त्रों कर फैलाकर मानो चन्द्रदेव से अनुनय विनय कर रही थी, आज रात हमारे आगोश में आओगे ना! कुमुद भला इस प्रलाप को कैसे सहते। नजदीक आकर बोले, 'बावरियों! जरा पानी में नीचे झाँक कर देखो, उन्हें तो हमने कैद कर लिया है। अगर सारी रात हमारे पास रहोगी तो सुबह उन्हें छोड़ देंगे। 'सहमी हुई कुमुदिनियाँ चुपचाप कुमुदों के समीप आ गई। चकवे ने चकवी को, चकोर ने चकोरनी को एवं मोर ने मोरनी को इसी गुह्य रहस्य को समझाया। देखते-देखते आसमान के पश्चिमी छोर पर केसर, कुंकुम एवं रोली बिखर गई। पेड़, पौधे, जंगली घास एवं वनस्पतियाँ पवन के मंद-मंद झोंकों के साथ झूमने लगे।

ऊपर उठे हुए चन्द्रदेव अब ऐसे शोभायमान हो रहे थे मानो कोई बलिष्ठ युवक कंधे पर कलश लिये अमृतदान करने निकला हो।

माघ में बिल्ली, कार्तिक में कुतिया एवं चैत्र में लुगाई का अलग आलम होता है।

टेबल लैम्प की मद्धम रोशनी में प्रभा, राकेश से न जाने क्या अनर्गल प्रलाप कर रही थी। सर्वथा अनर्गल।

'शादी किये सात वर्ष हो गए। पहले तो प्रशंसाओं के पुल बाँध देते थे, अब क्या हो गया? आज खुलकर मेरी तारीफ करो।' कहते-कहते उसने राकेश का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

जिसके दस सिर हो वह औरतों से बहस कर सकता है।

डबल बेड पर नाइटसूट पहने राकेश ने विस्मय से प्रभा का चेहरा देखा जैसे किसी कठिन पहेली का उत्तर ढूँढ़ रहे हों। प्रभा की इन बातों को सुनकर कौन कहेगा कि वे दोनों यूनिवर्सिटी में प्राध्यापक हैं।

उसके सिर में अंगुलियाँ घुमाते हुए राकेश कुछ देर चुप रहे पर जब प्रभा ने अपनी बात दोहराई तो बोले, 'अच्छा हुआ विधाता ने पहले आदमी बनाया अन्यथा पहले स्त्री सृजन कर लेता तो वहीं उलझ जाता।'

'विधाता चतुर है, पहले रफ बनाया फिर फेयर।' प्रभा ने नीचे के दाँतों से ऊपर का होठ काटते हुए उत्तर दिया।

'यानी पहले कच्चा माल फिर फिनिशिड्।' राकेश ने बात को बढ़ाया।

'यस इनडीड।'

दोनों एक साथ ठठाकर हँस पड़े। मद्धम रोशनी में राकेश ने प्रभा की दूध-सी धवल मुस्कराहट के दर्शन किये। सचमुच प्रभा आज भी उतनी ही खूबसूरत थी। खुले लम्बे केश, गहरी आँखें, तीखा नाक एवं सुघड़ बत्तीसी मानो स्वर्ग से अप्सरा उतरी हो।

'तुम्हारे गुणों की अब मैं क्या प्रशंसा करूं, तुम तो गुणातीत हो।' राकेश अब तक उसके पाँवों को अपने पाँवपाश में ले चुके थे।

'बोर मत करो! आज तो बस मेरे रूप की तारीफ करो। वैसे ही जैसे तुमने सुहागरात के दिन की थी।'

'क्या की थी?'

'तुम्हें याद नहीं!' वह लजाकर बोली।

'अब वो बातें अच्छी थोड़ी लगती हैं।'

'कहा न करो!' प्रभा की तीखी आँखों के आदेश को भला राकेश कैसे ठुकराते।

'प्रभा! तुम्हारे कहने से नहीं पर आज भी पूरी ईमानदारी से कहता हूँ कि तुम सचमुच बहुत सुन्दर हो। अब मैं तुम्हारे खुले केशों की तुलना काले बादलों से नहीं करूँगा, न ही तुम्हारे रूप की चाँद से, अब तो तुम इन उपमाओं को भी लजाने लगी हो।'

प्रभा बौरायी-सी राकेश से लिपट पड़ी।

अनंग मौन पदचाप से कमरे में प्रविष्ट हो चुके थे। देव आएँगे तो उनकी आराधना भी होगी।

कमरे की चारों दीवारों ने अपनी सहस्त्रों मिचमिच आँखों से इस दृश्य को देखा। खिड़की से झाँकती चाँदनी भी इस अभिसार का गवाह बनी पर उसके पेट में बात पचे तो। चुगलखोर चाँदनी ने हरामखोर हवाओं को यह बात बता दी। हवाओं ने यह बात पेड़, पौधों, पशु-पक्षियों सभी में फैला दी। जड़-चेतन सभी को कहने का अवसर मिल गया, 'अरे यह विवेकसम्मत मनुष्य जब इतना कामातुर है तो हम जड़ मूर्ख भला कैसे नियंत्रण करें।' पलभर में सम्पूर्ण प्रकृति ही मानो व्यभिचारिणी बन गई।

अनंग अपना अभिष्ट सिद्ध कर चुपचाप सरक लिये।

देव आराधना के बाद मियाँ बीबी फिर बतियाने लगे। कमोबश अब दोनों का मुँह आमने-सामने नहीं था। दोनों निढाल पड़े थे।

तन दे मन ले।

सही समय जानकर प्रभा ने मतलब की बात छेड़ी।

'आपको एक बात तो बताना ही भूल गई। कल सुबह पापा मुझे लेने आएँगे। दोपहर उनके साथ कार से रतलाम निकल जाऊँगी। दोनों बच्चे भी चार रोज से नानी के यहाँ हैं, उन्हें भी वापस लाना है।' प्रभा लेटे-लेटे बोली।

राकेश के चेहरे की रंगत बदल गई। गोटी बिठाना कोई प्रभा से सीखे। वे इस बात के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। प्रभा का नैहर जाना उन्हें कष्टप्रद लगता था। मन ही मन सोचा ये औरतें कितनी चतुर होती है। बकरी ने दूध दिया और मैंगनी डाल दी। कमाऊ बीबी के साथ और मुसीबत पर इनका करे भी क्या। घी का लड्डू टेढ़ा भी भला।

'वहां कितने रोज रहोगी?' राकेश मुँह लटकाते हुए बोले।

'सात रोज! पूरे एक साल से जा रही हूँ।' प्रभा चहकते हुए बोली।

'कभी इतना भी सोचा है तुम्हारे बिना अकेले कैसे रहूँगा। अकेले घर फाड़े खाता है। खाने की व्यवस्था और करो।'

'मुझे समझ में नहीं आता मेरे नैहर के नाम से तुम्हारी नानी क्यूँ मर जाती है। जब भी पीहर जाने की बात करो, ऊँट की तरह बर्राने लगते हो। मम्मी पन्द्रह दिन से बीमार हैं। जाना तो हम दोनों को साथ चाहिए, लोग तो यही कहेंगे एक बेटी-दामाद हैं वो भी मिलने नहीं आए। आप तो वाकई 38 गुणों के दूल्हे हैं।'

'ये 38 क्या होते हैं? 36 गुण तो सभी बताते हैं। दो अतिरिक्त कौन-से हैं?'

'खुद को उपजती नहीं, दूसरे की मानता नहीं।'

दोनों फिर खिलखिलाकर हँस पड़े।

प्रभा की कोमल अंगुलियाँ अब राकेश के सिर में घूमने लगी थी। राकेश के संयत होते ही उसने फिर गोटी डाली।

'अच्छा बाबा! तीन रोज में आ जाऊँगी। साफ क्यों नहीं कहते अकेले डर लगता है।'

'डरे मेरी जूती।'

प्रभा की बात सही थी पर राकेश क्या उत्तर देते।

प्रभा ने अब पैंतरा बदला।

'यस यू आर माई ब्रेव मैन। अब तो हाँ कह दो।'

'ओके! लेकिन तीन रोज से ज्यादा नहीं।'

प्रभा को तीन रोज के लिए ही जाना था पर सात रोज कहने से तीन पर सहमति शीघ्र हो जाती है।

घर में सभी मर्द घोंघा बसन्त होते हैं।

प्रभा को गये आज तीसरा दिन था। तीन दिन में राकेश की टें बोल गई। होटलों का भारी खाना लेते-लेते वह उकता गया। घर के काम करने की आदत थी नहीं, न कार्यों को करने का सिलसिला बैठता। बॉथरूम में होता तो कभी दूध वाला आ जाता तो कभी मेहरी तो कभी धोबी। तब उसकी कुढ़न देखने लायक होती, 'हराम के पिल्ले! मेरे अन्दर जाते ही इनको आने की सूझती है।'

तीन दिन तौबा करते-करते बीते। आज अंतिम रात थी।

रात सोने के पहले वे दूध जरूर पीते थे। अभी-अभी उन्होंने रसोई में दूध बनाया था। शक्कर, केसर एवं काजू के टुकड़े डालकर उन्होंने ग्लास डबलबेड के पास पड़े स्टूल पर रखा। दूध अभी गर्म था। उन्होंने कमर के पीछे दो तकिये लगाए एवं डबलबेड पर बैठे-बैठे उपन्यास पढ़ने लगे। उपन्यास के मुख्य नायक के बचपन का एक प्रसंग पढ़ते-पढ़ते वे भी अतीत में खो गए। उन्हें अनायास अपने माँ की याद हो आई। पिता तो उनके पैदा होने के दो माह बाद ही गुजर गए थे। प्रभा से विवाह होने के दो वर्ष बाद माँ गुजरी थी। अब बचा ही कौन था। तभी तो वे प्रभा एवं बच्चों को लेकर इतने पजेसिव थे। मनोवैज्ञानिक शायद ठीक ही कहते हैं कि हर पति अपनी पत्नी में कहीं अपनी माँ को ढूंढ़ता है। पत्नी, माँ तो हो नहीं सकती अतः पुरूष अनेक बार अकारण पत्नी पर झल्लाते रहते हैं।

अतीत के पन्ने पलटते हुए राकेश को वो भोली रातें याद आई जब वे माँ की गोद में सिर रखकर सोते थे। वे छोटी-छोटी बातें याद आई जो सिर्फ माँ के दुलार भरे मुँह से निकलती हैं। एक बार उन्हें लगातार छींके आई तो माँ ने कहा था, 'छींक माता छत्रपति।' तब वे कितना जोर से हँसे थे। बाद में माँ ने उनके सर पर हाथ फेरते हुए समझाया था कि छींक कितने विकारों को शरीर के बाहर फेंकती है। एक बार बहुत प्रयास करने पर भी उन्हें नींद नहीं आई। जब माँ की जादुई अंगुलियाँ उनके बालों में घूमने लगी तो उन्हें एक लम्बी उबासी आई। तब माँ ने मुस्कुराते हुए कहा, 'आई उबासी नींद की मासी।' उस दिन वे दोनों कितनी जोर से हँसे थे। सच है, दुनियाँ में माँ के रिश्ते की होड़ कोई नहीं कर सकता, बाकी सारे रिश्ते मात्र समयानुकूल समायोजन हैं।

इसी उधेड़बुन में उन्हें याद आया कि दूध पीना तो वे भूल ही गए। दूध अब तक ठण्डा हो चुका था। उन्होंने गटक कर दूध पीया। ग्लास नीचे रखा ही था कि उन्हें छाती में तेज जकड़न महसूस हुई। बोलने का प्रयास किया तो गला रुंध गया। जबान अटक गई। यह कैसी बला आ गई। उन्हें लगा जैसे कोई उनके प्राण खींच रहा है। ऊपर से नीचे तक सारा शरीर पसीने से तरबतर हो गया।

वे तेज आवाज में सूर्य मन्त्र 'ओम् सूर्याय नमः' का जाप करने लगे। सूर्य उनके आराध्य देव थे। गत बीस वर्षो से वे सदैव सुबह सूर्य नमस्कार कर उन्हें अर्घ्य देते थे। सुबह स्वाध्याय में एवं रात सोने के पूर्व भी वे सूर्य मन्त्र का जप करते थे।

उनके सामने एक दिव्य पुरुष खड़ा था। गहरा काला रंग, स्थूल देह, प्रशस्त ललाट तिस पर नगीनों जड़ा सोने का मुकुट, कानों में चमचमाते कुण्डल एवं भाल पर विष्णु तिलक जिसके बीच में सिन्दूर की मोटी बिन्दी लगी थी। उनकी बड़ी-बड़ी आँखों में अंगारे दहक रहे थे। दायें कन्धे से त्रिवली तक आकर तिरछा घूमता जनेऊ, बायें कन्धे पर सोने की चमचमाती गदा, गले में हीरों, पन्नों एवं मोतियों के नौलख हार, नीचे पीली धोती एवं पाँवों में खड़ाऊ। उनका प्रभा मण्डल मुकुट एवं नगीनों की चमक को भी फीका कर रहा था। इस प्रभा मण्डल से सारा कमरा देदीप्यमान हो गया।

राकेश को मानो काठ मार गया। वे भय के मारे थर-थर काँपने लगे, चूलें ढीली हो गई। होठ उबलते देग के ढक्कन की तरह फड़फड़ाने लगे। 'ओम् सूर्याय नमः' के मन्त्र ओर तेज हो गए। कैसी अकल्पनीय बला सर पर आई। जस-तस संयत हुए तो हकलाकर बोले।

'आ आ आ आप कौन हैं?'

'मैं यमराज हूँ। तुम्हारा समय पूरा हो गया है, तुम्हारे प्राण लेने आया हूँ।'

जब मरण निश्चित हो तो इष्ट आराधना ही अंतिम अवलम्ब बन जाती है। राकेश की हालत उस सहमे हुए हिरन की तरह थी जिसके सामने खूंखार शेर आ खड़ा हुआ हो।

'ओम् सूर्याय नमः' के प्रलाप और तेज हो गए। वे हाथ जोड़कर यमराज के आगे नत हो गए।

'इस प्रलाप को बंद कर। क्या तुम्हें पता नहीं सूर्य मेरे जनक हैं। मरते हुए किसी के मुँह से उनके मन्त्र निकले तो मैं उसके प्राण नहीं ले सकता। मैं प्राणघाती हो सकता हूँ पितृघाती नहीं।' यमराज गम्भीर स्वर में बोले।

राकेश को मानो संजीवनी मिल गई। अंधा क्या चाहे दो आँखें। यमराज के मुँह से ही उनकी कमजोरी जानकर उसने कूटनीति का बाण संधान किया। सत्य की राह पर चलने वाले देव मनुष्य के इसी अस्त्र ढीले पड़ते हैं।

'आप कैसे पितृ प्रेमी हैं। मैं तो वर्षों से सुबह सूर्य नमस्कार करता हूँ। सुबह-शाम सूर्यदेव के जप करता हूँ। पीढ़ियों से वे हमारे आराध्य हैं फिर असयम ही आपका आगमन कैसे हो गया? मेरे छोटे-छोटे दो बच्चे हैं। मेरी पत्नी तो मेरे निधन का समाचार सुनकर पागल हो जाएगी। आपको क्या मालूम पितृविहीन पुत्र परकटे पक्षी की तरह होता है। मुझे पता है मेरी माँ ने मेरे पिता के असामायिक निधन के पश्चात मुझे कैसे पाला है। क्या हर बार आपको सूर्य पूजकों का ही घर मिलता है? क्या आप जानते हैं प्रभा विधवा होकर कैसे उम्र काटेगी? विधवाओं की विडंबनाओं को आप देवपुरुष क्या समझें। स्वर्ग में तो कोई विधवा होती नहीं।' राकेश ने साहस बटोरकर ब्रम्हास्त्र संधान किया। मरता क्या न करता।

'व्यर्थ प्रलाप मत कर। मौत सर खड़ी है तो हमें ही पट्टी पढ़ा रहा है। मैं तो काल का दूत हूँ। काल कसाई से भी अधिक क्रूर होता है। वह न बूढ़ा देखता है न बालक। न राजा देखता है न रंक। मृत्यु मुहूर्त देखकर नहीं आती। मौत के रथ नहीं जुतते। वह किसी की राह नहीं देखती। हर जन्म ने वाले की मृत्यु निश्चित है और तू जगत की चिंता मत कर। वह तेरे पहले भी चल रहा था एवं तेरे बाद भी ऐसे ही चलेगा। यह महान् अस्तित्व किसी के आने जाने से प्रभावित नहीं होता। पीपल के पेड़ से एक पत्ता गिर जाए तो पेड़ को फर्क पड़ता है क्या?'

'पर मेरा परिवार तो तबाह हो जायेगा प्रभु!'

'यह तेरा भ्रम है। मैं ऐसे कई बच्चे जानता हूँ जिनके पिता बचपन में ही चले गए, आज वे उन बच्चों से भी आगे हैं जिनके पिता वर्षो उनके साथ रहे। तू स्वयं इसका एक जीवंत उदाहरण है। यही नहीं ऐसी विधवाएँ बता सकता हूँ जो पति होने तक कृशांगी थी, बाद में गजगामिनी बन गई। पुत्र! संसार में कोई अपरिहार्य नहीं है।'

'फिर मैंने वर्षों आपके जनक सूर्यदेव की जो आराधना की है, उसका क्या फल? मैंने तो सुना है सूर्य आराधना कभी निष्फल नहीं जाती। पिता का मान रखने के लिए तो राम चौदह वर्ष वन में चले गए थे। किंवदंती है कि अनेक पुत्रों ने पितृ सम्मान के लिए अपने शीश कटवा दिए। आप फिर अपने पितृभक्तों पर यह कहर क्यूं बरपा रहे हैं? क्या आप भी अपने अनुज शनि की तरह मेरे आराध्य सूर्यदेव के परम शत्रु हैं?'

'तुमने तो अजीब धर्मसंकट में डाल दिया पुत्र! मुझ पर हजार लांछन लगा पर पितृघाती होने का कलंक मत मढ़। अब मैं तुम्हें वर देने को मजबूर हूँ। प्राणदान के अतिरिक्त कुछ भी वर माँग ले।'

'प्रभा कल सुबह आ रही है। आप उसके आने तक मेरा आतिथ्य स्वीकार करें। उसके आते ही जब मैं कुण्डा खोलूँ, आप मेरे प्राण हरण कर लेना। इस बहाने उसे यकीन तो होगा कि मैं उसकी जुदाई में मर गया। हर बार पुराने खिलौने की तरह ठोकर मारकर नैहर चली जाती है। हाँ, उसके आने तक आप मेरे अधीन रहेंगे। आपको मेरे हर प्रश्न का उत्तर देना होगा।'

'तुम्हें भी तो अपने नैहर ही ले जा रहा हूँ पुत्र! वहीं तो तुम्हारा मूल धाम है, वहीं तो परमात्मा निवास करते हैं।'

'इन गूढ़ बातों पर मैं बाद में चर्चा करूँगा। अभी भोर होने में छः प्रहर शेष है। पहले मेरे द्वारा मांगे गए

वरदान पर सहमति प्रकट करें।' 'तथास्तु!'

इतना कहते ही यम अतिथि बनकर उसके अधीन हो गए। यम अब मंद-मंद मुस्कराने लगे थे।

सिर्फ भक्त में ही इतनी शक्ति होती है कि वह असीम शक्तिमान देवताओं को भी अपना बंधक बना लेता है। देवों की महानता तो देखो, जिन्हें बड़े-बड़े योगी, मुनि एवं तपस्वी पार नहीं पाते, भक्त सहज ही उन्हें अपने प्रेम-पाश में बाँध लेता है।

अतिथि माँ जाये से बड़ा होता है। देवतुल्य। लेकिन जब देव स्वयं अतिथि बनकर पधारे तो आतिथ्य में कैसी कमी।

राकेश अब तक सहज हो चुके थे। मन ही मन सोचने लगे क्या देव इतने सरलमना होते हैं? घर बैठे आतिथ्य का ऐसा सुअवसर तो जन्म जन्मांतर के पुण्य के संचय होने से ही मिलता होगा। जब सुबह तक मर ही जाना है तो कम से कम देव आतिथ्य का पुण्य तो लूँ।

वे यमराज को अपने ड्रांइगरूम में ले आए। उन्होंने यमराज के हाथ से गदा ली एवं उसे आदर पूर्वक दीवान पर रखी। गदा रखकर उन्हें सोफे पर विराजने का अनुरोध किया। अपने वरदान के अधीन यमदेव उसके आग्रह को कैसे ठुकराते।

राकेश तुरन्त रसोई में गए। कुछ क्षण बाद एक खाली परात, लकड़ी का पट्टा एवं बर्तन में पानी लेकर ड्रांइगरूम में आए। पट्टे के ऊपर उन्होंने परात को रखा। अपने हाथों से यमदेव के पाँवों को परात में रखकर बर्तन के पानी से पखारा। फिर उन पाँवों को अपने हाथों में लेकर नेपकीन से पौंछा। यमदेव ने पाँव नीचे रखे ही थे कि राकेश परात के पानी को चरणामृत की तरह पी गए।

वे पुनः उठे एवं एक थाली में कंकुम, रोली, अक्षत, दीपक, पान, सुपारी एवं गुड़ आदि पूजा का सामान लेकर बाहर आए। उन्होंने यमराज का तिलक कर उनके माथे पर अक्षत लगाया। दीपक जलाकर उनकी पूजा की एवं मुँह में गुड़ एवं पान दिया। फिर इधर-उधर देखकर बोले, 'प्रभु! इस अकिंचन के घर में आज पुष्प नहीं है। मैं आपको हृदय के पुष्प एवं भावनाओं का नैवेद्य अर्पित करता हूँ। मेरी पूजा में कमी रह गई हो तो क्षमा करें।'

यह कहते-कहते उन्होंने दण्डवत कर यम को पुनः प्रणाम किया।

प्रेम का पान हीरा समान। यम विव्हल हो उठे। उसे उठाते हुए बोले, 'तुम्हारे आतिथ्य से मैं अभिभूत हूँ। आज तुमने जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य पा लिया। तुम्हारा अतिथि सत्कार प्रशंसा से परे है। आजकल मृत्युलोक में लोग आतिथ्य का महत्त्व ही भूल गये हैं। जिस घर में अतिथि का सम्मान न हो उस घर के अनेक पुण्य क्षय हो जाते हैं। वहाँ से श्री, सम्पत्ति, वैभव सदैव के लिए चले जाते हैं। अब तेरे बाद इस घर में सदैव श्री, सम्पत्ति निवास करेगी।'

राकेश की आँखें प्रेमाश्रुओं से नहा गई। संयत होकर बोले, 'प्रभु! आज मैंने क्या नहीं पाया। आपके दर्शन कर लेने के पश्चात् भला किसे श्री, सम्पत्ति की चाह रह जाती है। कौन-सा भोगने योग्य सुख शेष रह जाता है। देव! मेरी तो पीढ़ियाँ तर गई।' इस वार्तालाप के पश्चात् कुछ क्षण दोनों मौन रहे।

कभी-कभी मौन व्याख्यान से भी अधिक प्रभावी हो जाता है। यम अब भी राकेश के अधीन थे। राकेश किसी गहरे चिंतन में डूबे थे। वे इन दुर्लभ, अमूल्य क्षणों को खोना नहीं चाहते थे। कई ऐसे प्रश्नों का उत्तर चाहते थे जिन्हें मनुष्यता सदियों से खोज रही है। जीवन-मृत्यु से जुड़े असंख्य प्रश्न उनके जेहन में उभरने लगे। यम से अधिक कौन सुपात्र होगा जो इनका उत्तर दे सके, इन गुत्थियों को खोल सके। गम्भीर मनन एवं चिंतन करने के पश्चात् राकेश ने प्रश्न किया, 'प्रभु! मृत्यु क्या होती है? हम सभी मृत्यु से इतना भयभीत क्यों होते हैं?'

'तुम्हारा प्रश्न गूढ़ एवं गुह्य है पुत्र! वस्तुतः मृत्यु नाम की कोई चीज है ही नहीं। मृत्यु आत्मा का पड़ाव है, विश्राम बिन्दु है। सिर्फ देह का अन्त होता है, अवसान होता है। इसीलिए तुमने देहान्त एवं देहावसान तो सुना होगा, आत्मांत अथवा आत्मावसान नहीं सुना होगा। जैसे मनुष्य जीर्ण वस्त्रों को त्यागकर नये धारण कर लेता है वैसे ही आत्मा अपने कर्मबन्धन पूर्ण होते ही देह छोड़ देती है। वह अपनी नयी यात्रा पर निकल जाती है। जैसे बीज पकता है, फिर गिरता है, फिर-फिर पकता है-गिरता है, वैसे ही आत्मा नये-नये परिधान ग्रहण करती रहती है। मृत्यु सरासर झूठ है। हम मृत्यु में छिपे जीवन को नहीं जान पाते। मृत्यु इसलिये हमें भयभीत करती है। मृत्यु से वही भयभीत होते हैं जो शरीर को ही जीवन समझ लेते है।'

'यह आत्मा क्या है प्रभु?'

'यह आत्मा तुम सबके हृदयों में परमात्मा की प्रतिनिधि रूप में विराजमान है। यह परमात्मांश ही है। साक्षी है यह तुम्हारे एक-एक कर्म का। यही आत्मा तुम्हें पल-पल बोध देती है। नित्य एवं सनातन है यह। जैसे एक कम्प्यूटर अनेक कम्प्यूटरों से एवं फिर मुख्य कम्प्यूटर से आपस में जुड़ा होता है, यही आत्मा की स्थिति है। इस आत्मतत्त्व को जान लेने के पश्चात् जानने योग्य कुछ भी शेष नहीं रहता। इसे जानते ही मृत्यु गिर जाती है। मनुष्य अज्ञेय से ज्ञेय बन जाता है। आत्म-तत्त्व का ज्ञान ही अमृत है।'

'इस आत्म-तत्त्व को कैसे जानें प्रभु?'

'पुत्र! इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तुम्हें महायज्ञ करना होगा। जप, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान इस यज्ञकुण्ड की ईटें होंगी। परोपकार, परदुखकातरता एवं क्षमा आदि दिव्य गुणों से स्वयं को पवित्र करना होगा। लोककल्याण को जीवन का ध्येय बनाना होगा। श्रेयस्कर कार्य करने होंगे। अपने स्वार्थो की तिलान्जलि देनी होगी। तब प्रज्वलित होगी तुम्हारे भीतर ज्ञानाग्नि। यह ज्ञानाग्नि ही तुम्हारे कर्मों को दग्ध करेगी। तुम्हारे भीतर ही छिपी है यह अग्नि, तुम्हें ही इसे जलाना होगा। इस ज्ञान को जाने बिना मनुष्य सुखी हो ही नहीं सकता। दीर्घायु मनुष्य भी इसे जाने बिना अल्पायु है। जीवन की कला जानने के लिए तुम्हें मृत्यु की कला जाननी होगी और मृत्यु की कला है सबके प्रति शुभ संकल्पों से भरना, सबके कल्याण की कामना करना चाहे वो हमारा परम शत्रु ही क्यों न हो। जब हम यह जान लेते हैं कि सबके हृदय में एक ही ईश्वर का अंश निवास करता है फिर हमारा किससे विरोध हो सकता है!'

'फिर मोक्ष क्या है प्रभु?'

'यही मोक्ष है पुत्र! जिन्होंने आत्म तत्त्व को जान लिया, वे जीते जी मुक्त हैं। इसको जानते ही सारे दुःख तिरोहित हो जाते हैं। कोई पीड़ा नहीं रह जाती। जीवन संगीत से भर जाता है। मृत्यु महात्मा है पुत्र, जिसे आत्म बोध हो जाए उसकी मृत्यु कैसे? उसे मृत्यु का भय भी कैसे हो सकता है, तब मृत्यु के समय तुम वैसे ही प्रसन्न होंगे जैसे स्त्री नैहर जाते हुए होती है। तुम सबका नैहर वहीं तो है।'

'प्रभु! क्या इस आत्म तत्त्व को जानने के सभी अधिकारी हैं या इसमें आयु, गोपनीयता आदि कोई बन्धन है?'

'आत्मतत्व जानने के सभी अधिकारी हैं पुत्र। इसमें आयु का कोई बंधन नहीं। सभी सुपात्र हैं। ध्रुव एवं प्रहलाद इसे अल्पायु में ही जान गए। महावीर ने इसे यौवन में जाना। कइयों को इसका ज्ञान अधेड़ अवस्था अथवा बुढापे में हुआ। असंख्यजन इसे जाने बिना ही मर गए। बोधगम्यता की कोई उम्र नहीं होती। जागो तभी सवेरा। इसमें जाति, धर्म का भी कोई बंधन नहीं। इसके लिए तो मात्र आस्था भरे अंतःकरण चाहिए। लोककल्याणकारी कोई भी ज्ञान गोपनीय नहीं होता पुत्र! ज्ञान-गंगा में जितने नहाए, अच्छा है। ज्ञान का एकाधिकार महापाप है। अगर नदी का पानी ठहर जाएगा तो उसमें सड़ाँध पैदा होगी। श्रद्धा से जन हितार्थ, ज्ञान के प्रचार एवं प्रसार को ही गुणीजन श्राद्ध कहते हैं। यही श्रेष्ठ तर्पण है। ज्ञान ही एकमात्र ऐसी निधि है जो बाँटने से बढ़ती है।'

आत्म मंथन में प्रहर पलक झपकते बीत गये।

मुर्गे ने बांग दी, मुल्ले ने अजान। मंदिरों में शंख ध्वनि गूंजी।

राकेश के सर पर काल बादलों की तरह मंडराने लगा था, पर अब वे अविचल एवं अडिग खडे थे। आत्मतत्व जान लेने के पश्चात मृत्यु का भय कैसा?

निर्भय और निःशंक राकेश प्राण विसर्जन को तैयार थे। तभी दरवाजे पर बेल बजी। शायद प्रभा आ गई थी। नींद में राकेश बड़बड़ाये जा रहे थे, 'अब मृत्यु का भय कैसा'

बेल पर बेल बज रही थी। राकेश हड़बड़ाकर उठे तो अपने बैड पर थे। तो क्या यह एक स्वप्न था। उन्होंने आँखें मलकर चारों और देखा। यम गायब थे। रात दूध पीते ही उन्हें नींद आ गई थी। नींद में ही इतना लम्बा घटनाक्रम हो गया। कैसा अलौकिक स्वप्न था। उन्होंने तुरंत उठकर दरवाजा खोला। प्रभा एवं बच्चे बाहर खड़े थे।

घर में घुसते ही प्रभा बोली, 'मैं नहीं होती हूँ तो घोड़े बेचकर सोते हो। काश! भगवान ने पुरुषों का भी नैहर बनाया होता तो औरतें भी कुछ रोज चादर तानकर सोती।'

'सबका नैहर एक ही जगह तो है प्रभा।' राकेश दार्शनिक अंदाज में बोले।

'अभी भी आधे नींद में लगते हो।' प्रभा मुस्कुराते हुए बोली।

'जब तक कोई जगाने वाला नहीं आता, मनुष्य तन्द्रा में ही जीता है प्रभा!'

उत्तर देते हुए राकेश भीतर चले गए।

माहेश्वरी समाज की सबसे पुरानी
और सफल वैवाहिक सेवा

www.maheshwari.org

हमारी अन्य सेवाएं
www.jain2jain.org
www.agarwal2agarwal.org

निःशुल्क
पंजीकरण
9312946867

नारी के स्वास्थ्य की जब चर्चा होती है, तो उसमें ब्रेस्ट कैंसर को सबसे ऊपर रखा जाता है। क्योंकि यह बीमारी इतनी भयावह है कि प्रतिवर्ष सम्पूर्ण विश्व में लाखों लोगों की जान लेती रही है। यदि इसके प्रति सतर्कता रखी जाऐ तो प्रारम्भिक स्तर पर आसान चिकित्सा से इससे बचा जा सकता है।

नारी जीवन का सबसे बड़ा शत्रु

ब्रेस्ट कैंसर

डॉ. दीपा टावरी, नागपुर

दुनिया भर में हर वर्ष लाखों महिलाओं की मृत्यु स्तन कैंसर यानि कि ब्रेस्ट कैंसर से हो जाती है। यह महिलाओं में सबसे प्रमुख कैंसर हैं। आंकड़ों को देखें तो हर 8 में से 1 महिला को स्तन कैंसर होने का खतरा है। इसका पता यदि शुरुआती स्टेज में लगाया जा सके और उपचार जल्दी शुरू हो तो, इससे होने वाले खतरे को कम किया जा सकता है। मेमोग्राफी की सहायता से ब्रेस्ट कैंसर को जल्दी पकड़ में लाया जा सकता है। यह एक प्रकार का एक्स-रे है और सामान्य जांच है, इसमें चीरफाड़ या सुई या कोई और दवाई नहीं दी जाती है।

कब करवाऐं मेमोग्राफी

40 साल से ऊपर की महिलाओं को साल में एक बार अपना टेस्ट जरूर कराना चाहिए। कई बार ऊपर से देखने पर या फील करने पर भी गांठ पकड़ में नहीं आती है। मेमोग्राफी से छोटे से छोटी गठान को पकड़ा जा सकता है। याद रखें Early Diagnosis Gives The Best Results. मेमोग्राफी दो स्थिति में कराई जाती है। एक स्क्रिनिंग मेमोग्राफी जो सभी को सामान्य हेल्थ चेकअप जैसे कराना चाहिए ताकि शुरुआती अवस्था में पहचान कर इलाज शुरू किया जा सके। ऐसी स्टेज में पूरा ब्रेस्ट भी आपरेशन से नहीं हटाना पड़ता है और परेशानी भी कम होती है। दूसरी डाइग्नोस्टिक मेमोग्राफी है, जो ट्यूमर के लक्षण दिखने पर कराई जाती है।

ये रखें खास सतर्कता

कुछ लोग हाई रिस्क ग्रुप में आते हैं उन्हें मेमोग्राफी अवश्य करानी चाहिये। जैसे जिनके घर में मां या बड़ी बहन को ब्रेस्ट कैंसर हुआ हो। ध्यान रखें मां, मौसी, नानी या बहन को कैंसर हुआ है तो आपको होने के चांसेस दो गुना ज्यादा हैं। जिन लोगों को बच्चा नहीं है या जिन्होंने स्तनपान नहीं कराया है उन्हें भी हाई रिस्क है। ब्रेस्ट में गांठ आई है या निजल से खून आ रहा है या निजल अंदर धंस गया है तो मेमोग्राफी तुरंत कराए। जो महिलाएं मोटापे का शिकार हैं या अधिक फास्टफूड का सेवन करती हैं, वो मेमोग्राफी अवश्य कराएं।

हर स्थिति में जागरूकता जरूरी

ध्यान रखें मेमोग्राफी एक उपयोगी टेस्ट है। जिससे कैंसर का पता जल्दी लगाया जा सकता है और निदान शुरू कर इसे फैलने से बचाया जा सकता है। ब्रेस्ट कैंसर यदि आखरी स्टेज तक फैल गया तो इससे जान भी जा सकती है। इसलिए मैं यही सलाह देती हूँ कि हमें अपना रेग्यूलर चेकअप कराते रहना चाहिए और दूसरों को भी हेल्दी लाईफ स्टाईल के प्रति प्रोत्साहित करना चाहिए। हम कैंसर से बच नहीं सकते पर समय पर जांच करवाकर उपचार जल्दी शुरू कर सकते हैं। याद रखें जान है तो जहान है।

With Best Compliments From

DISINFECTANTS BEST BY TEST

NATH PETERS HYGEIAN LIMITED

Post Box No. 1457, Regd. Off : 17-1-200, SAIDABAD, HYDERABAD - 500 059.T.S.Tel: 2453 4523,Cell No: +919701343335
e -mail: sales@nathpeters.com, Website: www.nathpeters.com

IS:1786
CM/L - 6943589

GBR TMT
THE STRENGTH WITHIN
www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality
MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

कहते हैं कि जहाँ चार बर्तन होंगे वहाँ वे टकराऐंगे ही। यह बात संयुक्त परिवार में बिल्कुल खरी बैठती है। इन स्थितियों में दोष तो किसी का भी हो सकता है। लेकिन अक्सर इसका दोष बहू के सर मढ़ दिया जाता है। हमेशा बहू ही गलत नहीं होती है, ससुरालवालों की भी गलतियाँ होती हैं, बहू के साथ सामंजस्य बिठाने में। यह जानते हुए भी कि ताली एक हाथ से नहीं बजती फिर भी बहू अकेली ही क्यूँ हमेशा कटघरे में दिखाई देती है? बहू को छोड़कर घर परिवार के अन्य सदस्यों की बात को महत्व देते हुए परिवार और समाज में भी बहू को दोषी मानकर मनगढ़ंत बातें बनने लगती हैं, जो कि बहू के लिए असहनीय हो जाती है। यह स्थिति परिवार के विग्रह का कारण भी बन जाता है। ऐसे में विचारणीय हो गया है कि क्या निष्पक्ष चिंतन नहीं होना चाहिये? क्या बिना दोनों पक्षों की बातों पर मनन किये बगैर ही हर बार बहू को दोषी मान लेना कितना उचित/अनुचित है? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

पारिवारिक विवाद में सिर्फ बहू को दोष देना कितना उचित/अनुचित?

बहू की गलतियों पर फब्तियां क्यों?

अपने घर के सदस्यों पर दोषारोपण करना मुश्किल होता है तो किसी भी कार्य की असफलता को बहू के सर आसानी से मढ़ दिया जाता है। बहू चाहे नई-नवेली हो अथवा पुरानी, अधिकतर घरों में उसे दिल से कभी भी अपना नहीं माना जाता। उसे घर के अंदरूनी मामलों से भी दूर रखा जाता है। बहू को ससुरालवालों के साथ सामंजस्य बैठाने की हर संभव कोशिश करनी पड़ती है। अगर यही कोशिश बहू के साथ-साथ परिवार का हर सदस्य करे तो रिश्तों में किंतु - परंतु की गुंजाइश ही नहीं रहेगी। रही बात गलतियों की तो वह तो हर सदस्य से कभी ना कभी होती रहती होगी पर बहू की गलती को जगजाहिर और अन्य पारिवारिक सदस्यों की गलतियों पर पर्दा डाल दिया जाता है। परिवार के सदस्यों में मतभेद हो सकते हैं, मनभेद नहीं होने चाहिए। अलग परिवार और माहौल से ब्याहकर आई बहू के विचार ससुरालवालों से भिन्न हो सकते हैं, पर कोशिश करें कि मनभेद न हो। बहू के कदमों को शुभ-अशुभ मानकर कहीं तो ससुराल में उसे सर आँखों पर बिठा लिया जाता है तो कहीं दुत्कार दिया जाता है। हमें अपनी सोच में परिवर्तन करने की जरूरत है कि बहू भी इंसान है भगवान नहीं जो बहू के घर में प्रवेश करते ही हमारे घर की कायापलट हो जायेगी। अगर हमारे साथ कुछ बुरा हुआ भी है तो यह हमारे अपने कर्मफल है, इसमें बहू का कोई हाथ नहीं। देखा गया है कि जिस घर में बहू के साथ दुर्व्यवहार हुआ है उस घर से ईश्वर भी रुष्ट होते गये हैं। बहू की तरफ से भी परिवार में स्वयं की जगह बनाने की कोशिश रहनी चाहिए। इसके लिए घर-परिवार की मान-मर्यादा का सदा ध्यान रखना चाहिए। पीहर और ससुराल के रीति-रिवाज भिन्न हो सकते हैं, पर ब्याह के बाद उसे ससुराल के संस्कृति-संस्कारों का अनुसरण कर उनको पीढ़ी दर पीढ़ी अग्रसित करके अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। बहू ही नहीं परिवार में किसी से भी गलती हो जाये तो उसे एक-दूसरे पर ना थोपकर अपनी गलती को मान लेना बुद्धिमानी और दूसरों के द्वारा उन गलतियों को माफ कर देना बड़प्पन होगा।

❐ **सुमिता मूंधड़ा**, मालेगांव

विवाद में दोनों पक्ष जिम्मेदार

किसी ने सच कहा है 'ताली एक हाथ से नहीं दोनों हाथों से बजती है। एक हाथ से तो चुटकी बजती है।' इस प्रसंग के सन्दर्भ में इसे यूं समझा जा सकता है कि परिवार के सदस्यों में किसी तरह का विवाद खड़ा हो जाता है तो उसके लिए कोई एक पक्ष ही जिम्मेदार नहीं होता है (अपवाद को छोड़कर)। हां, उसमें दोनों पक्षों में किसी एक का हिस्सा कम-ज्यादा हो सकता है। यहां प्रश्न यह है कि विवाद की स्थिति में बहू को ही दोषी क्यों ठहराया जाता है। बहू के साथ विवाद की स्थिति खड़ी होने के कई कारण हो सकते हैं। पर मेरे विचार से दो मुख्य कारण हैं। पहला नादानी या अपरिपक्वता और दूसरा स्वभाव। वैसे ये दोनों कारण पास- पास है। फिर भी इनका विश्लेषण अलग-अलग कर सकते हैं। नादानी या अपरिपक्वता का एक संक्षिप्त उदाहरण - सास ने बहू से कहा बर्तन साफ कर लो, कपड़े तह कर लो, घर में झाड़ू लगा लो। बहू नाराज व झगड़ा कर पीहर चली गई। अपने पिता से कहा सास दिनभर काम करने का कहती रहती है। पिता ने पूछा क्या सास अपनी तरफ से बर्तन गन्दे कर, कपड़े भीगो कर या कूड़ा फैला कर साफ़ करने के लिए कहती है? बहू ने कहा, ऐसा तो नहीं। तब पिता ने कहा यह तो रोजमर्रा का काम है। करना ही पड़ेगा, इसमें नाराजगी या लड़ाई क्यों और कैसी? इसी उदाहरण को दूसरी दृष्टि से समझे यानि सास-बहू को हर समय काम करने के लिए कहें, सही ढंग से कपड़े पहनने पर भी टोके, परिवार के दूसरे सदस्यों से तुलना करे, पीहर पक्ष के लिए ताने सुनाये या अन्य किसी प्रकार से बहू के सम्मान को ठेस पहुंचाये। तो फिर धीरे-धीरे हर समय विवाद की स्थिति ही रहेगी। इस प्रकार देखें तो यह निर्णय करना काफी कठिन होता है विवाद की स्थिति में दोषी कौन? संक्षिप्त में किसी एक पक्ष को दोषी ना ठहराते हुए परिस्थिति का आंकलन कर निर्णय लें, किसी पर दोषारोपण न कर संयम और विवेक से विवाद को टालें। बहू से नादानीवश या स्वभाववश गलती हो रही है तो समझायें। परिवार के सभी सदस्य आपस में सामंजस्य बैठाने का प्रयास करें। सिर्फ बहू को दोषी ठहराना उचित नहीं है। हमारे समाज रत्न भूतपूर्व चीफ जस्टिस स्व. श्री रमेश लाहोटी का कहा एक वाक्य मुझे बहुत प्रिय लगता है - 'बहू को बहू का दर्जा दें, सास ससुर का सम्मान लें'।

❐ **बिनोद बिहानी**, फरीदाबाद

अपेक्षा पर खरा न उतरना

इन विवादो में मुख्य मामले होते हैं कि बहू, सास-ससुर की मर्जी से नहीं चलती या करती। जो उस परिवार में होता आया हो उसी पर बहू से चलने की अपेक्षा और बहू का उससे इंकार करना है। विवादों की वजह मायके या पीहर से बेहतर बताना या लेनदेन के रिवाज मुख्य होते है जो कही न कही पीहर पक्ष को चुभते है और वही से महासंग्राम शुरू हो जाता है जो कई बार तलाक तक भी पहुंच जाता है। मजे की बात यह भी है कि कई परिवारों में दोनो जगह संपन्न होने के बावजूद भी लेनदेन के इन कारणों पर मनमुटाव चलते रहते हैं। कई लोग संयुक्त परिवार टूटने की वजह भी बहू को मानते हैं कि वह छोटी-छोटी बातों पर अपने पति के कान भरकर उसे घर से अलग होने पर उकसाती हैं और कई बार वातावरण इतना कलहपूर्ण हो जाता है कि पति के लिए यह तय करना मुश्किल होता है कि वह किसका पक्ष ले, किसका नही? थोड़ा बारीकी से देखें तो यह सब झगड़े घरेलू काम और बाहरी आजादी को लेकर ही होते हैं जिसमें बहू को आराम चाहिए और सास ससुर को काम। ऐसे में गलती निर्धारण करना सरल काम नही होता, यदि बहू को बेटी मानेंगे तो ही परिवार में मतभेद नहीं होंगे। वरना आजकल हर जगह अहम को लेकर शुरू हुये विवाद महाभारत में बदल जाते हैं।

❐ **अर्जुन झंवर,** मनासा (नीमच)

विवाद के कारण को जानना जरूरी

पारिवारिक विवाह में सिर्फ बहू को ही दोष देना पूर्णतः अनुचित है। किसी भी तरह का पारिवारिक विवाद हो जाने की स्थिति में यह आवश्यक नहीं है कि उस विवाद की जड़ में बहू का व्यवहार या उसके कार्य कलाप ही हों। विवाद किन परिस्थितियों में उत्पन्न होता है, उसका विश्लेषण करना आवश्यक है। बहू यदि पारिवारिक मूल्यों को कोई महत्व न दे या उनके विरुद्ध कार्य करे, मनमर्जी का या अनुचित व्यवहार करें, परिवार की इज्जत की परवाह न करे या परिवार के सदस्यों व रिश्तेदारों को उचित मान न दे तो उन परिस्थितियों में ही हम बहू को विवाद के लिये जिम्मेदार कह सकते हैं। अन्यथा उस पारिवारिक विवाद का दोषी कोई और भी व्यक्ति हो सकता है यथा पति, सास-ससुर, जेठ- देवर, उनकी पत्नियां, बच्चे या ननंद आदि। यदि परिवार में बहू को उचित मान-सम्मान न मिले तथा परिवार के किसी सदस्य का व्यवहार दुर्भावनापूर्ण या अनावश्यक रूप से सख्त हो, परिवार में बाहरी व्यक्तियों का अवांछित दखल हो, परिवार में उसे तानों भरा व्यवहार सहना पड़ रहा हो, उसके रंगरूप आदि को लेकर अनावश्यक टिप्पणियां निरंतर परिवार के सदस्यों द्वारा की जाती हो, जीवन साथी का उपेक्षापूर्ण व्यवहार आदि कारणों से यदि पारिवारिक विवाद उत्पन्न हो रहा हो तो उसके लिए भी बहू को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। अतः विवाद के असली कारण की तह में जाकर व विवेकपूर्ण ढंग से उसके विश्लेषण करने के पश्चात ही किसी पक्ष को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

❐ **सुरेन्द्र बजाज,** जयपुर

पारिवारिक विवाद में हमेशा बहुएं ही दोषी नहीं

आधुनिक युग में संयुक्त परिवार प्रायः लुप्त होती जा रही है। सभी अपनी जिंदगी जीने के लिए अकेला रहना चाहते हैं चाहे लड़के हो अथवा लड़कियां हम दो और हमारे दो वाली मानसिकता हमारे समाज में दृष्टिगत हो रही है। इसका एक प्रमुख कारण पारिवारिक विवाद है। पारिवारिक विवाद में प्रायः सभी का हाथ होता है, परंतु शादी होते ही अगर परिवार में विवाद चालू होते हैं तो प्रायः इसमें बहू का ही दोष अधिकांश में माना जाता है। कई जगह यह सत्य भी साबित हुआ है, कि लड़कियां जो स्वच्छंद वातावरण में रही हुई है वह किसी भी रोक-टोक और किसी भी तरह का हस्तक्षेप पसंद नहीं करती है। कई लड़कियां तो परिवार व्यवस्था में ही दोष बताती हैं। इधर परिवार वाले चाहते हैं कि लड़का शादी होते ही जैसे पहले रहता था या जितना सबको समय देता था वैसा ही सबको दे परंतु यह सब उसके लिए संभव नहीं हो पता है। अलग संस्कृति और अलग परिवार में ढली हुई पत्नी के साथ उसे भी सामंजस्य करना आवश्यक होता है। लड़के के परिवार वाले चाहते हैं केवल बहू ही एडजस्ट करें, जबकि लड़की चाहती है कि मेरे अनुकूल सब चलें, ऐसे में एक मानसिक पीड़ा लड़की के हृदय में भी होती है और ससुराल परिवार के भी सभी लोगों के साथ एक अलग सा वातावरण बन जाता है और कभी-कभी यह विवाद का कारण बन जाता है और कई बार तो पारंपरिक झगड़े में टूटने तक की नौबत आ जाती है। अपनी बात ना मानने पर लड़की घर छोड़ कर जाने का कहने लगती है। किसी के साथ परिवार वाले भी अगर परिवर्तित नहीं होना चाहते तो वह बहू को ही हर चीज के लिए दोषी मानते हैं। कई जगह लड़के भी एकल प्रवृत्ति के हो जाते हैं क्योंकि बच्चे पढ़ाई के लिए जब बाहर हॉस्टल में रहते हैं अथवा अकेले रहते हैं तो उनकी भी परिवार में रहने की आदत और सुनने की आदत कम हो जाती है बच्चे स्वयं अकेले रहना पसंद करने लग जाते हैं। हम पूर्ण रूप से सिर्फ बहू को ही पारिवारिक विवाद का दोषी माने ऐसा नहीं होता है। परिवारों में यह होता है परंतु कई परिवारों में नहीं भी होता है तो दोषारोपण बहू को देना अनुचित है। एक लड़की को भी समझना चाहिए कि नए घर में मुझे एडजस्ट होना है। मेरा विचार है लड़की अगर स्वयं एडजस्ट कर ले तो कभी ऐसी नौबत नहीं आएगी। समय के हिसाब से सभी जगह विचारों में परिवर्तन हो गया है पहले जैसी बंदिश या पहले जैसा कूपमण्डूक वातावरण अब परिवारों में नहीं मिलता है।

❐ **उर्मिला तापड़िया,** बीकानेर (राजस्थान)

स्थिति बेटी के नजरिये से भी देखें

बहू के आने से पूर्व और आने के 6 माह तक, घर के वातावरण में जो रौनक होती है, वही बरकरार रखना है तो हमारे विचारों में, कुछ बदलाव करना जरूरी है। जन्म से ना कोई सास होती है ना कोई बहू। जब हमारी प्रमोशन हो जाती है यानी हम सास बन जाती हैं, तब अपने जमाने की तुलना नहीं करना चाहिए। उससे मन विचलित होता है और ना चाह कर भी हमारा व्यवहार कठोर होने लगता है। बहू को मिली हुई छूट पर तंज कसना गलत है,'क्योंकि बीत गई सो बात गई' अब जमाना बदल चुका है, बेटा-बहू कंधे से कंधा मिलाकर कमाई करने लगे हैं। ऐसे में अगर बहू घर के काम में कम ध्यान दे पाती है तो उसे अनदेखा किया जाना चाहिए। कुछ नया करने की कोशिश में बहू से अगर बात बिगड़ जाए तो उसे दोषी न ठहराकर प्रोत्साहित करना चाहिए। बहू के आने के बाद व्यापार में नुकसान या घर में अकस्मात कोई घटना घट जाए तो उसका जिम्मेदार बहू को ठहराना उचित नहीं है। अगर यही वाकया हमारी बिटिया के साथ हो। उसे ससुराल में प्रताड़ना मिले तो हमारा कलेजा मुंह को आता है।

❐ **मीना कलंत्री,** मुंबई/वसई

टिप्पणी से पहले यथार्थ को जानें

आजकल पारिवारिक टकराव और गृह क्लेश बढ़ गया है। इसके मुख्य कारण स्वार्थ बुद्धि, आत्म केंद्रितता और सहनशक्ति का अभाव है। ये प्रवृत्तियाँ अधिकांश लोगों में बढ़ रही हैं। जब भी गृहक्लेश होता है बहू के ससुराल, पीहर के रिश्तेदार, समाज के लोग सभी बहू को दोष देने लगते हैं। समय के साथ युवा वर्ग की जीवन शैली बदली है किंतु ये सिर्फ लड़कियों के साथ नही है। लड़कों की जीवनशैली भी बदली है। एक लड़की जो सुखद जीवन के सपनों के साथ ससुराल जाती है, जब वहाँ उस से बाहरी व्यक्ति जैसा बर्ताव होता है, अपने बेटे-बेटी और बहू में अंतर किया जाता है, बहू के पीहर वालों पर व्यर्थ आक्षेप लगाए जाते हैं तब उसका मन छलनी हो जाता है। जब वो इसका विरोध करती है तो उसके संस्कारों पर प्रश्न उठाए जाते हैं। लोग उपदेश देते हैं कि ससुराल में सहन तो करना ही पड़ता है। हम कन्या को पुत्र का घर बसाने के लिए, अपना वंश बढ़ाने के लिए लाते हैं या उसको दुःख, तानेबाजी सहन करवाने के लिए लाते हैं? कभी कभी नववधुओं में थोड़ी फिजूलखर्ची, दिखावा आदि की आदत होती है जो आयु के अनुसार स्वभाविक है। उसको प्यार से थोड़ी जिम्मेदारी सौंप कर समझाना चाहिए ना कि उसके पीहर आदि पर आक्षेप करके और कभी किसी परिवार में टकराव की स्थिति देखें तो रिश्तेदार और समाज के प्रबुद्ध लोगों को पूरी स्थिति समझे बिना एकतरफा टिप्पणियां नही करनी चाहिए।

❐ **नम्रता माहेश्वरी,** पाली राजस्थान

बहू के प्रति मानसिकता बदलनी जरूरी

जब तक समाज में बेटी-बहू में अंतर रहेगा, तब तक समाज हर छोटे-बड़े पारिवारिक कलह के लिए बहू को ही दोष देता रहेगा। जब तक हमारी मानसिकता में बदलाव नही आएगा कि बहू भी किसी की बेटी है और बहू ही अब इस घर की मालकिन है, तब तक बहुओं पर अत्याचार होता ही रहेगा। जरूरी नहीं कि बहू को आपके घर के सारे कायदे-कानून पता हों या बहू को आपके सारे तीज त्योहार पता हों। इसलिए घर के बुजुर्गों को चाहिए कि बहू को अपनी बेटी समझ सभी बातें शांति से समझाएं। फिर भी गलती होती है तो भी जिस तरह हम अपनी बेटियों को माफ करते हैं, ठीक उसी तरह दिल बड़ा कर अपनी बहू को माफ करें तो घर का वातावरण भी अच्छा रहेगा और कलह भी नही होगा तथा घर की बात घर में रहेगी। इससे पड़ोसियों को तमाशा नही दिखेगा और बहू भी आपकी इज्जत करेगी। गलती जिसकी भी हो समय देखकर और हो सके तो अकेले में उस व्यक्ति को बतायें, जिससे उस व्यक्ति की बेईज्जती नही होगी और अगली बार वह व्यक्ति सावधानी से कार्य करेगा। इस तरह बहुत छोटी-छोटी बातों का हम ध्यान रखेंगे तो घर में शांति रहेगी और बरकत भी होगी। बहू ही घर की लक्ष्मी है, इसलिए जब हम बहू को उसका मान-सम्मान देंगे तो लक्ष्मी माता भी हम पर प्रसन्न रहेगी।

❐ **सपना श्यामसुंदर सारडा,** सुरेंद्रनगर (गुजरात)

एक-दूसरे को समझना जरूरी

एक समय था, जब किसी दूसरे परिवार से बहू के रूप में लाई गई बेटी से बहुत ज्यादा उम्मीद रखी जाती थी। आते ही मायके के रीति-रिवाज, लाड़-प्यार सब भूला कर ससुराल के रीति रिवाज, पसंद ना पसंद, हर सदस्य का स्वभाव-जरूरतें समझ कर अपने आप को नए परिवार में ढाल ले, ऐसी सोच होती थी। दूसरे परिवार से लाये पौधे को प्रेम रूपी खाद, विश्वास रूपी पानी और अपनेपन का सूर्य प्रकाश जरूरी होता है। इसके विपरीत हम यह बातें अपनी ससुराल जाने वाली बेटी के लिए चाहते हैं। बहू को समय देवें, प्रेम खुशी देवें, तो वह ससुराल वालों को चाहने लगेंगी और वह भी ससुराल वालों की बेटी बन जाएगी। मेरे दृष्टिकोण से अब स्थिति विपरीत हो गई है। लड़कियां शरीर से ससुराल में तथा मन से मायके में रहती हैं। ससुराल वाले बेटा-बहू के अलग होने के डर से तथा बदनामी के डर से दबे-दबे से रहते हैं। बहू हर समय ससुराल वालों को दोष देती रहती है, प्रताड़ित करती है। दोनों ही परिस्थितियाँ गलत हैं। अब संयुक्त परिवार की अहमियत सबके ध्यान में आ गई है। एक दूसरे को समझ कर रहने में ही घर प्रेम रज्जू से बंधा रहता है और खुश रहता है। ऐसा ही समाज प्रगति कर सकता है।

❐ **डॉ. कमल अशोक काबरा,** मलकापुर, जिला बुलडाना

दोनों ओर से सामंजस्य जरूरी

लड़की पराए घर से आती है इसलिए दोषारोपण के लिए एक कठपुतली मिल जाती है। जब वो अपना पक्ष रखती है तो उसे कुतर्क का नाम देकर सारे विवाद की ज़िम्मेदारी लड़की पर मढ़ देते हैं। आज की परिस्थिति में विवाह की उम्र की सीमा रेखा बढ़ गई है। पहले कम उम्र में शादी होती थी तो ससुराल के माहौल के मुताबिक ऊँच-नीच सिखती थी। अब विपरीत अवस्था है। बच्चियां अपने पीहर से सब अच्छी अच्छी बाते ही सीख कर आती है, लेकिन ससुराल वाले चाहते है कि बहू अपने मायके के रखरखाव को छोड़ तुरंत ही हमारे हिसाब से सब करे। जब ससुराल वाले अपनी बहू को दायित्व में बहू का दर्जा और लाड प्यार से बेटी बनायेंगे, तब वो अपने पीहर की सीख के साथ ससुराल की सीख मिलाकर अपना सर्वस्व न्यौछावर करेगी। आज बच्ची अपने जीवन के 25 वर्ष मायके में बिताती है। बाकी का ससुराल में अपने अस्तित्व के साथ जीना चाहती है। जहां लड़की का जन्म हुआ, दुनियादारी की समझ मिली, पढ़ाई आचार विचार मिले, शादी पश्चात पति, सास ससुर अन्य परिवारजन सबके कार्यशैली अपनाने के लिए समय की जरूरत है। उसी में वाद-विवाद होने की संभावना होती है। किसी और की भी गलती हो सकती है आप उसे नजरअंदाज करते हुए सिर्फ बहू को गलत करार कर देते है? विवाद को सुलझाने के लिए पहले जड़ तक जाऐं हो सकता है कोई और दोषी निकल जाए। परंतु ससुराल वाले यह स्वीकार नही करना चाहते कि किसी और से गलती हुई है। इसलिए बहू के के नाम का हथियार बना कर चारो दिशाओं में बहू के नाम की माला जप देते है कि कमी तो बहू में ही है, इसी की गलती है। समंजस्य दोनो ओर से होना चाहिए।

❐ **नीरा मल्ल,** पुरुलिलया (WB)

मन के अनूकूल हो.. तो हरि कृपा और अनूकूल ना हो तो हरि इच्छा.. इस तथ्य को धारण कर लें तो जीवन में आनंद ही आनंद है..!

With Best Compliments From...

VIDYA

VIDYA WIRES PVT. LTD.

(AN ISO 9001 :2015 Certified Company)

Shyam Sundar Rathi

excellence through experience

- Enamelled Copper Wires & Strips
- Paper Insulated Copper Conductors

(Mica / Nomex / Kraft / Crepe / Fibre Glass / Dauglass / Cotton / Polyester)

- MPCC - Connection Cables
- Bare Copper Wires
- Bunched & Stranded Copper Ropes / Earthing Cable
- Copper Tapes / PVC Copper Tapes

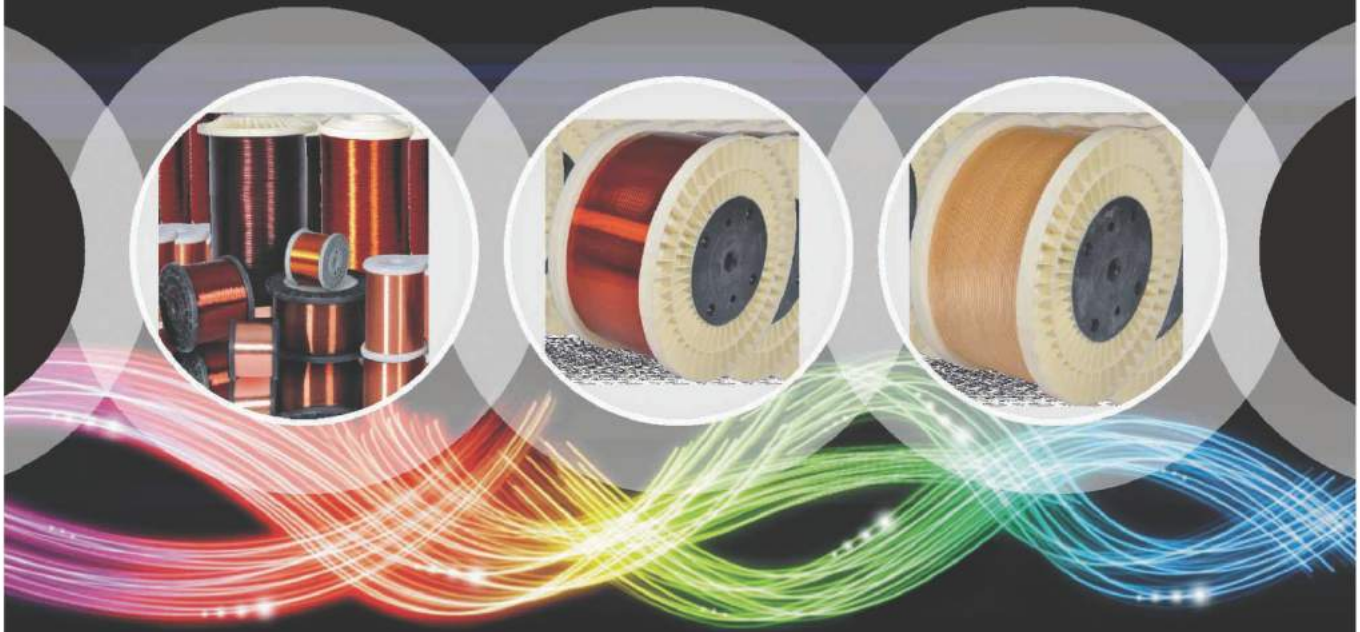

DEALERS ENQUIRIES SOLICITED

Regd. Office & Factory
123, G.I.D.C. Vithal Udyognagar,
Dist. Anand (Gujarat), INDIA
Ph.: +91 9228010700-09, +91 (2692) 236125.
Email: sales@vidyawire.com
www.vidyawire.com

ऋतु परिवर्तन वह दौर होता है, जब आम व्यक्ति इस परिवर्तन से तारतम्य नहीं बैठा पाते तो मौसमी बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। ऐसी ही बीमारियों से बचाती है, योग की 'मौसमी मुद्रा'

ऋतु परिवर्तन रोगों से बचाती

मौसमी मुद्रा

शिवनारायण मूंधड़ा
'वास्तु मित्र'
94252-02721

सर्दी-जुकाम, खांसी, अस्थमा आदि के लिए गत अंकों में कई मुद्राओं का वर्णन कर चुके हैं- जैसे सूर्य मुद्रा, परन्तु सहयोग मुद्रा, श्वसनी मुद्रा। इनसे सूखी खांसी में पूरा आराम नहीं मिलता हैं। उत्तरी भारत में सर्दी के मौसम में नवम्बर से फरवरी तक सुबह-शाम व रात को बहुत ठण्ड होती है। परन्तु दिन में जब सूर्य निकलता है तो खूब तेज धूप रहती है। इस मौसम में नमी बहुत ही कम होती है। वायुमण्डल में असंख्य कीटाणु और विषैले तत्व जमा हो जाते हैं। श्वास रोगियों के लिए यह स्थिति अत्यन्त हानिकारक होती है, विशेषतः गले और आवाज के लिए। जरा सी भी सर्दी से गले और ध्वनि मार्ग में सूजन हो जाती है। हमारे श्वसन तन्त्र को गर्म नमी युक्त वायु की आवश्यकता होती है। परन्तु इस वातावरण में बिल्कुल उल्टा ही होता है। इसीलिए इस मौसम में सूखी खांसी हो जाती है, जो जल्दी ठीक नहीं होती है। इस स्थिति में यह मुद्रा कारगर है।

कैसे करें: सूर्य मुद्रा बनाएं अर्थात् अनामिका उंगली को मोड़कर अंगूठे की जड़ से लगाएं। अब इन्द्र मुद्रा और आकाश मुद्रा बना लें अर्थात् मध्यमा, कनिष्ठा और अंगूठे के अग्रभागों को मिला लें। दोनों हाथों से करें।

क्या है लाभ : सूर्य मुद्रा से सर्दी दूर होती है।, इन्द्र मुद्रा से जल तत्व बढ़ने लगता है। सूर्य मुद्रा और इन्द्र मुद्रा मिलकर श्वसन तन्त्र में गर्मी व नमी को उत्पन्न करती हैं। जल और अग्नि मिलकर भाप उत्पन्न करते हैं, जिससे गले को आराम मिलता है। जब गले में शोथ (सूजन) हो जाती है तो गले में रिक्त स्थान (आकाश) तत्व की कमी हो जाती है और इसी के कारण बार-बार सूखी खांसी उठती है- दम घुटने लगता है। आकाश तत्व का सीधा संबंध गले से है। आकाश मुद्रा से आकाश तत्व बढ़ने लगता है। इसमें आकाश मुद्रा, इन्द्र मुद्रा और सूर्य मुद्रा एक साथ लग जाने से गले को बहुत आराम मिलता है।

विशेष: इस मौसम में इस मुद्रा को अधिक देर भी कर सकते है। दिन में तीन-चार बार गर्म नमकीन पानी से गरारे करने से गले के रोगों में बहुत आराम मिलता है, क्योंकि इस क्रिया से गले को गर्मी भी मिलती है और नमी भी मिलती है। इस मुद्रा के साथ-साथ नमकीन पानी के गरारे अवश्य करें क्योंकि नमक एण्टि सैप्टिक होता है।

Harish Chandak
Mo. : 9100713837

दीपावली के पावन पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

Ganesh Chandak
Mo. : 9246565312

Shri Ram Enterprises
(House of Electrical Goods)

Crompton Greaves EVERYDAY SOLUTIONS | ALMONARD | HAVELL'S | khaitan | USHA | ANCHOR by Panasonic | Goldmedal | V-GUARD The name you can trust

@ 5-26, Near Bus Depot, Dilsukh Nagar, Hyderabad-60
Phone : 040-24051718, 24045312, 65291718
E-mail : shriramdsnr@gmail.com

खुश रहें - खुश रखें

मन में प्रेम रखें, दूसरों को क्षमा करने में देर न करें और हिंसा से बचेंगे तो दुश्मन भी मित्र बन जाएंगे

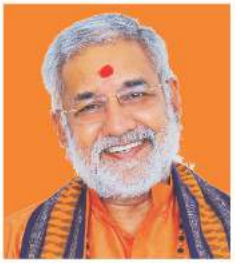

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

कहानी - संत दादू दयाल को दुनिया भर में सहनशीलता, धैर्य और भक्ति की वजह से जाना जाता है। एक दिन सेना का एक अधिकारी दादू दयालजी से मिलने के लिए घोड़े पर बैठकर निकला। उस समय जंगल में एक पेड़ के नीचे दादू दयालजी बैठे हुए थे। सेना का अधिकारी उन्हें जानता नहीं था। वह सेना अधिकारी था तो उसके स्वभाव में अकड़ भी थी। जब अधिकारी ने पेड़ के नीचे एक बूढ़े व्यक्ति को बैठा हुआ देखा तो वह बोला- 'अरे बूढ़े, मुझे दादू दयालजी से मिलना है, मुझे उनकी कुटिया का रास्ता बता दो।'

दादू दयाल ध्यान में बैठे हुए थे। वे अधिकारी के सवाल का जवाब नहीं दे पाए तो अधिकारी नाराज हो गया। वह घोड़े से उतरा और दादू दयाल को एक जोरदार थप्पड़ मार दिया। थप्पड़ पड़ने के बाद दादूजी ने मुस्कान के साथ कहा- 'क्या बात है?'

अधिकारी ने कहा- 'मैं दादू दयाल का पता पूछ रहा हूं और तुम चुपचाप बैठे हुए हो, मुस्कुरा रहे हो।' अधिकारी ने उन्हें और पीट दिया, उसने सोचा कि ये कोई पागल व्यक्ति है तो वह उन्हें वहीं छोड़कर आगे बढ़ गया। कुछ दूरी पर अधिकारी को गांव का एक व्यक्ति दिखा तो उसने फिर पूछा- 'मुझे दादू दयाल की कुटिया का रास्ता बता दो।' वह व्यक्ति दूर से ही अधिकारी और दादू दयाल के बीच हुई घटना देख रहा था। उसने अधिकारी से कहा- 'चलिए मैं आपको उनसे मिलवा देता हूं।' वह व्यक्ति अधिकारी को लेकर दादू दयाल के पास पहुंचा और बोला- 'ये ही दादू दयाल हैं।' ये बात सुनते ही अधिकारी बहुत शर्मिंदा हो गया। वह दादू दयाल के पैरों में गिर पड़ा और बोला- 'मैं तो आपको गुरु बनाना चाहता था, मैंने ये क्या कर दिया।' दादू दयाल ने उस अधिकारी को उठाया और गले से लगा लिया। दादूजी बोले- 'भैया, अगर कोई दो पैसे का मटका भी खरीदता है तो ठोक-बजाकर देखता है। तुम तो मुझे गुरु बनाना चाहते हो। तुमने मुझे ठोका भी ठीक से और बजाया भी ठीक से।' ये बातें सुनकर अधिकारी को समझ आ गया कि संत ऐसे ही स्वभाव की वजह से संत होते हैं। उनकी महानता उनके क्षमा स्वभाव में, धैर्य और सहनशीलता में होती है।

सीख - दूसरे लोग ये बात नहीं जानते हैं कि हम कितने महान हैं? लेकिन हमें अपने आचरण से नहीं गिरना है। उस अधिकारी ने हिंसा की, लेकिन दादू दयाल प्रेम, धैर्य और सहनशीलता का संदेश दे रहे थे। जो व्यक्ति भीतर से प्रेम से लबालब है, जिसकी प्रवृत्ति क्षमा करने की है, जो धैर्यवान है उसके आसपास इतनी सकारात्मक ऊर्जा होती है कि एक दिन विरोधी भी मित्र बन जाते हैं।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
a i s a k y o n

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "**ऐसा क्यों?**" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

ऋषि मुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, सांवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

चॉकलेट ड्राई फ्रूट्स स्वीट रोल (दिवाली स्पेशल)

सामग्री : कुकिंग चॉकलेट (छोटे-छोटे पीस में कटा हुआ) 400 ग्राम, बटर 2 टेबल स्पून, क्रीम 4 टेबल स्पून, काजू छोड़कर (बादाम, पिस्ता, अंजीर, किशमिश, मनुका, जर्दालू) मिक्स ड्राई फ्रूट दरदरे कुटे हुऐ 2 कप, ऑरेंज एसेंस एक टीस्पून , दरदरा कुटा हुआ काजू एक कप।

विधि : कुकिंग चॉकलेट, बटर और क्रीम मिलाकर डबल बॉयलर में पिघलाये। फिर उसमें सारे मेवे और एसेंस डालकर अच्छे से मिक्स करें और थोड़ी देर के लिए फ्रिज में रख दे। फिर यह मिश्रण फ्रिज से निकाल कर उसका लंबा रोल बनाएं। यह रोल दरदरा कुटे हुए काजू के ऊपर लपेटे (रोल करें)। अब यहां रोल डबल प्लास्टिक में या फिर बटर पेपर में लपेटकर 5 घंटे के लिए फ्रिज में सेट होने रखें। फिर उसके मनपसंद आकर के साइज से स्लाइस कट करे। आप इसमें काजू के बदले भुनी हुई खसखस या फिर मगज बीज भी ले सकते हो।

इस दीपावली पर्व पर यह चॉकलेट ड्राई फ्रूट स्वीट रोल का महालक्ष्मी जी को प्रसाद धराएं।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

बेटियां रो भविष्य खतरें में

खम्मा घणी सा हुकम आज आपा बात कर रियाँ हाँ.. बेटियों री शारीरिक और मानसिक स्थिति और वाणे स्वास्थ्य रे ख्याल पर..

हुकुम आजकल टीवी पर ऐड आवें सिर्फ़ एक कैप्सूल 72 घंटे के अंदर अनचाही प्रेग्नेंसी सूं छुटकारा?

इण एड ने देखने हज़ारो लाखों बिना दिमाग री लड़कियां.. हर हफ्ते नया बॉयफ्रेंड रे साथे सेक्स.. इण गोलियाँ री न कोई ब्रांड न कंपोजीसन और न कांसेप्ट... बस लड़कियां निगल जावें.. यौवन री चढ़ती दहलीज़ पर बहकता कदम और टीवी सीरियल, फिल्मों री चकाचोंध पाश्चात्य संस्कृति री दौड़ में आजकल री लड़कियां अंधी हूँ री है

वाणे ध्यान नहीं कि इण फेक गोलियों में **अरसेनिक** भरयोडो हुवें है याँ गोलियां 72 घण्टे रे अन्दर सिर्फ़ बणन वाळा भ्रूण ने ही खत्म नहीं करें बल्कि पुरो रो पुरो **Fertility System ही** खत्म कर देवे

शुरू में तो गोलियाँ खाने आनन्द ले लेवे और घरवालों ने भी ध्यान भी नहीं पड़ें लेकिन शादी रे बाद पतो चाले की.. बेटी बाँझ है, अब माँ नहीं बन सके। जण सबने ध्यान पड़ जावें की बेटी रो भूतकाल केड़ो रियो पर कोई बोले नहीं। सच कहूं हुकम लड़कियां आपरी ज़िंदगी खुद अभिशाप बणा री है।

हुकम आ चीज़ समझनी पड़ी की प्रेग्नेंट नहीं हुवणों तो सेक्स क्यों.?

और सरकार हर साल मातृत्व सुरक्षा रे नाम पर करोड़ों रुपयों री गोलियां फूंक री है और ए लड़कियाँ खुद ही बिना डॉक्टर री सलाह उपयोग कर ने खुद रो विनाश कर री है।

हुकुम ताज़ा आंकड़ा रे अनुसार आज हालत या है 13-14 साल की बच्चियां बैग मे **I-Pill** लेने घूम री है आप ही बताओ ये मरेला नहीं तो कांई हुवेला.?

हुकुम अब सब माँ बाप ने बहुत सतर्क रेवण री जरूरत है कणेई समय निकाल ने अपणी बेटी या बहन रा बैग भी चेक कर लेवळो चईजे हर साल लाखो बच्चियां **बच्चेदानी रे कैंसर** सूं मर जावें विनों एक मात्र कारण माता-पिता और भाई री लापरवाही !

हुकुम अबार कुछ सालों सूं एक सर्वे में गर्भपात रो सबसूं ज्यादा आंकड़ों सामने आ रियो है तो वे नवरात्रि रे एक- दो महीने रे अंतराल में..

हुकुम हिन्दू संस्कृति रे भीतर नवरात्रि ने पवित्रता रो दर्जो दियों इन दिनों में नव देवियाँ धरती पर विचरण करें और भक्त देवी री उपासना साधना इष्ट री सिद्धियों ने हासिल करण वास्ते तप जप भक्ति नृत्य करने देवियों ने प्रसन्न करें वठे आजकल कई **संस्था,कपनियां** इने पैसों कमावण रो जरियों बणायों और साधना भक्ति **भोग-विलासिता** में बदलगी ।

अबे हर घर मे परिवार रा बड़ा ने बेटियो रा मोबाइल.. वे किणसूं दिन भर चेट करें? कांई वे मोबाइल लॉक राखे? कांई वे आजकल दिन भर मेकअप और अच्छा कपड़ा पहन ने बिना पूछे बाहर जावें? कांई वे फोन पर हां- हूँ में ही जवाब देवती रेहवें? किन्ही फोन आणे पर एकांत ढूंढे..?..

अगर घर मे आपाणी बच्ची री ये हरकता दिखे संभल जाओ की आपाणी बच्ची गलत राह माथे जा रही है.. और थोड़ो **अंकुश** थोड़ो प्रेम सूं समझाने विने बचालो... जो बच्ची नादानी में आने आपरो भविष्य खराब कर री है।..

हुक्म पछे पछतावण रे सिवा हाथ में कुछ नहीं रेवेला ।

हुकुम, बेटियों रे स्वास्थ्य और सुरक्षा रो ख्याल राखणो न केवल बेटी रे व्यक्तिगत विकास रे वास्ते जरूरी है, बल्कि समाज और राष्ट्र रे वास्ते भी जरूरी है। एक उच्च स्तरीय, स्वस्थ और शिक्षित बेटी समृद्धि रे लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सकें.. **वाणें सम्भालनों जरूरी हैं ।**

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- मुफ़लिसी के दौर ए तमन्ना का...!
  जिक्र ए जिंदगी बेताब न कर...!!
- आज जी ले ख़्वाहिशें अपनी...!
  हौंसले अपने बेज़ार न कर...!!
- कट रह है फांक फांक लम्हा...!
  कुछ देर खुशी को नाराज न कर...!!
- जो वक्त मिले सब के साथ रह...!
  अब तू रिश्तों का एतबार न कर...!!
- कर दो हज़ार टुकड़े फिर भी रहोगे सोना।
  अपने वजूद में तुम ऐसा निखार लाओ।।
- फूलों से अब महकते आँगन दिलों के होंगे।
  बातों से आये ख़ुशबू किरदार वो बनाओ।।
- बहुत सादगी थी मुझमें मेरे हमदम..!!
  तेरी नज़रें क्या पड़ीं मुझे संवरना आ गया....!!!!

कार्टून कौतुक

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

इस महीने में आपको कार्यक्षेत्र एवं स्वास्थ्य से संबंधित मिले-जुले असर प्राप्त होंगे। कार्य क्षेत्र में विशेष संतुष्टि अनुभव नहीं करेंगे। यद्यपि आप बहुत अच्छा करेंगे फिर भी आपकी उपलब्धियों को कम आंका जाएगा। लंबित योजना के अभी पूरी होने की संभावना कम है। अपने कार्य के प्रति लापरवाही का रवैया ना रखें। परिवार के ऊपर धन व्यय होगा। अनावश्यक खर्च भी होंगे। संबंधों के जगत में यह महीना सुखद रहेगा।

वृषभ

वृषभ राशि के जातकों के लिए यह महीना संबंधों की दृष्टि से उतार-चढ़ाव वाला रहेगा। विशेष कर बिजनेस पार्टनर से संबंध सजकता से डील करना है। आर्थिक मुद्दों पर कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इस महीने में आपको स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। छोटी-मोटी बीमारियां आपको परेशान करती रहेगी। दांपत्य जीवन में आप गलतफहमियों की वजह से विवाद खड़ा कर सकते हैं, इसके प्रति सजग रहें। पारिवारिक जीवन चुनौतीपूर्ण रहेगा।

मिथुन

मिथुन राशि के लिए यह महीना आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत लाभप्रद होने की संभावना रखता है। आपके लिए बेहतर होगा इस महीने आने वाले प्रपोज को सहानुभूति पूर्वक लेवें एवं सही निर्णय लेवें। आकस्मिक रूप से धन लाभ के योग भी बना रहे हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह महीना आपको ऊर्जावान एवं सक्रिय रखेगा। बिजनेस पार्टनर से संबंध अच्छे रहेंगे एवं भावनात्मक पार्टनर से भी संबंध मधुर रहेंगे। परिवार में लंबे समय से किसी सदस्य से चल रहे विवाद के हल होने की संभावना है।

कर्क

कर्क राशि के जातकों को कार्यक्षेत्र में बदलाव का सामना करना पड़ सकता है। सामान्य तौर पर आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूलता नहीं कहीं जा सकती है। नौकरी के क्षेत्र में दबाव झेलना पड़ सकता है। नौकरी बदलने के ख्याल बार-बार आवेंगे एवं व्यवसाय में कड़ी स्पर्धा देखने को मिल सकती है। यात्रा के दौरान धन हानि होने की संभावना है। पार्टनरशिप में व्यापार करते हैं, उन्हें पार्टनर के साथ कुछ परेशानियां आ सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से आपकी आंखें और आपके दांत विशेष देखभाल की मांग कर रहे हैं। प्रेम एवं वैवाहिक जीवन में संबंधों में ग्राफ ऊपर नीचे चलेगा।

सिंह

सिंह राशि के जातकों को इस महीने में पार्टनर से संबंधित समस्या, जीवनसाथी से संबंधी समस्या, भावनात्मक पार्टनर से संबंधी समस्या हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य से वाद-विवाद संभावित है। व्यापार में लाभ होगा उचित योजना बनाकर अगर आप कार्य करते हैं तो विशेष सफलता आपके लिए प्रतीक्षारत है। पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण रहेगा। धार्मिक यात्रा के योग की प्रबल संभावना रहेगी। शुभ मांगलिक कार्य होंगे।

कन्या

कन्या राशि के जातकों को इस महीने के दूसरे सप्ताह के बाद में कार्यक्षेत्र में अनुकूलता आवेगी। कार्य के प्रति समर्पण बढ़ेगा एवं कार्य क्षमता का विकास होगा। आपके द्वारा किए गए कार्य को प्रशंसा मिलेगी। स्वास्थ्य नरम गरम चलेगा। खर्च बड़ा हुआ रहेगा। परिजनों के साथ कुछ भ्रम की स्थिति बनेगी किंतु दांपत्य सुखद रहेगा। विवाह संबंध तय होने की योग प्रबल रहेंगे।

तुला

तुला राशि के लिए कार्य क्षेत्र की दृष्टि से देखा जाए तो यह महीना अच्छे परिणाम देने वाला साबित होगा। नौकरी के नए अवसर प्राप्त होंगे, कॅरियर में बेहतर परिणाम मिलने की संभावना है। आर्थिक लाभ होगा। लाभप्रद इन्वेस्टमेंट होगा। स्वास्थ्य कुछ नरम गरम हो सकता है। त्वचा संबंधी कोई समस्या हो सकती है। दांपत्य एवं पारिवारिक जीवन में उतार-चढ़ाव दोनों का सामना करना पड़ सकता है। विगत कुछ माह से चल रहा अज्ञात भय समाप्त होगा।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के लिए पारिवारिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो परिवार में जिम्मेदारी और चुनौतियां आवेगी। कार्यक्षेत्र में मुश्किल भरे टारगेट आ सकते हैं। प्रॉपर्टी खरीदने का विचार भी हो सकता है। आध्यात्मिक गतिविधियों की ओर रुझान बढ़ा हुआ रहेगा। कार्य क्षेत्र में एकाग्रता की कमी रहेगी। स्वभाव में कुछ चिंता बनी रहेगी। जल्दबाजी में निर्णय लेने की आदत फिर गलत साबित होगी।

धनु

यदि आप साझेदारी में कोई नया व्यवसाय शुरू करने जा रहे हो, तो एक बार फिर से पुनर्विचार कर लें यह काम इस महीने के लिए स्थगित कर दे। पैरों एवं जोड़ो में दर्द की शिकायत इस महीने में हो सकती है। दांपत्य जीवन में कुछ सुख की कमी रहेगी। परिवार में मनमुटाव संभावित है। विरोधी परास्त होंगे। चुनौती पूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। शुभ एवं मांगलिक कार्य में भाग लेंगे।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए नवंबर महीना मिश्रित फल लेकर आने वाला है। कॅरियर की दृष्टि से अच्छे रिजल्ट आने को है। जो जातक व्यापार कर रहे हैं विशेष कर एक्सपोर्ट इंपोर्ट का उन्हें लाभ होने की संभावना है। आर्थिक दृष्टि से यह महीना कुल मिलाकर अच्छा साबित होने वाला है। नवीन कार्य व्यवसाय में वृद्धि होकर नौकरी के योग प्रबल रहेंगे। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। स्थाई संपत्ति के योग प्रबल होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ उतार-चढ़ाव रहेगा। दांपत्य जीवन में वाद-विवाद संभावित है।

कुम्भ

कुंभ राशि के जातकों के लिए कार्य क्षेत्र की दृष्टि से यह महीना चुनौती पूर्ण रहने वाला है। लापरवाही एवं कार्य को पेंडिंग में डालने की आदत के प्रति सजग रहें। जो लोग निजी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, वह अपनी नौकरी बदलने का विचार इस महीने कर सकते हैं। आय एवं व्यय इस महीने सामान्य रहेंगे। इस कारण नो प्रॉफिट नो लॉस वाली स्थिति रहेगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से पीठ में दर्द एवं पाचन संस्थान से संबंधित समस्याएं हो सकती है। कुटुंबियों का विरोध झेलना पड़ सकता है। दांपत्य जीवन में तकरार संभावित है।

मीन

कार्य क्षेत्र की दृष्टि से मीन राशि की जातकों के लिए यह महीना कुछ परेशानियां लेकर आएगा। वरिष्ठ एवं कनिष्ठ दोनों से ही असंतोष की स्थिति बन सकती है। जो जातक अपना स्वतंत्र कार्य व्यवसाय कर रहे हैं या व्यापार कर रहे हैं, उन्हें प्रतिस्पर्धियों से कड़ी टक्कर मिलने की संभावना है। पारिवारिक एवं दांपत्य जीवन में सामंजस्य की कमी दिखेगी, जिन्हें आप अपनी सूझबूझ एवं सहनशीलता के बल पर नजरअंदाज कर सकते हैं। श्वास की दृष्टि से खांसी, पेट दर्द जैसी समस्याओं का सामना इस महीने कर सकते हैं। इसके प्रति सजग रहे।

|| जय श्री गणेश ||

With Best Compliments

Rahul Gandhi
Director

Ramesh Gandhi
Managing Director

Rohit Gandhi
Director

R.A. Kraft Paper Pvt. Ltd.

PAPER & BOARD INDENTER & IMPORTOR

The Global Leader of

- Kraft Paper
- Waste Paper
- Duplex Paper
- News Print
- Imported Waste Paper

R.S. Kraft Paper Ltd.

FIBRE IMPEX Pvt. Ltd.

HEAD OFFICE : 504, Suryakrian Complex, Opp. VNIT-1, Bajaj Nagar, Nagpur-10 (India)
Ph. : 0712-2220626, 2242412, 2249685, Fax : 0712-2243248 e-mail : info@rakraftpaper.com

MUMBAI : B-230, Sanjay Building No. 5B, Mittal Estate,
Andheri Kurla Road, Andheri (E) Mumbai-400059
Ph. : 022-42235000 Fax : 022-66915284
E-mail : mumbai@rakraftpaper.com
Website : rakraftpaper.com

BRANCHES : AURANGABAD, HYDERABAD, INDORE, KOLHAPUR, NASIK, PUNE, VAPI

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7,000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 22 Hospitals: 1 million patients treated

Over 75 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant.

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccine in Maharashtra. Over 4,000 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4,500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2023-2025
Despatch Date - 02 November, 2023

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com